CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

खोलऽतानीं

भोजपुरी के आंचलिक उपन्यास

आर० सी० निठुर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

124

श्री राजगुरु मठ, शिवाला घाट
वाराणसी खातिर

10/3/2016

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

खोलड़तानीं : भोजपुरी के आंचलिक उपन्यास

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

खोलऽतानीं : भोजपुरी के आंचलिक उपन्यास

आर० सी० निठुर

जानकी प्रकाशन
पटना नई दिल्ली

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ISBN : 978-93-81313-64-0

प्रथम संस्करण - 2014

© आर॰ सी॰ निठुर

प्रकाशक :–
नन्द किशोर सिंह
जानकी प्रकाशन,
अशोक राजपथ, चौहट्टा,
पटना - 800 004.

शाखा कार्यालय:-
1979, गंजमीरखान,
दरियागंज,
नई दिल्ली–110 002.

लेजर कम्पोज :– शिला ग्राफिक, कंकड़बाग, पटना–800 020.
मुद्रक :– एच॰ एस॰ ऑफसेट, दरियागंज, नई दिल्ली–110 002.

Kholatani : Bhojpuri Ke Anchalik Upanayas
By: R. C. Nithur

Rs. 400.00

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विषय-सूची

खण्ड – 1	1
खण्ड – 2	5
खण्ड – 3	8
खण्ड – 4	14
खण्ड – 5	21
खण्ड – 6	29
खण्ड – 7	42
खण्ड – 8	47
खण्ड – 9	58
खण्ड – 10	69
खण्ड – 11	77
खण्ड – 12	86
खण्ड – 13	91
खण्ड – 14	95
खण्ड – 15	99
खण्ड – 16	103
खण्ड – 17	107
खण्ड – 18	109
खण्ड – 19	115
खण्ड – 20	118

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

खण्ड – 21 125
खण्ड – 22 127
खण्ड – 23 132

***

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

खण्ड - 1

आठ-नौ बरस के बचकाना शरीर, सुडौल कंडा अस सब अंग, लचकदार डाँड़, केरा के गाभ अस दूनों जाँघ, पातर-पातर अंगुरी, कबूतरी गर्दन, हरिन अस लमहर आँख, सुगाठोरी नाक आ छोटका बेल अस उनकर छाती के उभार कवनों लइकन के जियरा में असालतन चुभ जाये खातिर कम ना रहे। हमरा ओर त तिरछा नजर से तकली त जइसे जहर पिआवल नोक वाला बाण करेजा में अइसन समा गईल कि कबहूँ दुखाइल बन्द होखे के नाम नइखे लेत। पाकल बलतोर घाव अस हर छन टीसत रहता। देखला बिना आँख झँवर जातरी सन। मन मसोसत रहीला! सोचिला कि कइसन साइत-संजोग में पहिल्लकी भेंट राधा से भइल रहे, किशुन सोचते रह जाले। डिहरा उनकर गाँव ह। ठहरे सोन नदी के कछारे बड़हन गाँव बा। ओहिजा हर तरह के लोग बा, नीमनो-जबूनो। शहरी विशाल घर भी बा आ गाँव के गरीब गुरबा के मड़ई-टाटी भी बड़ुए। हमरा तो मड़इए खूब नीक लागेला, काहे कि राधा के घर ओरच-ओरच के मड़इए के बगँला अस बनल बा। उनकर माई भिनसहरे झाड़ू लगा के बहार देली। खोजला प तनिको धूर ना मिली। मड़इए के बँगलादार-हवादार दालान देखते बनेला। पाँच-सात गो नीमन आदमी ओहिजा गप करत रहेलन। आ गप-गप ना सब राजनीतिए के बात। कभी कभार त हल्ला-गुल्ला, लतम-जुतम तक हो जाला। तबहूँ केहू हटे के नाम ना लेवे। राधा के पापा बड़ी नामी-गरामी आदमी हवन। उहे सटर-पटर करा देलन। सब लोग उनका के खूब मान ऽ ला आ आदर-इज्जत देला। ऊ बड़ी रईस हवन।

राधा चचेरा मामा के बसन्तपुर गाँव के कन्या स्कूल में शुरुए से पढ़त रही। उनका मामा घर से सीधी राह स्कूल तक बा। गाँव के मेहरारू सब भिनसहरे ओह सड़क के किनारे छिलबिल कर देली जा। ओह लोग के सब बाल-बच्चा लरिकाईं से ओह सड़क के किनारे हगे के हक समझला लोग। केहू कतनो समझाई, ऊ लोग एह बात में समझे खातिर तैयार नइखे। परतुक देला लोग कि बैसाडीह कुरमुरी, तिवारी डीह, तेलाढ़ आ पिअरों से आरा तक रोड के किनारे सब गाँव में हमनीएँ के हगीलाजा। जा ना समझा के सुधार करावऽ जा। नेता अइसहीं बनबऽ जा ? सुन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

के लोग के बकार बन हो जाला। कतिना मिटिंग भईल, कतिना समझावल गईल, बाकी सब गुड़ गोबर। केहू कान ना देलक। राधा नाँक फ्रांक से जाँत के स्कूल जात रही। स्कूल में पहुँच के, दम लेत रही। स्कूल में त लरिकन के रोज बहारे के डिवटी रहे, बाकिर सबेरहीं कुत्ता-कुत्ती के केहू रोक ना सकत रहे। ओहनी के फराकित होखे के उहे जगह रहे। जेकर कुत्ता रहे, क आदमी में एहु खातिर लाठी निकल गईल रहे। एह से नीमन लोग जीव-जाँत लेले रहे। के गुह के गोहार करो।

पाठशाला के जवना रूम में राधा बइठत रही, गाँव के सब लरिका लइकी ओहिजे बइठत रहे लोग। बहन जी हाजिरी लेवे आवस त सब लोगिन के कतार में बइठावस। बहिन जी घंटी बजते चल जास। त लरिकन के बहार हो जाय। फेर सब राधा के घेर के बईठ जास। राधा के ओठ लाल रहे। मीठ आवाज रहे। बोले के बेर बुझाय कि जइसे रस चूअता। सब लोग मुँहवे प ताकत रहस। राधा हमेशा कुछ-न-कुछ बात बनावत रही। उनकर मुँह शायदे बन होत होई। टिफिन हो जाय त राधा घरे ना जात रही। स्कूल में रह जास। गाँव के कुछ लरिका उनका के तंग कर ऽ स। कबहूँ जंगला प ऽ बइठस त ऽ ओहिजे सब पहुँच जा स। कतनो ऊ तंग कर ऽ स, ऊ तनिको खिसियात ना रही। मुस्करा के रहि जास। उनका ई सब नीमन लागत रहे।

एक दिन सिदास राधा के बाँह धर के ममोरे लागल। गते-गते बाँह ममोरत रहे तऽ उनका नीमन लागल, बाकी तनीं दहिना ओरि अइंठलक तऽ दुखाइल आ ऊ जोर से बाँह खींच ले ली। आँख लाल देख के सिदास डेरा गइल फेर ऊ मुस्करा देली। सब लोग हँस देलक। ई खिलकट रोजे होखे। पढ़े में केहू के मन ना लागत रहे।

चार बजे स्कूल में छुट्टी के घंटी बाजे तऽ हाहाकार कऽ के सब लरिकन किताब-सिलेट-वस्ता लेके दौड़ जास। बाकिर राधा धीरे से आपन बस्ता ले के बरमदा के जँगला पर रख देस। उनकर साथे खेले वाला लरिका लइकी आपन-आपन बस्ता बरामदा में रख के खेले में लाग जास। राधा से सभे पूछे-रधिया आज का होई ? राधा कहस कि चीका होई, अउर लरिका कहस कि कबड्डी होइ। राधा कहस कि तब हम जात बानीं। सब लरिका घेर लेस राधा के। ना ना, चीके होई।

बीकी कटे लागे। सभे इहे कहे कि हम राधा के गोईयाँ रहब। तय होखे कि राधा अपना में जेकरा के रखिहें ऊहे उनका दल में रही। एह तरी खेल शुरू होई। राधा के दल में जे सब लरिका-लइकि रहिहें, राधा के दल जीत जाई। रोज अइसहीं होखे, राधा के जीतला से सभे समझे कि हमहीं जितलीं। कहियो कबड्डी होखे त सभे राधे के घरे के चाहे, राधा धरा जास तऽ खूबे ताली बाजे। चीका में मीठ आवाज में जब राधा चिचियास कि बसइता के संघार, त सभे गदगद हो जाय। कबड्डी में राधा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जखनी रसदार सुर में जोर से चिचियास कि 'जय कन्हैयालाल की' तऽ सभ लोग खूब ताली बजावस आ कहस कि हमहीं कन्हैया हईं राधा के। राधा खिसिया के तुनक जास। कहस कि बजर परो रे, सब कन्हैया हवऽ स आ हम एगो राधा हईं। दउर के आपन बास्ता ले के घरे भाग जास। खेल खतम हो जाय।

एक दिन समीर, अनुज आ धनेसर राधा के बगइचा में लिया गइले स। जहाँ खूब घन बगइचा रहे, सभे बइठ गईल। बात होखे लागल तऽ समीर कहलन कि राधा हमरा जवरे चलिहन तऽ समीर कहलन कि राधा हमरा जवरे चलिहन तऽ हम अमरूद देब। धनेसर कहलन कि हम सिरफल तूर के देब। अनुज कहलन कि हम त काँटो गड़ी तबहूँ बइर तूरब आ देब। ओही घरी कन्हैया दउरत अइलन आ कहलन कि हम त अतिना टिकोढ़ा तूरले बानीं, आ बगली उठा के देखवलन, भुँजड़ी बनाइब आ राधा के खिआइब। उनके जवरे राधा चल देली आ खूब भुँजड़ी खाइल लोग। राधा मुट्ठी में भर के थोरे घरहूँ ले गइली। जाये लगली त कन्हैया बाँह ध के बइठा लेलन। दाव देख के राधा भाग चलली। कन्हैया खदेरलन बाकी राधा त फरार हो गइली।

दोसरा दिन सबेरे साते बजे राधा नदी किनारे बइठ गइलीं। ढेला आ गिट्टी पानी में जोर-जोर से फेंके लगली। अनुज, कन्हैइयों आ गइलन। उहो लोग ढेला फेंके लगलन। हारा-हँसी लाग गईल। राधा के ढेला दूर तक जात रहे। ऊ कहली कि जेकर ढेला सबसे दूर जाई ऊ सबके कान अइंठी। जेकर दू नम्बर पर रही ओकर दूनों कान अइंठाई। जेकर सबसे कम दूर जाई ओकरा तीन बेर सजा मिली। अबकी बेर पारा-पारी सभे फेंकी। राधा कहली कि हम अंत में फेंकब।

अनुज ढेला फेंकलन। छव-सात गज गईल। फेनु कन्हैया जोर लगा के फेंकलन। ढेला चौदह-पन्द्रह गज ले गईल। राधा एगो नन्हीं चूकी ढेली उठवली। कन्हैया उनकर हाथ ध लेलन, आ ढेला छिन के फेंक देलन। कहलन कि हमनी के बराबर ढेला फेक ऽ। राधा मान गइली। दोसर ढेला उठा के फेंकली बाकी आठे-नव गज गइल। कन्हैया कहलन कि हम कान अइंठब। तली दखिनवारी टोला के किशुन आ गइलन। ऊ पूछलन कि काहे झगड़ा कर ऽ तार ऽ जा ? कन्हैया सब बात साफ-साफ कह देलन। राधा कहली कि किशुनो ढेला फेकीहें। सभे राजी हो गईल। किशुन राधा ओर मुसुका के खूब जोर से ढेला फेंकलन। आ सबके से दूर उनकर ढेला गईल। राधा कहली कि सब के कान अइंठऽ।

किशुन अनुज के कान धइलन त ऊ कहलन कि पहिले राधा के कान अइंठऽ ना त भाग जाई। राधा कहली कि जइसे-जइसे ढेला फेकाइल बा ओइसहीं कान अइंठाई। तब अनुज तैयार हो गइलन। किशुन अनुज के कान हुमच के अइंठ देलन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कान लाल हो गईल। कन्हैया रो देलन। तब राधा के एगो कान दहिनवारा धीरे से किशुन धइलन। बाकिर ओतिने में राधा के कान आ मुँह लाल हो गईल। किशुन कान छोड़ देलन। राधा उनके पर टुकूर-टुकूर ताके लगली। किशुन मुस्का देलन। अपना बाँयाँ हाथ से दहिना हाथ के झटका दे के मरलन। बदमास कहीं के। राधा हँसे लगली। कन्हैया खिसिया के किशुन के बाँह ममोरे लगलन ? कहलन कि राधा के कान जोर से काहे ना अइंठलऽ? दूनों जना पटका-पटकी करे लगलन त राधा फुर से घरे भाग गइली।

* * *

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

खण्ड - 2

दोसरा दिन सुबहे किशुन बउली किनारे पहुँचलन त ऽ राधा ओनहीं आवत लउकली। किशुन मलार के राह धइलन आ डेगरगर बढ़े लगलन। चुंबक अस राधा खिंचाए लगली। तुरते पिछुआ लेली। भीरी जाके कहली कि एने कहाँ जइब ऽ? किशुन चिहा क़े कहलन कि तूँ कहाँ अइलू हा। ऊ कहली "हमहूँ चलब"। "कहँवा ?" "जहाँ तूँ जंइब ऽ।" किशुन उनका पर ताकते रह गइलन।

राधा मुस्करा देली। किशुन बाग-बाग हो गइलन। नदी के कछार पर एगो टीला रहे। बगल में दू गो आम के पेड़ रहन स। टीला प खूबे छाँह रहे आ कुछ ओट भी रहे। पशु गैबात बतिआवे खातिर बड़ी नीमन जगह रहे। स्कूल के लइकन के जब पढ़े में मन ना लगला त ऽ क ऽ गो ओहिजे गाहे बेगाहे बइठ के गप करे लन स।

किशुन ईशारा कइलन त राधा टीला के नीचे गइली बईठ। किशुन आपन बगऽ बगऽ उजर गमछा बिछा देलन , आ कहलन कि घुसुक के हे पऽ आ जा ना त तहार नाया सलवार लेट जाई, आ कतिना दिन से हमरा के सरापत रहबू। राधा हँसे लग ऽ ली। किशुन कहलन "काहे लजातारू" ? राधा घुसुक के गमछा पर किशुन के नियरे बइठ गइली।

राधा पूछली कि तूँ काल्ह पहिले पहिल लउकलऽ। एकरा पहिले हम ना देखले रहीं। किशुन कहलन, "काल्ह के पहिले हम रहले ना रहीं त तूँ कइसे देखतू ?"

"त तूँ काल्हुए जनमलऽ हऽ ?

किशुन ठठा के हँसलन। कहलन कि कुछ अइसने समझऽ। राधा पीछे मुँह क देली, "जा हम ना बोलब।" किशुन कहलन कि रूस गईलू ? राधा ना बोलली। किशुन उनकर बँवारा हाथ ध के अपना ओरे उनका के फेर लेलन। राधा के बँवारा हाथ के कलाई जहाँ किशुन धइले रहन ओहिजा झुरझुराए लागल। राधा दहिना हाथ से बँवारी कलाई के सुहरावे लगलीं। किशुन पूछलन कि का हो गईल ? ऊ कहली कि अतना दबा के खींचल ऽ ह कि दुखाए लागल। किशुन कहलन कि द हम दबा के ठीक कर देत बानीं। राधा फेन छूवहूँ ना देली। कहली "एक बे त देखिए ले लीं। अब ना।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

किशुन कहलन कि तूँ बात निकललू त सुनऽ। "दखिन भर एही गाँव में हमार घर बा, पाका के। शोभन सिंह के नाम सुनले बाड़ू ? उहे हमार बाबा हवन। राधा कहली, "बड़का घर के शोभन बाबा" ? किशुन कहलन "हँ उहे। हमरा बाबू जी के नाम बाबू बोलन सिंह ह। हमार बाबू जी जमींदार हवन। बहुत कम बोलले। व्यंग में लोग उनका बोलन सिंह कहेला। असल में उनकर नाम चौधरी बलभद्र प्रसाद सिंह ह। हमार बाबू जी केहू से पहिले ना बोलस। जब के हू कुछ पूछ ऽ ला तब बोलऽ ले। आ लोग उनकर उलटे नाम धइले बा।"

"हमार जनम भईल त दू बरिस के बाद हमरा जवरे हमरा माई के, बड़का मामा अपना गाँवे विदाई करा के लिया गइलन। बाबा हमार नाँव कृष्ण रखले रहन। बाकी लरिकाई से ही सभ लोग हमरा किशुन कहला। हमार जनम सनीचर के रात में अगहन के शिवरात के भइल रहे। साँवर हम बानीं त बहुत लोग हमरा के करिया कहेला। अब तहरा जवन नीमन लागी उहे कहिहऽ। कुछुओ कहबू, हम अनसाइब ना।"

"त ऽ हम ममहर चल गइलीं। ओहिजा एगो हमरा प से छोट हमार मामा रहन। दूनों आदिमी जवरे खेलब जा। धूर के घर खरिहान में आ पंतिआरी में रोजे बनावत रहीं जा। हम मेहनत क के बड़हन-बढ़ियाँ घर बनाईं। मामा के घर बढ़ियाँ ना बनावे आवत रहे। एह से रोज हमार घर मेटा देस। हम त चप्पत लगा दीं। ऊ हो हमरा के मारे खातिर ख़देरस। हम सरपट घरे भाग जाईं आ नानी के फांड़ा में जाके लुका जाईं। नानी कहस अपना बेटा से कि ना, ना हमार नाती के मत मारऽ । त ऊ रोवे लागस।"

"हमार गाँव बसन्तपुर ह। ममहर एही जा से सोझे दखिन तीन कोस बा ओहिजा सटले बाजार बा। बाजार के पीछे पोखरा पर मिडिल स्कूल बा। नौ बजे माई हमार दूनों मामा-भगिना के हाथ में सिलेट-पिनसिन धरा के बहरी संड़क रोजे धरा देत रही। दूनों अदिमी, जवरे जाइब जा। स्कूल नियराई त मामा खड़ा हो जइहें। हम कहब कि नियरा आ गइलीं जा, चलीं जा। ऊ टस-से-मस ना होइहें। हम बाँह धरब त ऊ हमरा थपड़ मार के आ गाँव ओर भाग चलिहें। हम खदेरब त ऊ सरपट हो जइहें। जाके खरिहानी में लुका जइहें। एह से ओहिजा पढ़ाई ना हो सकल।"

"हमरा ममहर जाये के पहिले ओहिजा परचार रहे मेहरारून में कि किशुन एकदम करिया बाड़न।

हमार माई के सखि-सलेहर जे आके हमरा के देखे त हमरा माई से अचरज से कहे लोग कि कवन छँटअवनी हाला कइले रहे तहरा एह लइकवा के करिआ बा। आरे ई त सिरीकिशुन भगवान अस सुन्दर लइका बा। कतिना सुन्दर गाल बा। गाल प दूनों ओरे भगवान फूल बना देले बाड़े। अइसने हमार लइका होइत त हम धन हो जइतीं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ओहिजे उनका दूर के हित के एगो फूफा लागत रहन ऊ सुन के कहलन कि तहरा अइसने दू गो जऊँआ लइका होई। ऊ हँसे लगली जा। ओह में एगो तनि छोट उमर के रहे। ऊ फूफा जी से बराबर मजाक करत रहे। कहलस कि सनकल का बानीं। फूफा जी खदेरलन आ ऊ भागल। फूफा जी सोलह-सतरह बरिस के रहन। खूब दौड़ा-दौड़ी भइल। आ ऊ लइकिया उनकर निहूर के गोड़ धर लेलक। पूरा देर तक खींचा-खींची होत रहल। लइकिया ओइसहीं गोड़ खींचत जोर-जोर से गीत गावे लागल,-

लईका कचनार है,

दिलदार है,

गुलजार है,

छिनार है।

त एगो गाँव के मास्टर आ गइलन। बेरोख होके डँटलन। तब लइकिया अपना घरे भागल। फूफा जी मास्टर साहेब के रोख देखि के बिहने अपना गाँवे के राह धइलन। मास्टर साहेब कहलन कि दामाद के इहे लुर ह?

ऊ लइकिया फूफा जी से पहिलहीं से लागल रहे। एक दिन छत प फूफा जी बइठल रहन। ऊ हो लइकिया कांटा लेके उनका भीरिए बइठ के सूटर बिनत रहे। फूफा जी के एगो साली ओहिजे बइठ के गप करत रही। फूफा जी के मन में कुछ बढ़ियाँ विचार आइल। फूफा जी साली से कहलन कि एगो काम कर। तनि हमार पैंट नीचे से ले आव, ऊ जाये लगली, सींढ़ी पर पूछली कि कुरतो ले आइब? ऊ कहलन कि हँ। साली चल गइली। नीचे घर के सिकरी खोल के अलमारी के ताला खोले के रहे। बहुत देर तक ऊ ना अइली। शायद ऊ सब समझ गईल रही। इहाँ देर तक फूफा जी के जवरे अकेले ऊ हे पहिलकी लइकी मालती रह गईली। दूनों जने के आँखिए से कुछ-कुछ होखे लागल।

***

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

खण्ड - 3

दोसरा दिन फेनु राधा-किशुन ओहिजा जुटल लोग। काल्हु के बाद अउली कथा किशुन शुरू कइलन। "राधा, सुनऽतारू?" "हँ जी सुनऽ तानीं। सब सुन के बड़ नीक लागता।"

त सुनऽ, "चार-पाँच महीना बीत चुकल। दशहरा आ गईल। ओह समय में आजु अस दशहरा गाँवें-गाँवें ना मनत रहे। हसनबाजार स्टेशन के स्टेशन मास्टर बंगाली दादा रहन। उहे हसनबाजार स्टेशन पर दूर्गा जी की मूर्त्ति हर साल रखत रहन। जेकरा देखे के सवख रहे, ऊ छोटी लाइन गाड़ी से दशमी के रात में मूर्त्ति जाके देखी। ओहिजा ड्रामा भी होत रहे। भीड़ जुटंत रहे। आरे स्टेशन पर हर साल दूर्गा जी रखात रही। आ हर साल चन्द्रगुप्त नाटक टी. टी., टी. सी. लोग बड़ी जम के करत रहे। बगसर स्टेशन पर एगो टी.सी. रहन। हर साल ओहिजा दुर्गापूजा आ ड्रामा होई। टी.सी. साहेब ओह में बड़ी जुटल रहत रहन। उनकर लरिका-लइकी भी ड्रामा में भाग लेत रही सन। एह काम में बगसर उनकर आजुओ ले लोग बड़ाई करेला।"

"हमनी कीहाँ अब गाँवे-गाँवे मूर्त्ति धरात बा, आ धूम-धाम से पूजा होत बा। तूहूँ त स्कूल पर ड्रामा देखे जइबे करलू?"

"दशहरा बीतते बाबा दिन धरवा देलन आ हमार माई ससुरा आ गईली। हम ममहरे रह गइलीं। गोधन के दिन नानी नइहर जाये लगली त हम आ मामा दूनों अदिमी उनुके जवरे ओहिजा गइलीं जा आ सुबहे से खेले में लाग गइलीं जा। एके अस रोज होखे। दूनों आदिमी कबड्डी खेलीं जा। हम बोलीं कि,

'चल कबड्डी आर लाल,
मर गइले मुखतार लाल,
मोरी मोंछी लाल-लाल।

आ जाकें मामा के छू दीहीं। ऊ कहस कि मरल नइखीं, फेनु खेले लागस। खीस में हम उनका लमकी नाक पर एक दिन मार देलीं। घाव लागल त रोवे लगलन आ मारे ख़ातिर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दउरलन। हम चिचिआते परा गइलीं। नानी के लुगा में लुका गइलीं। ऊ नानी के चारू ओर हमरा मारे खातिर रोवते धूमे लगले। नानी उनका के एकन्नी देली तब चुप भइलन।

नाना एक दिन ओहिजा पहुँचलन। हम दउर के गोड़ लगलीं। नाना बड़ी खुश भइलन। मामा उनका के गोड़ ना लगलन। उनका से आँख चुरा के होने बइठ गइलन। नाना कहलन, इहे लुर सीखत बाड़ऽ। साँझि के बबुआ के बजारे लिया जाइब, तोहरा के ना।

साँचो हमरा के बाजारे लिया गइलन। नाना तरकारी खरीदे में लगलन्ह। हम किताब के दुकान प बइठ के निहारे लगलीं। दुकानदार दोसरा के किताब देखावत रहन त हम गते एगो गाना के किताब चार आना के ले के राह धईलीं। नाना भीरी गइलीं त पूछे लगलन कि "केने देर कइलऽ ह बबुआ।" हम कहलीं नाना, किताब वाला के अुंगुरिया दे लीं हँ।

नाना चिहा के पूछलन "का कइलऽ हऽ?" हम जवाब देलीं, "एगो गाना के किताब ले के गते चल देलीं हँ।" नाना अइसन आँख तरेरलन कि हमरा रोआई छूट गईल। तली कितबिया वाला दउर के आ गईल। नाना के रोख देखि के कहलस कि देखीं कि हई लइकवा एगो गाना के किताब चोरा के भाग आइल ह।

"आरे एकर नाम कृष्ण ह। कृष्णे अस चोरी कइलक ह।"

हाथ पीछे कर के हम कितबिया लुकवले रहीं। नाना हमरा हाथ से ले के ओकरा दे देलन। ऊ हँसते चल गईल।

ई सुन के राधा खड़ा हो गइली आ जाये लगली। किशुन पूछलन कि "काहे जाये लगलू?" तूँ चोर हवऽ। चोर भीरी ना रहब। किशुन झट दे जाके बायाँ हाथ पकड़ ले लन। आँख देखा के पूछलन, – "तोहरा भीरी का बा जे हम चोरा लेब। नाक में, कान में, गरदन में कहीं त कुछ नइखे।"

राधा कहली, "तबे से हमरा अँखिया ओर आ मुँह ओरि ताकत रहऽ तारऽ। हमरा नइखे बुझात का?"

"बड़ी चलबिधर बुझा तारू। जाए के बा त जा। ऊ बाहँ छोड़ देलन। हमरा पऽ दाग मत लगाव।"

राधा चुपचाप खड़ा हो गइली, उनका बुझाइल कि अइसन ना बोले के चाहत रहे। इहे सोचत रही कि किशुन बाँह ध के फिर अपना गमछा पर बइठा देलन आ भीरीए अपनहूँ बइठ गइलन।

कहलन "सुनऽ राधा, हमरा बीकी में रहबू त हरदम जीतबू। हम कवनो जाना से हारीला ना। हमरा डरे कवनो लड़का- लड़की तहरा के आँख ना देखइहें।" राधा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कहली, "ई बतकही छोड़ऽ आ हउ कथवा ममहर के जवन कहत रहऽ, ऊ कहऽ।" किशुन कहलन सुनबू तब नूँ। हम तहरा से आपन सब बात कहब, बाकी धेयान से सुन लऽ। हम चोर-बादमाश आ लूचा लफंगा ना हईं। हम केहू से डरीला ना। जे बदमाश होला ऊ नू डरऽ ला। हमरा कवन डर बा, आरे जिला घर बा,।"

राधा गते उनकर दाहिना हाथ के तलहथी दबवली आ ममहर के आगे के बात कहे के कहली।

किशुन राधा ओरि ताक के कहे लगलन। "हम ढेर दिन ले मामा के ममहर रह गइलीं। मन लाग गईल। बहुत लइकी रहे लोग। जवरे सभे खेलत रहे। झगड़ा कहियो ना होत रहे। अतिने में मामा के बनिहार जोगी ओहिजा पहुँचलन। खइलन पिअलन त कहलन कि बबुआ के माई अपनाससुरा में रोज भिनसहरा बबुआ खातिर राग ध के रोवऽ तारी। इनकर बाबा आदिमी भेजले रहन। एह से हम एक घंटा आराम कर के आ बबुआ के गाँव पर लिया जाइब। आ काल्हु इनकरा के इनका गाँवें पहुँचा देब।"

"हम उनका जवरे शाम तक ममहर वापस आ गईलीं। मामी लोग खूब खुश -भईल। बड़की मामी कठउत में पानी ले आ के हमार दूनों गोड़ धोवली। मिजाज खुश हो गईल। मामी मिठाई खिला के पानी पिअवली।"

"दूसर दिन सबेरे जोगी साथे हम पैदल बीचे-बीचे अपना गाँवे चललीं। जोगी राह में क गो बात पूछत रहन। हम जतिना जानत रहीं सब जोगी बाबा से कहलीं। जोगी बाबा हमरा प बड़ी खुश रहन। दूनों आदिमी बतिआवत गाँव ओर बढ़त आवत रहीं जा त बीच राह में देखलीं जा कि एगो आदमी तेजी से घोड़ा दौड़ावत हमनी ओर आ रहल बा। नियरा अइला प चिन्हलीं। हमार बाबू जी रहन। हमरे के लिआवे जात रहन।" भेंट भइल त कहलन जोगी बाबा से कि इन्हकर माई रोज भिनसहरा इनका खातिर राग ध के रोवतारी। पनरह दिन ले हो गईल एही खातिर हम जात बानीं। सभ समाचार पूछ बता के बाबूजी कहलन "तोहनी लोग गाँवे जा, हम इनका ममहर से घूम के त आइब।"

हम अपना गाँवे आ गइलीं। अइलो एक महिना ले भईल होई। गाँवें पहुँचलीं त हमार माई खूब खुश भईल। माई रोज हमरा से बड़ी दुलार से अपना नइहर आ ममहर के समाचार पूछस। हम रोज एके बतिया कहीं, बताईं। छोटका मामा जवरे कइसे रोज हमरा तकरार होत रहे, हम डिटेल में कुल बतवलीं। माई कहली कि, "बबुआ अच्छा ना करत रहऽ। तोहार ऊ मामा हवन, तू उनकरा से झगडऽ लऽ? ई नीमन काम नइखे। बहुत समझवली कि नीमन काम लइका के करे के चाहीं जवना से सभे अनन्दित होखे आ परशंसा करे। नीमन अदिमी बने के चाहीं, खूब पढ़े के चाहीं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तोहार गाँव के मुखिया जी सभ लइकन के समझावले, "पढबऽ, लिखबऽ त बनबऽ नावाब, आ खेलबऽ कूदबऽ त होईबऽ खराब।"

हम माई से कहलीं, "माई, हमार स्कूल में कहाँ नाम लिखाइल वा कि हम पढ़ीं? सिलेटो किताब त नइखे। कइसे पढ़ीं। सिलेट किताब मिल जाई त हम गुरू जी से खूब पढ़ब। माई, हम मन लगा के पढ़ब त गुरू जी मरिहें नां नूँ? चाचा लोग बतिआवत रहन कि पूजन गुरू जी खूब मारले। बर के बरोह से लइकन के मारऽ लें।"

माई कहली, "बबुआ हमहूँ इ बात सुनले बानीं, बाकिर जवन लइका ना पढ़त होइहें, चाहे पाठ ना इयाद करत होइहें, उनका के नू गुरूजी मारत होइहें। तहरा एह प कुछओ सोचे के नइखे। तू खूबे मन लगा के पढ़िह आ इयाद करिहऽ। गुरू जी खूब पढ़ऽइहें आ खुश रहिहें। तोहार तारीफ करिहें।"

हम कहलीं, "माई हम पूजन गुरू जी के कलास में नाम ना लिखवाइब। माई कहली कि ठीक बा।"

दोसरा दिन जब बाबा आँगन में अइले कवनो काम से, त माई हमरा के सिखवली "बबुआ बाबा से कह कि बाबा, स्कूल में नाम ना लिखवइबऽ!"

हम बाबा से इहे कहलीं। बाबा कुछ ना बोललन। तुरते दुआर पर चल गइलन।

फिर अगिला दिन जब आँगन में अइलन त हम उहे बात पूछलीं।

एह तरह से क दिन हम बाबा से इहे कहीं, "बाबा, नामवाँ ना लिखवइबऽ?"

एक दिन बाबा खुश होके कहलन, "आज खा के चलिहऽ। नाम लिखवा देब।"

परिवार में तीन-चार गो लइका रहीं जा। सब आदमी जवरे खइलीं जा। कुर्त्ता-धोती पहिन के तैयार हो गइलीं जा। छोटी-छोटी हमनी के धोती रहे। ओह समय में अधिकांश लइका धोतिए पहिनत रहन।

बाबा के इन्तजार करत रहीं जा। सबके माई बढ़ियाँ कुर्त्ता अपना लइका के पहिना के, कपार प तेल लगा के कँकहीं से सँवार देले रही जा। आपुस में स्कूल के बात बतिआवत रहीं जा, बाबा नहा के, लोटा में पानी लेके खाये अइलन। रसोईघर में बाबा पीढ़ा प बइठ गइलन त माई ओट से हमरा के भोजन के थरिया हाथ में देली। दूनों हाथ में सरिया के थरिया पकड़ के हम बाबा के सामने देलीं। बाबा खाये लगलन आ हमनी के उनके थरियवा ओरि निहारत रहीं जा। उनका डरे बतियावल बन कदेले रहीं जा। बाबा खा के मुँह धो के सींक करे लगलन। सींक कइल हो गइल त लोटा ले के चहबचा भीरी नली प कूला कइलन आ लोटा रख देलन। कहलन, "चलऽ स।" दुआर प से छड़ी ले के, धोती आ बन वाला कुरता

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पहिरलहीं रहन, चल देलन। हमनियों के पीछे-पीछे चललीं जा। डरे बोलत ना रहीं जा बाकी आपुस में मुसुकुरात रहीं जा। बगइचा में गइलीं जा त हम बाबा से कहलीं,"बाबा, हमनी के नाम पूजन गुरूजी में मत लिखवइहऽ।"

पूछलन, "काहे?"

हम कहलीं, "बाबा ऊ गुरू जी बड़ी मारेलन। बर के बरोह राखेलन।"

बाबा पूछलन, "तूँ कइसे जानऽ तारऽ!"

हम कहलीं, "चाचा लोग रोज बतिआ वेलन, आज के, के पिटाइल हऽ?"

बाबा कुछ ना बोललन। स्कूल प पहुँच गइलीं जा। पूजन गुरू जी बाबा के कुर्सी पऽ बइठवलनऽ हमनी के खड़ा रहीं जा। बाबा गुरू जी से कहलन कि एहनी के नाम लिखावे के बा।

हेड गुरूजी बही अलमारी से निकलऽलन आ पारापारी सभ के नाम, बाप के नाम, जनम पूछ-पूछ के बाबा से, बही प लिखलन। फेर बाबा से दसखत करवलन। जब नाम लिखा गईल त बाबा पूजन गुरू जी से कहलन कि राह में ई सभ कहत रहन स, "बाबा, पूजन गुरू जी में हमनी के नाम मत लिखवइहऽ। काहे कि गाँव के पढ़निहार लोग कहला कि ऊ गुरूजी बर के बरोह से मारीला।"

गुरू जी धीमे से मुसकइलन। कुछ कहलन ना गुरूजी। नाम लिखा के बाबा जवरे घरे चल अइलीं जा। फेर रोजो पढ़े जाए लगलीं जा। हमनी के पँड़ित जी के कलास में पढ़त रहीं जा। हमरा प आ हमरा बड़ भाई प पँड़ित जी खूब खुश रहत रहीं। उहाँ, के जवन लिख देत रहीं तुरते हमनी के दूनों अदिमी लिख के इयाद क के उहाँ के जाके सुना देत रहीं जा। जाईं जा त उहाँ के पूछीं, "इयाद क लेलऽ जा?"

हमनी के कहीं जा, जी, इयाद क ले लीं जा।" उहाँ के कहीं, "पारा-पारी सुनावऽजा।"

हमनीं के सुना दिहीं जा। उहाँ के मेटा के, सिलेट प दोसर पहाड़ा लिखदेत रहीं। हमनी के फेर इयाद क के लिख के देखा देत रहीं जा। उहाँ के फेर दोसर पहाड़ा बदल दीं। एह तरह से कुछुए दिन में हमनीं के उहाँ के दोसरा कलास में नाम लिखवा देलीं। साले भर में हमनी के दूनों लइका गाँव के अवरू लइका लोग से आगे पढ़े लगलीं जा। हमनी से जादे उमर के आ चाचा-बाबा लागे वाला क जाना पढ़े में पीछे हो गइलन।

राधा पूछली, "मामा के ममहर से आवे के बेरी मामा का कहलन किशुन?"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हम कहलीं, ''ओहिजा से चले के भईल त मामा हमरा जवरे आवे खातिर कुर्त्ता-धोती पहिरे लगलन। नानी कहली कि तोहरा नइखे जाये के। ओही घरी मुन्नी आ गइली। मुन्नी हमनीं साथे दिन भर खेलत रही। हम आ मुन्नी दूनों अदिमी एके में रोज रहत खेलत रहीं जा। मुन्नी हमरा के कहली कि मत जा। हम कहलीं कि ई कइसे होई जोगी बाबा आइल बाड़े हमरा जाहीं के परी। तली जोगी बाबा हमरा भीरी आ के कहलन, ''बबुआ अब चलऽ नातऽ लेट होई। हम जइसहीं चले के कइलीं कि छोटका मामा बाँह ध के रोवे लगलन। अतने में मुनियों हमरा के ध के देही में लिपट गइलीं आ सट के रोवे लगली। हमहूँ खूब रोवे लगलीं। ना मुन्नी रोवल बन करस आ ना मामा चुप होखस। हमरो रोवाई बन ना होत रहे। नानी आके हमरा के छोड़वली।

जोगी बाबा हमरा के लिया के चललन त हम रोवते चल देलीं। मामा आ मुन्नी रोवते छटपटाये लागल लोग। नानी ओह लोगन के खींच के घरे ले गइली।

हम अतिना कह के राधा ओरे तकलीं त राधा के आँखीं में से लोर चूअत रहे। राधा ओढ़नी के कोना से लोर पोंछ के कहली कि हमरों रोवाई आ गइल हऽ राधा खड़ा हो गइली आ कहली कि चलऽ बड़ी देर हो गईल।

हम कहलीं कि बड़ी देर भई नन्द लाला, तेरी राह तके। डेगर गर दूनों आदिमी अपना घरे भगलीं जा।

***

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

खण्ड - 4

बसन्तपुर ढेर छोटहन गाँव ना ह। एहू गाँव में क गो टोला बा। पूरूब में बाभन टोली बा आ दखिन कुछ बाभन टोली आ डोम टोली बा। ओनहीं मुसहर टोलियो बा। ओनिएँ के बाबू वृन्दावन चौधरी हवन जेकर जवान बेटा फाँसी लगा के मर गइल रहे। गाँव में ओह घरी अजबे हालत हो गइल रहे। सभे बेचैन रहे। उनकर बेटा मरल रहे आ गोतिया लोग में झगड़ा हो गइल रहे। अजबे-अजबे बात चलत रहे। आपुस में बड़ी मनमुटाव हो गइल रहे। केहू कुछ कहेपऽ तइयार ना रहे। बाद में मामला सटर-पटर भईल। केस जल्दी ठंढाते ना रहे।

पछिम में दुसटोली आ अहीर टोली बा। ओनहीं ब्राभन लोग के हिस्सा-पटी के मुताबिक सभ के बगइचा बा।

गाँव मलार नदी के कछार प बसल बा। एह से दखिन से उतर लमडोरी बा। गाँव में उतर में चमरटोली आ धोबटोली बा। ओनहीं मियाँ टोलियो, बनियाटोलियो बा।

मलार के टीला भीरी फेंड़ तर राधा बइठल रही। तनी देर से हमहूँ गइलीं। दूरे रहीं त राधा गावे लगली गते-गते "बड़ी देर भई नन्दनाला, तेरी राह।" किशुन राधा के हाथ ध के हँसे लगलन। राधा हाथ छोड़ा ले ली आ कहली कि हटऽ। कहाँ रहऽ अतिना देर। ताकत-ताकत आँख झँवा गइल।

किशुन दोसरा में हें मुँह क के बइठ गइलन। राधा ओने तकली त किशुन दोसरा तरफ देखत रहन। राधा आँख खोलली त किशुन आँख मूँदले रहन। किशुन आँख खोललन त राधा आँख मूँदले रही। दूनों ओर आँख मुँदौवल ढेर देर चलऽ लल। किशुन से ना ठटाइल। राधा के खूब जोर लगाा के अँकवारी में दबवलन। तबहूँ राधा आँख मूँदइलहीं रही। किशुन अउर जोर से दबवलन त राधा कहली, "छोड़ब कि ना, केहू देखी त का कही?"

किशुन जवाब देलन, "मरदा मउगी राजी, त का करिहें गाँव के काजी।"

राधा कहली खिसिया के, "हम तहार मउगी हईं!"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

किशुन कहलन, "ना रे, ई त कहाउत कहलीं हँ काहे खिसिया गइलू?"

"तहरा चाल प।"

"हमार चाल बिगड़ल बा, त ई बतावऽ कि रहीम के का कहबू?"

"कवन रहीम?" किशुन कहलन, "आरे उहे पछिमारा रहीम?"

राधा पूछली, "उनका के हम का कहब?"

किशुन कहलन, "उनकर खिस्सा कहीं?"

राधा कहली, "कहऽ।"

किशुन कहे लगलन, "मलिकार के बगइचा में आम खूब फरल बा एह साल। हर साल रघुबर उनकर बगइचा के रखवाली करेलन। एहू साल उहे रखवाली करऽ तारन। परसों रात में ऊ रखवाली करत रहन। उनके जवरे उनकर साथी रहीम भी सूतल रहन। रघुबर के नीन्द टूटल त कहलन कि आरे उठऽ हो, देर हो गईल। सब लोग पहरा देवे सड़क तक पहुँचल होई। चलऽ चलीं जा। दूनों आदिमी डांटा ले के चल देलन। रहीम कहलन कि हमरा नीन लागऽता। हम घरे सूते जातानीं, एकरा बाद रघुबर सड़क ओर चल गइलन पहरा देवे।

रहीम आपन राह ध के सीधे रघुबर के घरे जाके धीरे से टाटी खोललन्ह आ भीतर घुस के टाटी बन क देलन। फिर खटिया प जाके सूत गइलन। रघुबर ब जनली कि रघुबरे हवन। रहीम रघुबर ब के धीरे से अपना ओर हाथ से खींच के अपना देह में सटा लेलन....।

ओह समय में गाँव में अन्हरिया में रोज पहरा परत रहे। दरोगा जी रघुबर के एगो चोर बती तीन सेली देले रहन। पहरा के नवजवानन के एगो टीम बनल रहे। टीम के दलनायक उहे रघुबर रहन। ढेर दिन के बाद दलनायक के नोकरी हो जात रहे। सरकार से महीना मिले लागत रहे। एह से खूब मन लगा के लोग पहरा देत रहन। एगो दलनायक जब सरकारी सिपाही हो जात रहन त फिर दोसर अदिमी के ओही दल में से दलनायक बना दिआत रहे। पहिलका दलनायक जेकर नाम बतावत रहन उहे उनकर बाद दलनायक होत रहे।

भिनसार अस होखे लागल। रघुबर सब पहरदार लोग से कहलन, "खइनी बनावऽजा। पूरूब साफ लागे लागल। भिनुसार हो गइल, चलीं जा।" खइनी बनल आ सब लोग ओठ में जाँतल। फिर अपना घरे डंटा उठा के लोग चल देलन।

रघुबर अपना घरे पहुँचलन त दुआरी से फरके पेशाब कइलन खड़े-खड़े। आ टाटी खोललन। खड़ दे आवाज भइल त रहीम खटिया प से कूदलन। रघुबर हाथ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बढ़वलन त रहीम के हाथ धराइल बाकी ऊ छोड़ा लेलन आ फाटक खोल के भाग चललन। रहीम टोवत-टोवत आपन मेहरारू के देह ध के अन्हारा में पूछलन कि रहीमवा रहे? परबतिया कहलक कि हम सूतल रहीं, हम का जानीं। तूँ बत्ती लेले बाड़ऽ आ हमरा से पूछत बाड़ऽ।

रघुबर कहलन कि उहे रहीमवा बुफाइल ह। बती बारे के टाइम कहाँ मिलल ह। का कइलक ह?

परबतिया सूतले-सूतले जवाब देलक, "हम का जानीं, हम त नीन में रहीं।"

रघुबर कहलन, "कब आइल ह साला।"

परबतिया जवाब देलक, "कहत नइखीं कि हम का जानीं, हम त नीन में रहीं।"

रघुबर बोललन, "अच्छा, तें नीन में रहीस त काल्ह तोरो के बता देब आ ओकरो के।"

इहे कह के रघुबर खटिया प सिरहाना बइठ गइलन आ चुपचाप बइठले बिहान क देलन।

अतिना कहलीं त राधा सुन के जम्हाई लेते खड़ा हो गइली आ कहली कि देर हो गइल हम घरे जात बानीं, काहे कि हमरा आज कपड़ा फींचे के बा। हमहूँ कुछ कहितीं तली ऊ चल दिहली।

देखलीं कि रघुवंश जल्दी-जल्दी एनहीं आवतारन। तनिक देर में उ आ गइलन आ पूछलन कि किशुन, "रघुबरवा के का बात ह हो? साँझ से गाँव में कानाफूसी चल रहल बा।"

"हँ काका, रउरा सुनलीं हँ तवन साँचे बात ह" हम कहलीं।

ऊ कहलन कि कइसे-कइसे पंचायती भइल ह? हम बतवलीं कि पूरा विवरण कहऽ तानीं, सुनीं। "रहीम का कइलन, रउरा जानिए गइल बानीं। पंचायती के बात सुनीं। साँझ के रघुबर मलिकार से जाके कुल्ही बात कहलन। मलिकार बड़ा दुखी भइलन आ कुछ देर ले कुछुओ ना बोललन। रघुबरो चुपे रहन आ मलिकार के आँख ओर ताकत रहन।"

मलिकार के आँख लाल हो गइल। चेहरा तमतमा गइल आ गरम हो गइलन। कहलन, "रघुवर ते गांव के लोग के बुलाव आ गोंड़ाइत से कह कि सब के के खबर करो, आज अबहीं मिटिंग होई आ एकर फयसला होई। गांव के लोग कइसे रही? जब रहने-चाल ना रही त कुल काम गड़बड़ा जाई। अइसहीं तबकी बार मुनवाँ आ सुकना एक-दोसरा पर लँगटे सूतल रहन स आ सुकना के मउगी जा के मड़ई

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

में झँकलक त सब तमाशा देखि लेलस। राति खा सुकना आपन मउगी भीरी सूते गइल त उ दूर-दूरावे लागल। कहलसि तहरा तनिको लाज-शरम नइखे। अब हमरा भीरी का आवतारऽ जब मुनवाँ जवरे तहार काम हो जाता। ना भगबऽ हमरा भीरी से चलऽ दूर होखऽ, हमरा आँख के सामने मत रहऽ? हमहूँ कवनो मरद खोजिलेब। हमरो मरद खोजे में देरी ना लागी। सुकना हाथ जोड़ के ओकर गोड़ धरे लागल। ऊ अइसन गदहा अस दुलती चलवलस नू कि सूकन फेंका गइले। घाव त अवाँढ़ में बेजोड़ लागल, आ ऊँह कइके रहि गइले।

फेर सूकना घन्टन गोड़ परिया कइलस तब जाके खटिया प गइल। ओह राति ओकर मउगी देही में ना सटे देलक।

''ई मामला हमरा सूने में आइल रहे बाकिर गोतिए के बात रहे, एही से महटिया गइलीं। पंचायती ना बोलवलीं।

''तोहार ई घटना महटियावे वाली नइखे। गाँव जवार जान जाई। आदिमी राह चले लायक ना रही।

साँझ खा मलिकार के दरवाजा प सभे जुटे लागल। कई गो चउकी धइल रही स। दलान से बाहरो दू गो चउकी रही स। मल्लिकार, भीतर एगो बड़की चौकी रहे, ओही प ओठंग के देवाल के सहारे बइठल रहन। जे आवे ऊ मल्लिकार के गोड़ लागे, केहूँ पाँव लागे। एकाध जन सलामो कइलन। मलिकार गंभीर रहत रहन। कम बोलत रहन। गाँव जवार के लोग मलिकार के बड़ी लिहाज मानत रहे।''

दुसधटोली के सुभाव, मुसहर टोली के भोला, अहीर टोली के बसावन अहीर आ मानक अहीर, मियाँ टोली के सुभान मियाँ, कुरबान आ रहीम मियाँ, पास टोली के जगन पासी, डोम टोली के सोना डोम, चमरटोली के झमन चमार आ कुन्दन मुखिया जी, दखिन भर के खेलावन सिंह, जोधन पाँडे, सुबोध पाँड़े, उतरवारीं टोला के राजकुमार चौधरी, संपाती सिंह आ छोटका टोला के हनुमान चौधरी आ के बइठलन। ढेर लोग बहरी नीचे घाँस प बइठल। बाबू लोग आ यादव लोग चउकी प बइठल। केहू से केहू बोलत ना रहे। सभे चुपचाप रहे। गाँव के लइका-सेयान ढेर लोग देवाल में सट के आ दलान के पाया में ओठंग के खड़ा रहे लोग। रघुबर भी आके बहरी घास प बइठ गइल रहन।

मलिकार बोललन, ''एहिजा पंचायती में छोट-बढ़ सभे आ गइल बा। एकाध आदमी नइखन लउकत। का हो गोंड़ाइत?''

गोंड़ाइत कहलन, ''मलिकार हम सभ के से कहि देले बानीं। एक-दू आदमी के तबीयत ठीक नइखे, एही से उहाँ सभे नइखीं आइल।''

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चौधरी लोग, बाबू लोग आ पाँडे लोग आ यादव लोग साफ – सूथरा कपड़ा में आइल रहे लोग। लँगड़ू मुसहर फाटल बेबाँह के कुरता पहिरले झगरू डोम त खाली धोतिए ठेहुना तक पहिरले रहन, देह उघारे रहे। मलिकार कहलन खँखार के, "मुखिया, सभे आ गइल नूँ ?"

"हँ मलिकार, बात बढ़ावल जाय, काहे के बोलाहट भइल ह ?"

मलिकार रघुबर ओर ताक के कहलन, "रघुबर, सब बात कह ऽ।"

रघुबर आम के रखवारी से पहरदारी तक कुल्ह बात खोल के कहलन। उनका मेहरारू जवरे रहीम सूतल रहन आ पहरा देके जब भिनसहरा ऊ घरे अइलन त रहीम कइसे उठ के भगलन। हर बात बेबाक बोल ऽ लन। इहो कहलन कि लरिकाईं से ई हमार दोस्त हवन आ दोस्त होके हमरा इज्जत पर लात मरलन। एकर पंचायती होखे के चाहीं, गाँवों के इज्जत के सवाल बा। गाँव कइसे चली ? न्याय होखे के चाहीं।"

करीमन पूछलन, "मलिकार हम कुछ कहल चाहऽ तानीं।"

"कह ऽ।" मलिकार कहलन।

ऊ कहलन कि रघुबर के मेहरारूवो के एहीजा बोलावे के चाहीं, काहे कि उहो पाटी बाड़ी। उनुको से पुछाए के चाहीं।

मलिकार खिसिया के कहलन, "करीम तहार माथा भ्रस्ट हो गईल बा। ई अदालत ना ह ऽ कि लिखा – पढ़ी आ ईझार होई। ई पंचाइत ह ऽ। सब के इज्जत आवरू बा। केहू कवनो जात के होखे।"

एके बे ढेर लोग बोले लगलन, "मलिकार एकदम वाजिब कहतानीं।, करीम सनकी अस बतिआवत बाड़न।"

मलिकार रहीम से कड़क के कहलन, "रहीमवाँ ?" रहीम बहरी घास प बइठल रहन, हाथ जोर के खड़ा हो गइलन।

रहीम खड़े-खड़े काँपे लगलन। कुछुओ बोललन ना। मलिकार फेर ओइसहीं खिसिया के पूछलन, "कुछ कहत काहे नइखस ? सुना ता नूँ ?"

तबो रहीम कुछ ना बोललन। चुपचाप काँपते खड़ा रहन।

मुखिया चमटोली के खड़ा हो के कहलन, "मलिकार रहीम कुछ नइखन बोलत, एकर मतलब भईल कि मौनं स्वीकार लक्षणम् मान के इनका के दंड देवे के सोचल जाय। बिना डाँड़ लगवले इनकरा के काँपत देख के दया कइला प गाँव के रासता एकदम बिगड़ जाई। बेटी-बहिन के राह चलल अब मुश्किल हो जाई। इहे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गाँव बसन्तपुर ह जेकर नाँव जिला जवार में रहल हा। जवार में मलिकार हमनी के मुँह देखावे लायक ना रहब जा।''

चारों ओर से एके बे आवाज आइल। ''मुखिया ठीक कह ऽ तारे। कड़ा सजाय देवे के चाहीं।''

सब लोग आपस में बतिआवे लगले। केहू कहे कि रहीम गाँव छोड़ के भाग जास। कुछ आदमी कहले कि एकरा के सभे पाँच – पाँच थप्पर मारी। खेलावन सिंह आ जोधन पाँडे खड़ा होके कहलन कि एकरा के पाँच – पाँच जूता मारल जाय। जोधन पाँडे के रहीम कवनो साल बिया ना कबरले रहन। सुभान मियाँ ओकरा से गाय के दूध मँगले रहन त ना देले रहे। एह से सुभान मियाँ खड़ा होके कहलन कि एकराके गाँव से हमेशा खातिर निकाल देवे के चाहीं। ओकर मेहरारू बसावन अहीर के रोपनी ना कइले रहे। ऊ कहलन कि सभे दू – दू लाठी मारे । एही तरह के बतकही होत रहे। केहू माफ करे के ना कहल।

मलिकार खड़ा भइलन, सभे चुप हो गईल। एकदम शान्ति हो गईल। पिन ड्राप वाली शान्ति।

मलिकार खँखार के बोललन, ''रघुबर, तूँ का चाह ऽ तार ऽ। साफ – साफ बोल ऽ ?''

रघुबर खड़ा हो गईलन। उनका रहीमवाँ के मदद इयाद परे लागल, रात – रात भर बगइचा में रखवारी में उनका जवरे रह ऽ ला। बाजार, मेला जहाँ कहले ऊ साथे जाला। उनका मन में दया आवे लागल। सभे रघुवर के मुँह झाँकत रहे।

रघुबर हाथ जोड़ के कहलन, ''रहीम एक सै एकावन रूपया हमरा के डाँड़ देस।''

मलिकार कहलन कि तहरा संघतिया पऽ दया आ गईल, कड़ा डाँड़ ना लगवलऽ। ठीक बा इहे डाँड़ रही। रहीम तूँ तीन दिन में हमरा भीरी एक सौ एकावन रूपया जमा कर दीहऽ आ ओह दिन से तीन महीना खातिर गाँव छोड़ दीहऽ। बोलऽ कबूल बा नूँ?

रहीम खड़ा हो के हाथ जोड़ के कहलन, ''कबूल बा बाकि एगो गुजारिश बा मलिकार, दोहाई। रूपेयवा देवे के समय कुछ अउर बढ़ा दिहल जाय मलिकार, हमरा पासे रोपेया नइखे। जोगाड़ क के देवे के बा।''

मलिकार डाँट के कहलन, ''तहरा तीने दिन में रोपेया जमा करे के बा। जइसे जोगाड़ करऽ तूँ जानऽ।''

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एकरा बाद मलिकार कहलन, "अब-जाईं सभनी।"

रात हो गईल रहे। सभे उठ के जाये लागल आ काना-फूसी करे लागल। अउरी कड़ा सजाय एकरा मिले के चाहत रहे। सुभाव आ भोला मुसहर बतिआवत रहन कि दूनो एक गुभड़ी में मूतऽ लन स। फेन एके हो जइहें स। ओकरा मेहरारू प चढ़ल। आ कहता कि डेढ़ सै रोपेया देस। इहे एह गलती के डाँड हऽ? बतावऽ, इहे करे के रहे त लोग के काहे के जुटवले रहस। आरे रहीमवा के बड़ी मार मारे के चाहत रहे। जगनपासी जवन क बे घरपइसी में धराइल रहन, सोना डोम से बतिआवते जात रहन कि एकर गाँव छोड़ा देवे के चाहत रहे तबे सुधार होइत। कुन्दन मुखिया हनुमान चौधरी से बतिआवत रहन कि रहीमना के अंग-भंग करे के चाहत रहे जे एकरा जिनिगी भर इयाद रहीत। हनुमान चौधरी कहलन, तोहार बेटा झमन के बेटा जवरे कुकर्म कइले रहे पिछला महीना में, अतना हल्ला भईल, लाठी-डाँटा निकलल त तूँ मुखिया होके का कइले रहऽ? दोसरे के खाली नेयाय करब?" मुखिया कहलन तूँ अदिमी हवऽ कि सनकी - बउराह हवऽ। आरे ऊ त लइकन के बात रहे।"

चौधरी कहलन, "तोहार बेटा कवलेज में पढ़ता आ लइकन के बात रहे। ऊ लइका बा?"

मुखिया कहलन, "आरे ओकर अभी बियाह भईल बा हो? तूँ जानत नईख?"

हनुमान चुप हो गइलन आ अपना घर ओरे चल गइलन।

हम रघुबंश काका से कहलीं कि इहे सब बात त ह काका।

काका कहलन कि ठीक कहऽ तारऽ। हमहूँ इहे सब सुनले रली हाँ।

दूनों जाना इहे बतिआवत गाँव ओर चल दिहलन।

***

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

खण्ड - 5

हमनी के अपना हाई स्कूल में मैटिक के एगारहवाँ क्लास में चौंतीस गो लइका पढ़त रहीं जा। टिफिन में घन्टी बाजे त क्लास के लइका लोग बहरी चल जास आ खाये-पीये नास्ता आ खेले-कूदे में लग जास। हमनी के चार-पाँच गो साथी अपना क्लासे में रह जाईं जा। मास्टर साहेब के बोड प के लिखल डस्टर से मिटाईं जा आ हिन्दी के वाक्य एक आदमी लिख देवे। सब आदमी परापारी अंगरेजी में अनुवाद बनाईं जा। रोज टिफिन में हमनी चारों पाँचों साथी के इहे काम रहे। कहियो हिसाब बनाईं जा। मेकैनिक्स के सवाल, गणित के सवाल आ मेन्सुरेशन, ज्यामिति के सवाल बोड प लिख के बनाईं जा। फिर छठवीं घन्टी बाजे त हमनी के ओही क्लास में बइठ के पढ़े लागीं जा?

एक दिन हैजिन के क्लास में खान साहेब मास्टर आ गइलन। हैजिन के मास्टर साहेब ओह दिन छुट्टी में रहन। खान साहेब हमरा से कहलन, "खड़ा हो।"

हम पहिलका बेंच प बइठल रहीं। मास्टर लोग पहिलके बेंच के लइकन से जादे सवाल पूछत रहन।

हम खड़ा हो गइलीं। मास्टर साहेब तेज आवाज में सवाल कइलन, "बताओ तो कालरा कैसे होता है?"

हम कहे लगलीं, "दोसरा केहू के कालरा भईल रहला, ओकरा पाखाना में कीटाणु रहेलन स ढेर सा। उहे पानी में, दूध में, भोजन में मिल के अउर अदिमी के मुँह में, पेट में हेल जाले स, आ ओकरो कालरा हो जाला, एह तरह से पूरे टोला में, गाँव में रोग जल्दीए फैल जाला।" खान साहेब डँटलन, "हेल क्या कहता है रे?"

अब हमरा बुझाइबे ना करे कि का कहीं। खान साहेब फेर कहलन, "हेल क्या कहता है?" हम त लजा गइलीं आ सब लइका हँसे लगलन। फेर खान साहेब अपने बतवलन "प्रवेश कहो, हेल क्या चीज है, बदमाश कहीं का।"

हम लजा के सकपका गइलीं। आ ओही दिन सोंच लिहलीं कि हिन्दी संस्कृत भाषा हम खूब पढ़ब आ सीखब।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्कूल के होस्टल में रहत रहीं जा एगो सिधनाथ सिंह राजपूत रहन। बगल के गाँव के रहन। आलू के चोखा हरिअर पियाज से भूँज के बने। हमनी से दोबरी सिघनाथ सिंह चोखा जवरे भात खा जास। फेन चोखा माँगस त भोजन बनावे वाला कमेसर कहे कि भात कहीं त देब, बाकीं चोखा ना देब। अबहीं हम आ रासधारी मास्टर साहेब खाये के बानीं जा। कुल चोखा ओरवा दीं त हमनी के कइसे खाईब जा।

सिधनाथ अतिना भात खालेस कि उन कर पेट उठ जाय, पेट देख के सबके बुझाय नूँ कि पेट से बाड़न। हमनी के खूब हँसी जा जब चरचा खाये के चले।

रात में नौ बजे तक ललटेन जला के हमनी के होस्टल में पढ़ींजा। एक दिन नौ बजल त सुपरिन्टेन्डेंट नरेंश बाबू के आदेश के अनुसार सभे ललटेन बोता के सूते लागल। बाकी सुखराम ललटेन ना बोतलवलन। पढ़ते रहलन। हमनी के कहलीं जा कि बोता के तूहूँ सूतऽ। ऊ ना बोतवलन। हमरो नीन्द ना लागल। थोरे देर के बाद देखलीं कि कागज, कलम निकाल के लिखे लगलन। पूरा देर से लिखलन आ लिखला के बाद में पढ़लन। फेन उहो सूत गइलन। हमरो नीन आ गईल। सबेरे जगलीं जा त सब लोग लोटा लेके फराकित होखे चल गइलन बाकि हम ना गइलीं। सब लोग चल गईल त हम सुखराम के तकिया हटा के ऊ चिठी निकललीं आ जल्दी में गलतियों लिखा जात रहे, डर लागत रहे कि ऊ आ मत जास। उनका से हमरा कबहुँ झगरा ना भईल रहे, बाकी डेरात रहीं। ऊ देर से अइलन, उनका कवनो शक ना रहे जइसे कवनो मेहरारू अपना मरद भीरी चिट्ठी लिखे, ओइसहीं ऊ विद्यापति के नाम से चिट्ठी लिखले रहन। बड़ी सुंदर रहन, गोर, पातर देह आ नाक – नक्सा नीमन। देखे में जतिना नीमन रहन ओतिने बढ़िया से बोलतो रहन।

सउँसे चिठी उतार के उनकर चिठी पहिलहीं लेखा उनका तकिया तरे धर दिहलीं। ओह दिन अउरी केहू ना जानल, बाकी बाद में सभे हँसे बाकी कहे ना काहे कि हम किरिया धरा देले रहीं। एह से केहू खोल के उनका ई बात ना कहल। ऊ कुछ जनलन ना। ईहो केहू ना जानल कि विद्यापति के सुखराम ऊ चिठी कहिया देलन।

एकरा बाद एगो बात भईल, आ दूनों जना में बड़ी राय रहे लागल। आरे इन्टर में जब दूनों जाना पढ़े गइलन त एके डेरा में रहे लगलन। दूनों जांना खूब संघतिया हो गइलन। सुखराम नीचे के रूम में रहन आ ओकरा ऊपर के रूम में विद्यापति रहत रहन। बाकी दूनों जना जवरे सूतस। विद्यापति कुछ कहत त ना रहन बाकिर उनका चाल-ढाल से बुझाय कि उनका ई वेवहार नीमन नइखे लागत। ऊ सुखराम के अइसन बेवहार पसन्द ना करत रहन।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एही बीच में एगो घटना भईल। शोर भईल कि नौ तारीख के जय प्रकाश नारायण आरे अइहें उनकर भाषण होई। स्कूल में एह बात के खूब चर्चा होखे लागल। हमनियों के सोचे लगलीं जा कि अइसन चानस ना छोड़े के चाहीं। कांग्रेस पार्टी से अलगे एगो समाजवादी पार्टी जय प्रकाश जी बनवले रहीं। गाँव-गाँव समाजवादी पार्टी के खूब प्रचार रहे।

एकरा पहिले भारत देश के आजादी के लड़ाई कांग्रेस खूब जोर-शोर से लड़त रहे। हम लइका रहीं तबो रोज नारा लगावत रहीं। रोज गाँव के लोग झाल-ढोल बजावत रहन। मन्दिर के पीछे ओही चबूतरा प हम लइकन के जुटा के नारा लगाईं कांग्रेस पाटी जिन्दाबाद जिन्दाबाद। महात्मा गाँधी जिन्दाबाद, जिन्दाबाद-जिन्दाबाद, लइका फेन बोलऽस ।''

एह तरह से जबतक रात में झाल बाजे हमनी के कई गो नारा लगाईं जा। हम लिड करत रहीं, आगे-आगे नारा लगावत रहीं।

हम डेरात ना रहीं। गाँव के सब लोग कहस कि किशुनवाँ निडर ह। एगो गाँव में के गोतिया में बाबा रहन कि ऊ हमरा के करिया-करिया कहस। ऊ कबहूँ किशुन ना कहत रहन। हम आजादी के नारा बराबर लगाईं एह से ऊ बाबा हमरा के कभी-कभी बेलइतिया कहस। ऊ हमरे दुआर प दिन भर रहत रहन। हमरा बाबा लोग के बराबर भाई कहि के पुकारत रहन। उनकर कल जब ऊख पेरे के चली त उनका डरे केहु केल्हूवाड़ी में ना जाईं, बाकी हमरा के बोला के रस पिआवत रहन। कहिंहें ''करिया आ के रस पी लऽ।'' हम मनगरे जा के एक गिलास पी लेत रहीं। ऊ जबरजस्ती अउरी एक गिलास पिअइहें।

ओह घरी उनइस सै वेयालीस ईसवी के भारत के आजादी के आन्दोलन चलत रहे। बड़ी गहमा गहमी रहे। सावन-भादो के महोना रहे। गाँधी जी के हड़ताल आ अंगरेजों भारत छोड़ों आन्दोलन शुरू हो गइल रहे। हमनी के अपर स्कूल में सड़क किनारे पढ़त रहीं जा। हेडमास्टर कंठी वालू कोइरउ गुरुजी रहन। लकड़ी के चट्टी लगा के चटर-चटर चलस। जवन लइका बदमासी करस उनका के छड़ी से पीट देत रहन। डरे केहू बोलत ना रहे। ऊ क्लास में आवस त क्लास शान्त हो जाय। लइका-लइकी केहू कुछ बोले ना। गुरुवे जी बोलस, ''हमरा एगो लइका बाड़न, केदार नाम ह। बड़ी तेज ह। साइकिल त खूब चलावले। पातर आर पर तेजी से केदार साइकिल दउरा देले।'' ओह घरी साइकिले के जबाना रहे। बाकी साइकिलो बहुत कम रही स। हमरा बसन्तपुर भर में एके साइकिल हमरा बाबू जी के रहे। उनइस रोपेया में बाबू जी खरीदले रहन।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हम बड़ आदमी त ना भइलीं, बाकीर दुलहपुर हाई स्कूल में कलर्क बहाल भईलीं पढ़ के। हँ, एगो घटना भईल एही बीच में। स्कूल में अठारह गो मास्टर, एगो हेड मास्टर शर्मा जी, हम एगो किरानी आ दू गो चपरासी रहन। एक दिन नरेश बाबू हाइजिन मास्टर हमार गुरुओ रह चुकल रहन, कवनो काम से हमरा टेबुल भीरी आ के कहलन, "बड़ा बाबू, हमार पूरा महीना बनाइब, हम बेमार रहीं ओकर छुट्टी सेकरेटरी राय साहेब से मंजूर करा लेब ? बेतन मत काटब, फेन वेतन पास करावे में झमेला होई।"

हम कहलीं, "आछे, रउआ हमार गुरु हईं, ना काटब।"

तब से सब मास्टर लोग हमरा के बड़ा बाबू कहे लागल । ई हे हम बड़ा अदिमी भइलीं। हम मान लेलीं कि बड़का बाबू जी के आशीरबाद से बड़का अदिमी भईलीं। गाँव-जवार के लोग अपना लइका – लइकी के नाम लिखवावे के आ मैटिक के फारम भरवावे के ले आवेला, बड़ी हमरा भीरी पैरवी लोग करेला। हम गरीब-अमीर, बाबाजी, बाभन, अहीर, मियाँ केहू के फारम भवरा दिहीला। हमार सुभाव ह कि हम केहू से रक-झक ना करीं। खूब खुश रहीला, सभ के बड़ा बाबू कहाईला। हमरा प ढेर लोग ताना मारेला, "राँड़ माँड़े राजी।" हम सुन के चुपचाप लगा जाईला।"

"हँ त हम कहत रहीं अन्दोलन के बात। बरसात के चलते सड़क के दूनों चाँट में बड़ी पानी बहत रहे। खूब धार चलत रहे। बउली लबालब भरल रहे। बउली के उत्तर करहा ना रहे। कुछ खेत के बाद करहा रहे। एह से उत्तर भर खेत, पानी से भर गइल रहन स। बउली के पानी खेत से होके करहा में जात रहे। ओने के राह बन हो गइल रहे। पानी मेंहें कपड़ा उठा के अदिमी दूनों टाइम फराकित होखे, दिशा फिरे बड़की बगइचा ओर जात रहन। बूढ़ अदिमी पानी में गिर के भींजीओ जात रहन।

हल्ला भईल कि गाँधी जी बम्बई में धरा के जेल चल गइलन। हमनी के नारा दिन-दिन भर तक लगावत रहीं जा "गाँधी जी की ज़ै, गाँधी जी की जै, काँगरेस पाटी जिन्दाबाद, रेडिकल पाटी मुरदाबाद, मुरदाबाद।"

कुछ काँगरेसी लोग आ के स्टेशन के कुल रसीदबही पानी में बहा देल। स्टेशन मास्टर टुकुर-टुकुर ताकते रह गइलन। हमनी के अपना घरे के कुल लइका बउली में से ढेर कागज छान के ले अइलीं जा। आपन – आपन सब छपल कागज सरिया के अपना घर में गिन-गिन के धईले रहीं जा। मुसहर टोली भीरी एगो कलक्टर साहेब के कार दुपहरिया में बारह बजे सड़क प रूकल। बउली किनारे झामन बाबा भईंस चरावत रहन। गोरा के कार से उतरत देखलन आ डाँटा ओहिजे फेंक के भगलन। परा के गाँव में चिचिआये लगलन "गोरा आ गइलन स, गोरा आ गइलन स।" ऊ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अपना घरे जाके कीली बन क देलन। समूचा गाँव में सबके घरे कीली लाग गईल। हमनी घरें भी कीली लाग गईल। हमनी के अपना घर के कुल लईका टेशन वाला कुल छपल कागज धान भूसा के ढेर में लुकवलीं जा। हमार बाबा ना भगलन, दुआरे प ऊ चुपचाप बइठल रहलन। फेर गोरा लोग कार से चल गइलन।

दोसरा दिन नौ अगस्त रहे। हमनी के अपना अपर स्कूल में बइठ के पढ़त रहीं जा। रेलगाड़ी छोटी लाइन आइल आ स्कूले पे रूक गईल। हमनी के अचरज से देखें लगलीं जा, खूब खुशी भईल। तुरते गाड़ी में से पाँच-छव अदिमी खादी-कुरता वाला उत्तर के स्कूल में हेडमास्टर भीरी पहुँच के कहलन, "स्कूल बन्द रहेगा जब तक आजादी नहीं मिलेगी। घंटी बजवा दीजिए।"

कोइरउ गुरु जी के इशारा से एगो लइका घन्टी टुनटुना देलस। सब लइका-लइकी बहरी निकल के हल्ला बोल देलन। गुरुजी जोर से कहलन, "काल्हु से स्कूल ना लागी।"

एगो लइका पूछलस, "अब कहिया लागी ?" खदरधारी लोग बोललन, "आजादी मिली तब।"

खूब हल्ला करते हमनी के गाड़ी भीरी खड़ा हो के देखे लगलीं जा। कुछ लइका गाड़ी प चढ़ गइलन खदरधारी लोग इंजन में चढ़ल। फिर गाड़ी खुल गईल आ आरा के तरफ जाये लागल। एकईस दिन गाड़ी ना आईल केनहूँ से। लाइन प बरसात के चलते मुरचा लागे लागल। एकईस दिन के बाद पीतर के भोंभा वाला इंजन के साथे गाड़ी आइल त हमनी के सड़क ओर दउर गइलीं जां कम अदिमी गाड़ी में चढ़ल रहन। गाँव में रोज चरचा होत रहे कि अबकी बे गाँधी जी, नेहरू जी, राजिन्दर बाबू आ ढेर नेता जेल में गईल बाड़े, अब अँगरेजन के गुलामी ना रही। कुल्ह गोरा ई देश छोड़ि के भाग जइहें। अब आपन राज होई। एही तरह से हमनीयों के ओर से सब नेता लोग देहात से अरिस्ट होके जेल चल गइलन। हम रोज साँझि खा लइका लोग के जुटा के नारा लगावत रहीं। "गाँधी जी जिन्दाबाद, जिन्दाबाद, राजिन्दर बाबू जिन्दाबाद, जिन्दाबाद।"

सड़क प स्कूल से आगे एगो खूबे मोटा बड़ा-सा पकड़ी के फेंड़ रहे।। क बे अंगरेज लोग ओकरा के कटवावे के जोजना बनावल बाकीर गाँव के अदिमी ओकरा जरिया त सेनूर से चार-पाँच गो टीका लगा देत रहन। एह से केहू बढ़ई चाहे मजदूर काटे प तइयारे ना होखत रहन। नौ-दस बजे ओही फेंड़ भीरी राजेन्दर बाबू के कार आ के रूकल। हमनियों के लइका जूट गइलीं जां। खूबे भीड़ लाग गईल। गाँव के नेता लोग माला पहिरावल। मुंशी जी गाँव के बड़का नेता रहन। मुंशी जी चिल्लाए लगलन, "राजिन्दर बाबू जिन्दाबाद, जिन्दाबाद, जिन्दाबाद।" सब लोग खूबे नारा लगावल। तब कार खुलल आ पछिम गईल।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ओह दिन आरे रमना मैदान में जयप्रकाश जी के भाषण बहुत देर तक भईल। सऊँसे रमना मैदान भर गईल रहे। अदिमी गिनाये भर के ना रहे। ओहिजे से रात में रेलगाड़ी से स्कूल के छात्रावास में सभ लइका चल अइलीं जा।

एकरा बाद ओह दिन के सभा से आ के एगो गायक गीत बना के गावे लागल आ गीत के बड़ा परचार भईल।

"सुनि के जयपरकास के बतिया,

रतिया मतिया हेरइले ना।"

राधा रोजो इ गीत गुन गुनात रहत रही। ई गीत कई बरिस तक गवात रहल।

एक दिन राधा हमरा भीरी दउरले अइली आ खड़ा भइली त हाँफत रही। हम पूँछलीं, "का हो गइल कि अतिना हाँफत बाड़ू ?"

ऊ कहली हाँफते – हाँफते, "तनी दम लेवे द।" थोड़े देर में बतवली कि अखबार में निकलल बा कि जयपरकास बाबू बिदेस से आव ऽ तारन आ पटना के गाँधी मैंदान में उनकर स्वागत होई। पूछली कि तूहूँ जइब नूँ ? एही बीच में भोला आ गइलन आ पटना जाये खातिर उहो तइयार हो गइलन आ अवरू कुछ लइका चले के कहलन।

अब देस आजाद हो गइल रहे। आ चीनी के, कोइला के, कपड़ा के कोटा हो गइल रहे। एह से सगरो सामान लेवे में मारामारी रहे। सभे इहे बतिआवे कि काँगरेसी से अंगरेजवे नीमन रहन स। ओहिजा सोनभदर स्कूल में एगो कूचू-कूचू करिया विज्ञान माहटर दोसरा जगे से बदल के आईल रहन ऊ क्लास में पैन्ट के चेन खोल के कुरसी प बइठ ऽ लन। कहाँ कवनो अपसर उनका कुछ कर ऽ तारे। हेडमाहटरो मउगे बा उहों ओहिजा के कुछ ना बोले ले जा। ई सब सुन के सब माहटर आपुस में हँसलन। राधा कहली कि एक दिन त अजबे हो गईल। हम कहलीं, "बताव का हो गईल ?" लरिकाई के बात ह। राधा कहे लगली आ खूब हँसतो रहली। "रामदतिया आ लखपतिया अगिला बेंच प बइठली स। ओहनी के आपुसे में मुसकाये लगली स। ऊ एक दिन पहिलहूँ ई देखले रही स। एह से आजु तईयार होके आइल रही स। जइसे मोटकू करीअउ माहटर कुरसी प बईठ के हाजिरी लेवे लगले, त देखली स चेन नाभी के नीचे पूरा खुल गईल रहे। दूनों पारा-पारी जोर से चेनवें प धूर फेंकली स। ऊ लजा गइले आ खाड़ा होके पढ़ावे लगले। स्त्रीलिंग-पुलिंग हरमेसा गलतीए बोलऽ लेऽ पूछला प कहले कि हम त विज्ञान के मास्टर हईं, हिन्दी के ना हईं।

ऊ एकदम बेहूदा माहटर हवन। दस-बीस दिन के बाद फेन ओइसहीं चेन खोल के आ कुरसी प बईठ गइलन। बीना, सोनम आ टीनू दोसरकीं पाँती के अगिला बेंच

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प बईठल रही जा। पारा-पारी ओहू लोग के नजर परल। देखल लोग कि चेन खुललबा आ सब लउकत बा। केहू के हू से कुछ कहत नईखे। एने-ओने नजर लोग फेरस बाकी फेन चेनवें ओर नजर चल जाय। घन्टी बाजल त माहटर उठ के चल गइलन। सर्ट नीचे में लाम चाकर रहे। माहटर खड़ा होखस त चेन ना लउकत रहे। एही से ऊ कुरसी प बईठ जात रहन। दोसरा दिन ऊ तीनों-चारों आपुस में खूब हँस के कहली स कि ई एकदम छिनार माहटर बा। एकरा तनिको लाज-सरम नइखे। राह में बतिआवते जात रही स, त सड़क प एगो सवारी गाड़ी गीत गावते पार होत रहे :-

"भोर हो गईल बलम, लागे सरम

हमरा लागे सरम।"

कुल ई सुन के हँसे लगली स। चलते-चलते फेर टीनू कहलक, "काल्हु हमनी के झिटिका ले के चले के, आ जइसहीं माहटर बइठिहें, हमनी के चारों अदिमी झिटिका जोर से उनका प फेंके के।"

बिहने जब स्कूल लागल आ माहटर परिकले आ के कुरसी प बइठलना। ऊ चारों लड़की टुकर-टुकर देखली स आ एक-दोसरा प तकली स। आपुस में इशारा पपनी गिरा के भईल। एके बे चारों साध के झिटिका फेंकली स। क गो झिटिका झन दे लागल त ऊ छनछना गईले आ ओह क के खड़ा हो गइले। आँह कइले त दूनो ओठ खुल गइल। दूनों हाथ से पैंट प से दबवले बहरी निकल गइले। एसटाफ रूम में गईले आ कुरसी प बइठ के आँख मूँद ले ले। गुप्ता जी साइन्स टिचर पूछले, "काहे मास्टर साहेब, क्लास छोड़ के चल अईलीं? का बात बा? कुछ भईल ह का? ऊ कुछ ना बोललन।

ओने ओह क्लास के कुल लइकी जान गईली स। हमनी से सउँसे क्लास में खूब हाहा-ही ही भईल। सभे कहे लागल कि खूब बढ़िया कईलू ह स। ई अइसहीं सुनिहें। इन कर दोसर दवाई नईखे।

ढेर दिन ले ई चरचा होते रह गईल। राधा कहली रीनू से, आरे ऊ देखे में कइसन लागत रहे। तें त खूब निहार के देखलीस नूँ?"

रीनू कहलक, "अगिला बेन्च प एक दिन तू हूँ बईठ के देखलऽ। मुराद पूरा हो जाई।"

राधा कहली कि तोहनी के देखावऽ तारे त हम कइसे देख लीं, हमरा नइखे देखे के।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तब से उनका में कुछ सुधार भईल बा। अब ओइसे नइखन करत। का जाने अगिला साल दोसर-दोसर लइकी पढ़े अइहें स त फेर ओइसहीं करीहें। बाकी हेडमास्टर एह प कुछुओ ना कहलन।

राधा एक दिन, ई चरचा चलत रहे त ऊ कहली, सुनले बानीं जा कि आपारा के नियरा कै स्कूल में एगो मास्टर के जूता के माला पेन्हा के, गदहा प चढ़ा के आ सऊँसे गाँव में घुमावल गइल रहे। अइसहीं तड़ारी में एगो हेडमास्टर के बेइजती भइल रहे।

चौथा दिन हमनी के पटना जयपरकास जी के स्वागत देखे गइलीं जा। गाँधी मैदान में एगो छोटहने मंच बनल रहे। माला पहिरा के स्वागत भईल। ऊहाँ के अपने एक घन्टा तक कई गो देश के चरचा क के आपन अनुभव सुना के बइठलीं। तीन-चार गो नेता लोग गला साफ कईल, आ सभा खतम भईल। कोईर टोली में एहिजा लोग बतिआवत रहन कि जयपरकास जी देश के बड़का नेता हवन। हमनी से राधा सुनली त खुश हो गईली। जयपरकाश जी के चरचा रोज होखे लागल आ करीअऊ मास्टर के चरचा फेन कुछ दिन के बाद भुला गईल।

***

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

खण्ड - 6

राधा कहली कि काल्हु हम एहीजा ना आइब। हम पूछलीं, "काहे ना अइबू? कवनो गलती हो गईल बा का?"

ऊ कहलीं, "उहूँ।"

हम पूछलीं, "केहू कुछ कहल ह का?"

ऊ कहली, "उहूँ।"

हम अमरूद खात रहीं। बड़ी मीठ रहे आ ललगुदिया रहे। तनी मनी खइले रहीं। राह में सुरेमन सिंह के फुलवारी भीरी गिरल रहे। पाक के पियर भईल रहे। देखलीं हँ त उठा ले ली हँ। साफ-सुथरा जगह प रहे। "खूब नीमन बा लऽ खा?" ऊ कहली, "ऊहूँ।"

मुसका के उठ गइली आ ओहिजे टीला के नीचे खड़ा हो के पोज बना के नाचे लगली आ धीर-धीरे मेंहीं आवाज में गावे लगली, -

"मोर पखा सिर ऊपर राखिहों

या मुरली मुरलीधर की

अधरान धरी अधरान धरौंगी।

या मुरली मुरलीधरकी....।"

थिरक-थिरक के आ सुरीली आवाज सुना के हमरा के कृष्ण साँचों के बना देली, अपने असली राधा बन गईली, रधिया ओह घरी ना रहली। हम त सचो ओतिना देर मंतर-मुग्ध हो गईलीं। अपना जिनिगी में अइसन अनन्द हमरा कबो ना मिलल रहे। अतिना देर ले हम टीला भीरी ना रहीं। दोसरा लोक में चलि गईल रहीं।

जब हमरा भीरी सुसता के खड़ा भईली त हम कहलीं, "तू हमरा के साँचों के कृष्ण बना देबू लोग-बाग ई सब सुनी-देखी त का कही? तूँ आजु अजबे कऽ देलू। हम ना जानत रहीं कि तूँ अइसन आ अतिना नीमन लइकी हऊ? हमरा एह घरी कुछुओ नइखे बुझात कि का करीं?"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

फिर हम कहे लगलीं, "तूँ का सोचऽ तारू?" ऊ पूछली "कवन बात के बारे में?" हम कहलीं, "आरे उहे जवन रूप धइलू हऽ एकरे बारे में?"

राधा बेबाक कहली, "मरदा मउगी राजी त का करिहें गाँव के काजी। तूँहीं नू कहऽलऽ?"

"आरे फेन उहे बात कहे लगलू। ई वृन्दावन आ गोकुल ना नू हऽ।"

"काहे गोकुल ना हऽ? ई त हमनी के, हमरा तहरा बनवला के आ मानला के बा। बसन्तपुर मानीं आ चाहे त एकरे बरसाने, गोकुल-मथुरा मान लीं। भागलपुर के पीरपैंती में गोकुल-मथुरा गाँव नइखे?" हमनीं के मान लेला के बा।" राधा साफ-साफ कहली।

"हमरा तहरा बात तक पहुँच नइखे होत, हम तोहरा तक पहुँचत नईखीं।" हम जवाब देलीं।

ऊ कहली आ मुसकइली, "काहे हम त फेंड़ अस ऊँचा बानीं, त कइसे तूँ पहुँचबऽ, बाकी हम चाहब त छन भर में पहुँचा देब तहरा के।

हम कहलीं "त देर काहे कइले बाड़?" त हम देखलीं कि तीन-चार गो लईकी एनही आवत बाड़ी स। एसकुल में जब पढ़ला से मन अनसा जाला त सुसताए खातिर मलार के टीला तरफ लइका-लइकी लोगिन आ जाला लोग। पास त हर क्लास में दुइए गो होला बाकी गुरूजी के पास गिने के इयाद ना रहला।

रंग में भंग हो गईल। तुरते लखपातो, देवन्ती, ललिता आ दमयन्ती, रधिया के सखी लोग आ गईली जा।

आवते एके कुल्ह जानी कहली जा 'एहीजा वृन्दावन में का होता राधा कन्हइया के? गोपाल त आजु तक दुलहा ना बनले त दुलहपुर में, सुनिला जा कि गाय चरावले। एही जा कहाँ गाय बाड़ी स आकि गाय के बहाना से गोपी लोग के खोजे में बेचैन बाड़े?"

"गोपाल के खोजे के परत रहे का? बे खोजले कईसे चार गो गोपी लोग आ गईली?" किशुन कहले।

फेर किशुन कहले, सुनऽजा एगो कथा कहतानीं, "काल्ह एगो लईकी के दूर के नाता के फूफा जी आईल रहन। फूफाजी अपना ससुर के हाता में घामा कलीन प बइठल रहीं। उनकर छोट की सालीओ बइठल रही। फूफा जी ओह लइकिया से पूछलन कि, "सामाचार कह?"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लईकी कुछ ना बोलली। त फूफा जी उन कर दहिना हाथ अपना हाथ में ध लेलन। अपना ओरे खींचे लगलन। लईकी फूफा जी के गोड़ बावाँ हाथे ध के अपना ओरे खींचे लगली। निहुर गईल रही। फूफा जी के माजा मिले लागल। लइकी के छाती उनका हाथ से जबे तबे छुआ जात रहे। लईकी जान गइली। जोर से उनकर गोड़ खींचली, ऊ गिरे-गिरे हो गईलन। तली उनकर सास आ गइलीं। ऊ दूनो जना के छोड़ा देली। कि झगरता लोग।

ऊ लोगन आपुस में झगरत ना रहे। ऊ लोग त कबे से फूलझरी खेलत रहे। फूफा नहाये खातिर कपड़ा खोललन त उहे उनकरा के देही में तेल लगवली। फेर दूनो गोड़ में तेल मालिश कइली। खाये लगलन त सास चटनी ले आवे गईली त फूफा जी ओह लइकिया के मुँह में एक कवर जबरदस्ती खिआवे लगलन, ऊ उगिल देलस आ अपना ओढ़नी से जल्दी मुँह पोंछ लेली, कि केहू देखे मत।

राधा कहली कि हम कथा कहतानीं,-

"एगो सोनाली गाँव बा। ओहिजा बसावन पाँड़े के संढुआना बा। उनका सांढू के बेटी लतिका ढेर दिन से एँहीजे रहत रही। आपन बेटी लखनी के परिआर साल शिवराँव बिआह कइले रही। त रोपेआ छिने खातिर पर साल गोली मार देलन स। बड़ी मखी चूस रहन। मर गईलन त उनकर लइकिया ससुरा गईल। जवरे लतिका भी गईली। एक दिन उनका मरद जोरे लतिका फुसुर-फुसुर बतिआवत रही। लखनी के नजर पड़ गईल। पूछली लतिका से कि का बतिआवत बाड़ी स? ऊ कहली कि कुछुओ ना, अईसहीं बईठला के अनमाना। त लखनी खिसिया गईली। कहली कि ले तेंही बरतन माँज, छिनरपन मत कर। एह प दूनों जानी खूब लड़ली जा, झोंटा झोंटी हो गईल। गाँव के औरत लोग आ के त छोड़वली। ओह दिन दूनों जानी खइली ना। साँझी खा लतिका लखनी के गोड़ ध के रोवे लगली। आ कहली कि दिदिया तूँ अइसहीं शक करे लागलू। फेर तुरते दूनों जानी में राय हो गईल खाना दिन वाला भात-दाल चूल्हा धरा के गरम कइली जा आ एके थरिया में खइली जा। खूब हँस-हँस के बतिआवे लगली जा।

रात में दूनों जानी अपना-अपना घर में सुतली जा मच्छड़दानी लगा के। लखनी अपना खटिया प अपना मरद के ना सूते देली। ऊ दोसरा घर में सूतलन। मच्छर अतिना बिन्धले स कि देही में नोचनी लाग गलईन। ऊँघीए ना लागे। घंटा-दूघन्टा देह नोचत रहले। उठ के पेसाब नली प कइले आ लतिका के घर में गते-गते मच्छरदानी में समा गइले। लतिका त जगले रही। उनका के अँकवारी में ध के जोर से चँपली। ऊहो ओइसहीं दबवलन। फेन आपन धोती खोलि के गोड़तरिया फेंक देलन। ओने

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust Funding IKS-MoE-Grant-2

लखनियों के नीन ना लागत रहे। उहो आहते रही। जब खटिया मचर-मचर बाजे लागल त उनका देही में आग लाग गईल। मच्छरदानी उठा के खटिया से नीचे उतरे लगली त गोड़ में मच्छरदानी लपटा गईल। नीचे उलटा गइली। केहुनी में बड़ी चोट लागल। ओहिजे से चिचिआये लगली, रह छँटववनी तोर बाथा हम छोड़ावत बानीं। पीढ़ा गोड़ में ठेकल त उठा के फेंकली। उनकर मरद अतिना देर में कोना में जाके धोती देही में कइसहूँ लपेट लेलन बाकी पछुआ खोंसे खोंसे में गिर गइलन। झटका के आवाज आइल। ओनियें अन्हारा में दउरली त उनकर मरद उनका के ध के थपरे-थपरे मारे लगलन। आ कहे लगलन, "तोरा भीरी त सूते गइले रहीं। तें खदेर देलीस ह त मच्छर से बाँचे खातिर एकरा मच्छरदानी में समइलीं हँ। हम जान दे दीं आ तें खूब आराम से सूतबे?"

ऊ काल्हु बिहने लतिका के लिया के शहर में चल गईलन आ दूनों जने कोट मैरेज क ले लन। बसावन पाँड़े के बेटी ससुरा में जहर खा के मर गईल रही त गवना में उनकर बाप जवन-जवन सामान देले रहन ऊ पलंग, तोसक, तकिया, बाकस, अलमारी कपड़ा-लाता सब गिन-गिन के ट्रैक्टर प लाद के घरे ले आइल रहन। ई सब उलटा-पुलटा काम कईलन त अपनहूँ मर गईलन, दूसर की बेटी भी दुर्दसा में पड़ गईल। पूरा बिनास हो गईल।

दमयन्ती कहली कि हमरो पीठ फोड़बा गाँव बसन्तपुर गाँव से कम नइखे। ललिता पूछ बइठली, "कवनो नया बात भईल ह का?"

"हँ हो, एगो महटर बाड़े अजबे कईलन, गाँव ऊपर। कहीं दोसरा जगे लोअर एसकूल में पढ़ावत रहन। ओहिजा से पिटा के आईल रहन। के जाने का कइले रहन कि अब ओहिजा नइखन जात। डी. एस. सी के घूस दे के नियरे गोपीडिह मिडिल एसकूल में बदली करा लेलन।"

ललिता कहली "आरे तोहरा गाँवे ऊ महटरवा का कहलक ह, से ना कह?"

"सुनऽ, पँड़ेया के कथा कहतानी। ऊ कहे लगली।

"पँडेया महटरवा के नया पतोह आईल विया। परसों पतोहिया खाये करत रहे त कवनो लोहा के हथियार से ठोक-ठोक के कलवा वाला घरवा में अपना घरवा में से एगो ऊपरे देवाल में छेद कइलक। पतोहिया नया-नैहर रहे ई कुछ ना जनलक कि का कर ऽ तारे। जब खाना बना के पतोहिया पानी चला के कल अवला घर में नहाय लागल त महटरवा देवाल के बिल से झाँके लागल। तली उनके खाँसी आ गईल। पतोहिया ऊपरे तकलक आ देखलक ओकरा आँख प नजर पड़ल। चिचिया आए लागल "कुकुरा ससुर ना ह, कुलछन ह। कहीं जातो नइखे बदमास ह।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कइलस हाला। अगल-बगल के मेहरारू जान गईली स। गाँव भर में काल्ह हराहोर हो गईल। मुँहे-मुँहे सभे जान गईल।

हम कहलीं कि हमरो गाँव में आज हरा, होर हो जाई जइसे बाबू साहब के बिछिया के शोर हो गईल रहे।

ललिता कहली, "का शोर बाबू साहब के भईल रहे।"

"तूँ नइखू जानत त कहतानीं सुन ऽ।" किशुन कहलन।

"हमरा बसंतपुर गाँव में त चार-पाँच घर बाबू साहेब बड़ले बाड़न, तूँ लोग त जानते बाड़ू। रामू एक दिन दिशा फिरे बगइचा में ना जाके दूर मलार किनारे गइलन। लोटा में पानी भर के हाथ में लेले जात रहन त जोर से दिशा लाग गईल। उन्हूकरा बुझाइल कि धोतिए में हो जाई। आरी तर साफ जगह देख के पछूआ खोललन आ झप दे ओहिजे बईठ गईलन। माथा निहुरा के दहिना हाथ माथा प ध लेलन। नीचे नजर परल त चिहा के उठ गईलन, फेन भीरिए निहुर के बइठलन। देख तारे कि एगो करिआ बीछी ओहिजे गुहवे के नीचे मरल अइंठाइल बिया। जल्दी-जल्दी पानी छुअलन आ तेजी से ओहिजा से घरे के राह धइलन। ओहि सुर में रहन। ईहे सोचते रहन कि अजब भगवान के लीला बा। हम त राते रोटी-दाल आ भंटा के चोखा खइले रहीं। हम बिछी कईसे हगलीं? घरे पहुँचे में तनिको देर ना लागल। रहिए में महटर साहेब के चंपा कल पर हाथ गोड़ माँज के कुला क लेलन। घरे कहलन कि आहो रमदतिया के माई, कहाँ बाड़ू?, सुन तारू, तनि हेने आवऽना। का करऽतारू जल्दी सुनऽना? ऊ ओने से चिचिआते अइली, आ मार बढ़नी रे, ई त रोज अईसहीं फरफेन करत आवले। बाबू साहेब बेरोख हो के बोललन। तूँ त हर बात में नरेट बावे लागलू। बुझाला कि बिकरम के भोंभा हऊ चीनी मिल के। तनी सुन बो करबू?"

ऊ कहली "का कहतानीं कहीं?"

"बाकी जाए द तूँ गाँव में ढिंढोरा पीट के बाजा बजा देबू। तहरा से ना कहब, हम तहरा के खूब जानतानीं। पेट में तहरा पानीओ ना पचे। कवनो मेहरारू भीरी सब उगिल देबू। नीमन-जबुन तहरा कुछुओ ना बुझाय।"

ऊ कहली।"आ मार बढ़नी रे, काहे के हमरा के बोलवलीं हँ? हम चाउर ढेंकी में छाँटल छोड़ के अइलीं हँ।"

बाबू साहेब उनकर हाथ अपना छाती से सटा के कहलन, "चुपे चाप रहबू, कवनो से कहबू ना नूँ?"

ऊ कहली, "ना कहेवाली बात होई त हम गला फार के भूँकत चलब, कुतिया हईं कुतिया?"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बाबू साहेब कहलन कि "सूनबो करबू? फेंकरे लागलू त गाड़ी ईसपरेस हो जाली।"

"हमरा के राते रोटी खाये के देले रहू। भात त रहे ना कि ओह में कुछ सना जाई। तरकारियो ना रहे कि कुछ फेंटाए के शक होइत।" ऊ झट से पूछ बईठली "पुरान कहे लगलीं। बतिया कहीं ना कि आखिर का हो गईल?" बाबू साहेब कहलन "देखऽअपने तक रखिहऽ। हमरे-तहरा जाने के चाहीं। दिशा फिरे मलार किनारे आज गइलीं ह त हम बिछी हगलीं हँ, "ई कइसे हो गईल ह, ऊ कहली। आ दुखाइल ह ना?" बाबू साहेब कहलन, कि "दुखाये के मुँह मारऽ अइसन आज ले सुनले रहलू ह? जायेदऽ चुपेचाप रहीहऽ। केहू जाने ना।"

बाबू साहेब दलान प मुँह धोवे चल गईलन आ बबुर के दतुअन आ जैन लाल मंजन से रगड़ रगड़ के मुँह धोवे लगलन।

दइयवा अँगना बहारे आ बरतन माँजे आईल। ऊ बड़ी मजगर सबेरहीं आ जात रहे। ऊहे रात के सब राख चुल्हा में से फेंकत रहे। बाबू साहेब पुरान जमींदार रहन। एक बे खेत दस कठा बेंच के मेहरारू से लुका के चोर डकइत के डरे चुल्हे के राख में पाँच हजार रोपेया के बंडल डोंड़ा में बान्ह के रात में रख के सुत गईलन। दइयवा अनगूते राख निकाले लागल त डोंड़ा मिलल। अपना घरे जाके रसोइया घर में गड़हा कोड़ के, गाड़ के आ रसोइया घर लिप देलक गोरकी माटी से। फुदकले बाबू साहेब कीहाँ पहुँचल आ चुल्हा साफ क के आँगन बहारे लागल।

तब से खूब फंजीरहीं अपना काम प पहुँच जाली आ काम मनगर करली।

ओहू दिन तुरते आईल त बाबू सहबाईन कहली "ए दाई, तनी सुनऽ?" दाई भीरी गईली त ऊ कहली, "दाई एगो बात बतिआइब त केहू से कहबू ना नूँ? सुनऽ, हमरा रमदतिया के बाबू आज मलार किनारे झाड़ा फिरे गइलन हँ त एगो जियते बीछी हगलन हँ। अइसन आजु ले कहीं ना भईल रहे। बाकी जाये द केहू से कहिह मत। ऊ हमरा झोंटा पेरे लगिहें।"

दईयवा जल्दी से आधा-पाधा आगन लीप के कोना में बहारन छोड़ि देलक आ चल गईल।

अगवे बसंतपुर के चौक बा। ओहिजा सुनरी,मुनरी आ खदेरनी दिनों भर बईठ के, खड़ा हो के आ झुम-झुम के, हाथ फेंक के ललकार-ललकार के, लईका-सेयान केहू के घेर-घेर के बतिआवत रहली जा, मानर पूरत रहली जा। ओह लोग के ढेर लोग देवरे-भउजाई बा। अहीर होखस, मियाँईन होखस, पंडी जी होखस, पसवान होखस, सोनारिन होखस सभ के से बतिअइए के आगे बढ़े देला लोग। सुनरी से

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मुनरी एने क बरिस से नईखी बोलत। भारी बनल बाड़ी। एक बे झोटा झोटी कइले रहे लोग आपुस में तबे से बोलचाल दूनों सखी में बन बा। बाकी पुरब के खदेरनी जुट जाली त उहे मेह बन जाली आ गांव भर के बतकही दिन भर सांझि ले धुआंत रहेला, बोताये के नाम ना लेवे। तीनों जानी में केहू दब नईखे। एगो बीडियो साहेब कहाली, बीचवाली सीओ साहब आ पुरूब वाली पिरिन्सपलाईन कहाली, उनका मरद जबरजंग हवन आ अपना बढ़का आफिस के हाकिमो के कन्टरोल करऽ ले। उनका से उनकर हाकिमो अजीज हो के कबो-कबो हार मान जाले।

दईयवा सीधे चउका प आईल त बीचवाली सीओ आज के सम्बाददाता के खोजते रही। ऊ आके मुनरी भीरी सट के बईठ गईल। मुनरी कहली, तें त सभका घर के दाल-चाउर जानलीस, का बात बा कि डेगरगर अईलीस हऽ?" दईयवा कह लक, कि "आज अईसन हो गईल बा जईसन कहीं जिलो जवार में ना भईल होई। मुनरी कहली" बुझौवल मत बुझाव। साफ-साफ कह कवनो के बेटी-पतोह निकल का गईल बिया। ऊ कहलक, "रहऽ ना, तूँ त का-का करे लागलू? गजब हो गईल। बाबू साहेब बीछी हग देलन हँ आ बिछिया चुतरिये में मार देले बिया। केहू झरनिहार नइखे जुटल, ऊ छटपटाते बेहोश हो जा ता रे। मुँह प पानी छिंटाता।" तली खदेरनी आ गईली आ ई बात सुनली त दउरल अपना मरद से कहलीं, "तूँ अभी सुतले बाड़ऽ जल्दी जा बाबू साहेब के चूतर में बीछी मरले बिया। मरे के जोग लागल बा। बेचारू बड़ी नीमन अदिमी हवन। रोज तहार सामाचार हमरा से राह चलत एहीजा पूछ जालन। तहार साहेब अइलन हँ कि ना ? तूँ सुनत नईखऽ, दउर के देखऽत, ना होखे त सूखा बाबू झारले, उन करो के लिअवले जा, बेचारू जी जइहें त जस मिली।"

ओहिजा सउँसे गाँव जुट गईल, लईका लईकी त सब हाँफत पहुँचलन स। देखऽ ता लोग कि बाबू साहेब अकेले दलान प बईठ के मुँह धोवत बाड़न।

कवलेज के छोटा बाबू जाते पूछलन, "क़ाजी, का हो गईल रहे। कादो चूतर में कुजगहाँ बीछी मार देलक ह?" ऊ कहलन, "के कहलक हऽ?" छोटा बाबू कहलन कि गजब गाँव बा, हमनी के चउकवा प सब मऊगी शोर कइले बाड़ी स। सुनलीं हँ जा त दउरल डेगरगरे आवतानीं जा। रउरा एहिजा चुपचाप मुँह धोवतानीं।" बाबू साहेब कहलन, "अइसन त कुछ नईखे, रउरे ई सुन के ताजुब होता। गजबे गाँव बा।"

हम कहतानीं कि हमरा स्कूलों में एगो घटना हो गइल बा। स्कूल के लईका - लईकी के हस्तकरम के आ पाक शासतर के इमतहान रहे। लइका रस्सी टोकरी देखा के आ सामान जमा क के घरे अइलन स। लईकी लोग रसोई, नास्ता पकावे वनावे में लाग गईली। हेडमाहटर साहेब हमरा से कहलन कि रउरे भीरी हस्त करम के सब

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सामान जमा हो जाई। रउरा साँझि खा एसकाउट मास्टर के बोला के बराबर – बराबर सब मास्टर चपरासी तक के रसी, टोकरी, रूमाल, झाड़ू बँटवा देब। हम बड़ा बाबू कहाते रहीं, ई बड़ काम रहले रहे। एही बासे के बीच में इन्सपेक्टरो साहेब पछिमी के आ गईलन। लईकी खूब तइयारी कइले रही स। सभे माहटर खाये बईठल। इन्सपेक्टरो साहेब बईठलन आ कचर – कचर के खईलन। एगारहवाँ क्लास के पिन्की के तिअन चलावत इन्सपेक्टर साहेब देखलन त पूरा पनिया गईलन। ऊ पिन्की बाबू साहेब के बेटी रहे आ इन्सपेक्टरो साहेब छोटकी गाँव के बबुए साहेब रहन। खाते – खाते ओकरा से खूब बतिअवलन आ परिचय जान – पहचान बना के ट्रेनिंग करा देवे खातिर पटिया लेलन। ऊ इन्सपेक्टर साहेब एक बे बाजार के मिडिल इसकुल में एगो शिक्षिका के मुलहिजा करत खा का जाने का कइले रहन कि ओकर मरद दोसरका दिन उनका के छत प से धंसोर देले रहे उनकर गोड़, गिर के टूट गईल रहे। ऊ लाजे आरे में दवाई न करा के डिहरी शहर में पलास्तर करवले रहन।

पिंकी के शहर में लिया गईले आ डेढ़ घरी रात ले ना अइले त पिंकी के माई उदास हो के कहली कि कइसन ट्रेनिंग ह कि रात ले ओरआते नईखे। अईसन ट्रेनिंग हमनी के जवाना में ना रहे।

ओने सभे के खिआवल–पिआवल हो गईल त कुल लईकी आपन बचल सामान बरतन–बासन ले के घरे–दुआरे चल गईली स। दूगो बरतनियाँ गाँव के बाबा जी के बेटी ऊपरे छत प एगारहवाँ क्लास में चल गईली स। चपरासी सोचलस कि अब अन्हार होता आ सभे चल गईल त रूम में ताला लगा दीं। ऊ गईल आ तुरते लवट आइल!

हम पूछलीं, "काहे चल अइल ऽ ? ताला ना लगाईबऽ ?"

ऊ कहलन "कइसे लगाईं ? ओहिजा क्लासे में दूगो लईकी आ सेकन माहटर बाड़न।"

हम पूछलीं, "का कर ऽ ता लोग ?"

ऊ कहलन, "तीनों अदिमी खूब भोंकर–भोंकर के रोवतारे ?"

"काहे रोवता लोग ? "

"हम का जानीं ?"

हम कहलीं डपट के, "जा कहिहे कि जाईं, सभे, अब ताला लगावे के बा।"

ऊ चलि गइल। अब अन्हार बढ़े लागल। अतिने में पिंकी के छोटकी बहिन हमरा ऑफिस में टेबुल भीरी आ के खड़ा हो गईल।

हम पूछलीं, "आरे एह घरी तें एहिजा का करे अइलिस ह ? घरे जो ?"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ऊ मुसुकाए लागल आ पूछलस, ''बड़ा बाबू, रउरा बीचे काहे माँग, लइकी निअन फारिले ?''

हम बड़ा फेर में पड़ल रहीं। ना बुझात रहे कि का करीं ? हमरा के आज बेइजत का करा दी। सब अतना दिनके बनावल धो – पोंछ दी का ?

तली ओही घरी मिडिल स्कूल के चपरासी जोर से पुकरलक, ''कहाँ चल गइलू अइबू कि ना हो ? ''

ऊहे ऊ हमरा ओरे ताक के आ दउरल चल गईल। कहतानीं कि कृष्ण के कृपा से पानी ना उतरल।

लखपातो कहली कि हमरा एसकूल में एगो गजबे टीचर बाड़े। दूर के आरा के नियरा वाला एसकूल में पढ़ ऽ लीं। ऊ कहली, ''हमरा इन्टर एसकूल के एगो पाठक जी साइन्स के टीचर हवन। उनकर दू गो मेहरारू बाड़ी जा। ऊ अपने खूब पूजा-पाठ करेलन। दू-दू घन्टा पूजा प बईठलन। भुनुर-भुनुर के जाने का भुनभुनालन। ऊनके घर के पिछुआरी हमरो घर बा। टोला में सभे ई जानला कि माहटर साहेब पुरनकी मेहरारू जोरे कहियो ना सूतस। नयकी मेहरारू से पटरी बइठलईन आ उनकरे के खूब मान ऽ ले। हालांकि पुरनकी उनकर खूब सेवा करली। उनकर सभ कपड़ा-धोती गंजी दिन भर फींचली, उनका सामने बईठ के बेना हाँक के खियावली, ठहर-चउका उहे क देली। नयकी त अपने नेहाए-धोआए आ सिंगार-पटार में सारी दिन बेचैन रहली, ऊ दोसरा के का करिहें।

हमनी के उनका घरे गाहे-बेगाहे जाई लाजा। कल्हुए हम आ नक बेसरी गईल रहीं जा। ऊ माहटर साहेब रोज-रोज राति खा आपन डायरी लिखले आ हिसाब-किताब करले।

गइलीं जा त भीतर के दरवाजा बन रहे। कीली भीरी पीटलीं जा आ बोललीं जा चाची, चाची। त ओने से पुरनकी के आवाज आईल, मंइयाँ, तनी मनी ओहिजे दुमुहाँ में बइठ ऽ जा। ऊहाँ के बाथ घर में नहातानीं, तनी नहा लेवे द जा। ओहिजे चउकी प किताब बाड़ी स। पढ़ ऽ जा।''

हम कहलीं, ''आछे।''

ओहिजे जंगला प चिकन जिल्दवाली डायरी धईल रहे। अनमाना खातिर हमनी के ऊ उठा ले लीं जा आ उलट-पुलट करे लगलीं जा। काल्ह के पन्ना में चाचा लिखले रहन, दस कोस से सईकिल चला के आइल रहीं आरे से एह से मिजाज थाकल रहे आ गतरे-गतरे, पोरे-पोर दरद करत रहे। अनगुतहीं अनमुनाहे में सइकिल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

निकाले के रहे त तीनिए बजे रात में जागे के परल रहे। राते, खा के, नयकी भीरी सुतलीं आ कहलीं, "तनी गोड़ दबाव ऽ।" फेर ना जनलीं कखनी नीन लागि गईल। घाम जंगलाँ में हे आईल त नीन टूटल। जम्हाई लेते उठलीं। आजु रात में खूब मन रहे। नयकी से कहलीं, "जल्दी सुते चलऽ । हमार कईसन तो मन भईल बा। काल्ह त सूतले रह गइलीं। हम एही से जल्दी खा लेलीं हँ। खटिया प चल तानीं, आवऽ। ऊ काहे कें जल्दी आवे जास। खा के आपन थरिया-कटोरा माँजे लगली।" हम कहलीं, "एकदम माँज के उनकरा के चमचमाइए का देबू ? तहरो कुछ बुझाय ना?" हमरा त एने उखी-बिखी लेले रहे कि जल्दी आवत काहे नइखीं।"

हाथ अंगोछा में पोंछे लगली त सोंचलीं कि अब तुरते आ जइहें। खटिया प ऊ आ गईली। सरिया के दूनों हाथे अंकवारी में ध के अपना ओरे खींचलीं त कहतारी "ई का करतानीं ?" हाथ से हमार हाथ छोड़ा देली। हम कहलीं, कि रहऽ आज कचकचावे द।" ओह मेंहे करवट फेर के छतीस हो गईली। हमरा से ना ठटाईल त कहलीं, "का कहतानी तहरा नईखे बुझात ?"

ऊ धीरे से मधिम आवाज में कहली "आज छुआईल बानीं !"

अतना सुनते हमार त मने भिरुख गईल। उनका से अलग हो गईलीं। बाकी कइसन तो मन करत रहे। एह से सोचे लगलीं कि का करीं ? एगो बात सूझल। कहलीं, तनी छतीस अस रहि के हमरा में सटऽ। "ऊ सट गइली। त कइसहूँ चूत से काम चला लेलीं।"

अतिना उनकर डायरी के बात सुना के लखपतिया चूप हो गईल। कुल जानी बतिआवे लगली जा कि ए लखपातो ऊ पाठक जी चूत का लिखले बाड़े। सभ जानी खूब हँसे लगली जा। ढेर देर ले हँसला के बाद चुप भइली जा त हमरा से पूछली जा, "किशुन इसकूल के बड़ा बाबू हवन, इहे बतइहें चूत के का माने ह ?"

हम कहलीं, "ए भाई, हम त कलर्क हईं आ पढ़ाइला ना, हिसाब लिखीला-पढ़ीला। एकर अरथ त लखपातों जानत होइहें। इनके इसकूल के बात ह। हमनी के का जानीं? हमरा इसकूल में त अइसन एको मास्टर नइखन। बाकीर हमरो इसकूल में एगो मिडिल के अइसने साइंस मास्टर बाड़े। अपना नाती के नाँव पछेयारा जिला के चनरपूरा हाई स्कूल के इन्टरेस में लिखवा अइलन ऽ। माहटर साहेब त अइसन एसकूल में नाँव नाती के लिखवा देलन जवना के ढेर माहटर सुकसुकाहे हवन। लइका गईल, त सुनर-सुभेख त रहले रहे। कुल्ह माहटर ओह लईका प खखुआ के चूँटा-माटा अस पड़ गईले। एकदमे हराहोर हो गईल। कुछ बाकी ना रहल।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

खेत-बधार रहले रहे। लता-कपड़ा खूब सहीनई से लईका पेन्हत रहे। बाबा साइंस माहटर रहन। का पूछे के रहे। रोज अगुआ आवे लगलन आ स्वागत होखे लागल। जल्दी-जल्दी बैसाख के लगन में बिआह बड़का नामी-गरामी अदिमी के बेटी से हो गईल। बिआहे कनेया अईली। बड़ी सामान मिलल। दीवान पलँग, सीसम-सगवान के फूल काढ़ल सोफा सेट, बाकस, गोदरेज के सीसा वाला अलमारी, ड्रेसिंग टेबुल, एगो सबुजा घोड़ा, बघछाला गाय, दुपहिया गाड़ी बहुत कुछ मिलल। गाँव में पहिले शायदे केहू के अतिना मिलल होई। कूँड़ा पीतर के मिलल रहे।

एहिजा कनेया के घर खूब सजावल गईल रहे। रात भईल त दुलहा मन्टु के ममी ईशारा कइली कि ओह घर में आजु सूते जा। ऊ गईलन आ केवारी सटा देलन। दीवान प जा के पर गइलन। कनेया खड़ा रही पयताना। सोचत रही कि बोलइहें चाहे हाथ ध के खींचीहें त जाइब। मन्टु परल रहन कुछुओ ना बोललन। झपकी आइल, बस नीन लागि गईल। अनगूते जगलन त देखलन कि कनेयाँ निरभेद सूतल बाड़ी। पलँग प से उतर के केवारी खोललन आ बहरी चलि गईलन।

एही तरी रोज होखे। केहू-केहू से बोले, ना कुछ करे। एक रात कनेया सोचली कि का बात बा ? बड़ी चिन्ता में रही। ऊ उन्हकरा के अपना ओर खींचलीं मन्टु कुछ ना बोलले। कनेया सब कोशिश कइली। मंटु के तनिको तनाव ना आईल। आ ना कवनो कोशिश अपना ओरी से कईलन। कनेया के बहुते कोशिश कईला प अन्त में कहले कि का करीं उठबे ना करे। कनेया दूसरा ओरे करवट फेर के पर गईली आ सोचे लगली, एगो अइसने कनेयाँ के चेष्टा पर चेष्टा के बादो सफलता ना मिलला के कवि के कविता गुनगुनाये लगली, –

"जाँघन जाँघ सटाय रही उर लाय रही सिगरी रतिया।

एतेहु पै समझयो न कछु रहो सोवत सीस धरे छतिया।।

फिर इहो रात बीत गईल ना भईल आ कुछ होखे के उमीदो-आसरा टूट गईल।

कनेया भाई बोला के नइहर चल गईली।"

पाँच महीना के बाद नाऊ दिन लेके गईल त कनेया के बाबूजी दिन गवना के धर देलन। जब गवना के दू दिन बाकी रहे त केनया आपन माई से कहली, "ममी, ई सब काहे के तइयारी होता ? हम ओहिजा ना जाईव।"

माई कहली, "कुलछनी, सैतान, का कहतारीस ? काहे ना जइबे, एही जे जिनिगी कटी ?"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ऊ कहली, "जिनिगी कहवाँ कटी, हम नईखीं जानत, बाकी ओहिजा जाईब ना। का करे जाइब, दुलहा के गोर चेहरा देख के उनकर खाली ओठ चाटब ऽ, ओठ चटला से पियास मेंट जाई ?"

माई ताजुब में पर के तनी नरम हो गईली। कहली, "मइयँवा, का बात बा, सोझ काहे नइँखीस कहत ?"

ऊ कहली नीचे मुँह क के, "उनकर तनिको एथी होइवे ना करे। सब क के हम हार गइलीं, बेजान बाड़न ऊ त मुरदा लेखा पर जालन।"

माई कहली, "तें ई बात पहिले काहे ना कहलिस, हम कुछ सोचतीं !"

दूनों जनी चुप हो गईली। केहू बोलत नइखे। तली कनेया के बाप बढ़ई से बगईचा में चइली फरवावत रहन, घरे पानी पीये के लेवे खातिर अँगना में आ गइलन। कहलन, "सुनतारू हो, बढ़ई के पानी पीये के रोटी-तरकारी द ऽ?"

ऊ कहली, "का पानी पिये के दीहीं, हमरा त तनिको बुझाते नइखे, हम का करीं? अइसन के फेर में हम ना परल रहीं, मन झवान हो गईल बा।"

इहे कहते रसोई घर में ढुकली। उनकर मरद के बुझाईल कि रोटिया बिलाई खा गईल जे अइसे दरद से बोलतारी। उहो रसोई घर में चल गईले। देखले कि थरिया में रोटी रख के तरकारी रख ऽ तारी । त कहले, "का बात बा, अनसातारू ?"

ऊ कुल्ही बात बतवली। सुन के उनकर मरद सन्न हो गईले। बोलले, "ई का कहतारू ? अइसन ना हो सके। लईका अंतिना सुनर - सुभेख बा, आ अईसन होई ?"

कनेया के माई कहली, "सुनर-सुभेख भाँड़ में जाय, सुनरे खाये के दी, ओकरे से हमार बेटी जीही ? हम ना भेजब राछस के घर में बेटी के, नाऊ भेज द आऊ कुल्ही बात के खबर दे द। हम बेटी के जिनिगी चुल्हा में ना झोंकब। हम तहरा से साफ-साफ कह दे तानीं। आजुए अदिमी भेज ऽ ना त परसों नतिया चल अइहें स। चल अइहें स त ओहनी के मुँह में आग लगाईब ?"

ओही दिन कनेयाँ के बाप अदिमी भेज के गवना रोक देलन। ऊ लोग बाद में जनले कि छव-सात महीना के बाद ओह कनेया के बिआह फेन से क के लईकी के बाप बेटी के यू. पी. भेज देलन।

मंटू के बाप जब सब बात जनलन त अपना जबरे कलकत्ता बेटा के लिअवले चल गईलन आ ओहिजे अपना कम्पनी के मनेजर के बेटी से शादी कर देलन। ऊ बंगालिन बड़ी चतुर आ लरिकाइंए से चलबिधर रहे, दू तीन गो ओकर बेटा बेटी हो गईली स। दूनों घर बस गईल।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ई सब बतकही होते – होते एसकुलवा में छुट्टी के टाइम नियरा गईल।

ललिता खड़ा हो गईली आ कहली, "किशुन एगो हईले हवन, के जाने कतिना कथा कहानी जानलन, हमनी के साँझ कदेलन।" किशुन कहलन, "हम कहियो तोहरा लोगन के बोलावे जाइला का ? अपनहीं आवलू जा।"

कुल्ह जानी खड़ा होके जल्दी –जल्दी परा गइली जा।

***

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

खण्ड - 7

राधा के चाचा के ससुरार हमरा गाँवे रहे। उनकर गाँव हमनी के गाँव से तनी दूर बा। उनकर चाचा के सार निसंतानी हवन बाबू ठाकुर सिंह, बाकी बड़ी रोबदार हवन। बराबर मोंछ चढ़वले रहेलन। ढेर लोग उनका से बोल ना सके। अलर-बलर बोलेवाला ना हवन, उन कर गाँव में साँचों के एगो रूतबा बा, शान-शौकत बा, औकाद बा। उनकर घर छोटहने क्वाटर अस बा, हर साल रंगाई-पुताई करावल जाला। दरवाजा भीरी आगे दूनों साइड में एक गो रूम बा, दूनों में लमहर जंगला ग्रिलदार लागल बा, खोल देला प खूब अंजोर हो जाला। बँवारा कमरा में राधा मामा कीहाँ लरिकाई, से रहली। मामा-मामी लोग उनका पोसले रहे। बड़ी दुलार में पोसाइल बाड़ी। सिंगार-पटार के सब चीज रखले बाड़ी। ड्रेसिंग टेबुल भीरी बइठ के नेल पालिस से नोंह रँगली। पेंसिल से आईब्रो करिया करली। ओठ में लिपिस्टिक ना लगावली, काहे कि ओठ त अपने लाल टेस बा। लिपिस्टिक त कबहुँ छुअबो ना करस। भिनसहरा जागली, काहे कि मामा पढ़े खातिर जगा देलन।

उनका ड्रेस के कमी नईखे। जवने समीज सलवार, चूस आ चाहे सूट बेंचावेआवेला, पसन हो जाई, मामा के कीने में इचिको देरी ना होई। मामी कहत रहिहें कि किन के का होई असमानी या नीला सालो पहिरली। अउर त कपड़ा एकर सरत रहेला। मामा कहेलन, "एकर मन राखे खातिर किनी ला। हमरा घर में एकरा कवनो दुख-अभाव ना बुझाए के चाहीं। एकर माई-बाप हमहीं न बानीं। आजु तक हमरा ना बुझाईल नूँ कि हमार बेटी ना ह। सोचिला कि एकरा कबहूँ मत बुझाय कि दोसरा घरे बीया।"

धनपतिया आ ललिता एहिजा अपना फूफा कीहाँ रह के पढ़ली जा। लखपातो आ मुन्नी त अपना ममहर में एही जा रहली जा। अईसन क गो रधिका के सखियारों बा कि हितअइए में आके पढ़ तारी जा।

अइसहीं राधा हित अइए सें बाड़ी। राधा के सखी लोग आपुस में कभी लड़ाई-झगड़ा आ रक-झक ना करे। बड़ी प्रेम से रहली जा। रोजो मलारे जरूर सभ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जानी आवली जा। आपुस में लोगनि के कथा-कहानी, चउल ठटा होत रहेला। राधा से रोजो मजाक लोग करेली कि का किशुन के पीछे-पीछे दौरत रहेली, आ खूब हँसली लोगिन। राधा कहली, "हम उनका पीछे ना चलिला, हमरा खातिर उहे बेचैन रहले। हमरा के नियरा से जानले आ एको छन अलगा ना रहल चाहले। हमरो नीमन लागले। हरमेसा उनका के देखते रहे के मन करेला। उनकरा बिना हमार कबहुँ मन ना लागे।"

ललिता कहली, "रतिया खा काहे अकेले रहलू? उनका बोला लेतू आ जवरे सेजिया प सूततू?

"हम त रोजो उनकरे जवरे सूतिला, उनकरे जवरे सूतिला, उनकरा बिना त हमरा नीने ना लागे" राधा कहली।

ललिता पूछली, "ऊ ई, बात कहियो कहबे ना करस। एकर चरचा त कहियो नइखन कइले?"

राधा जवाब देली, "हउका आवते बाड़न, हाथ कंगन के आरसी का। पूछि ल जा, हम कबहूँ तहरा लेगिन से झूठ ना बोलीं। अईसे त कुलीन परिवार के लईकिन के ई लछन मानल जाला- असत् प्रलापो हास्यं च....' किताब में पंडित जी नईखन पढ़वले?"

अतिने कहत रही त किशुन आ गइले। पूछले, "का मगन हो के बतिआवत बाड़ू जा?"

"लखपातो से राधा बाते-बाते में कहली ह कि किशनु रोज उनका जवरे राति खा सूतले, आ कहतारी कि ई कबहूँ झूठ ना बोलली। तूँ ही बतावऽ राधा के मामा-मामी अईसन कबहूँ होखे दी हें?"

किशुन मुसकुरा देलन, कुछ बोललन ना। लखपातो कहली, "त कहत काहे नईखऽ, साँच ह कि झूठ बात ह?" कुल जानी उनकरा ओर ताके लगली जा। रधियों उनकरे मुँह ताकत रहे।

किशुन मुसकुरा के कइलन, "राधा तनी मनी झूठ बोलतारी।"

राधा के मुँह आ दूनों चिकन गाल लाल हो गईल। कुछ बोलली ना।

किशुन मुँह खोललन, "हम रोजो ईनकरा जवरे राति खा ना सूतिला, ईहे हमरा जबरे सूतली।

कुल्ह जानी हँसे लगली, राधा के भी हँसी ना ठटाईल। हँसत-हँसत लोट-पोट हो गईली जा। खूब हँसली जा।

किशुन फेनु कहलन, "हम दोसरा ओरे मुँह कके सूतल रहीला त रोज ईहे हमरा के खींचि के अपना ओरे करली।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

राधा खिसिया के बोलली, "इहे, एकदम सफेद झूठ बोलतारऽ। तूँ त लरिकइएँ से झूठ के मोटरी हव लरिकइएँ से चोर हवऽ। साँच-साँच कहऽ कि लरिकाई में दोकान प से किताब चोरावत रहऽ कि ना?"

किशुन कहले, "तोहार का चोरवले बानीं, हमरा अस अदिमी के चोर कहतारू? तनी कहऽ त?"

राधा ओरे गते मुसका के कहलन, "तूँ त हमार करेजा चोरा ले ले बाड़ू?"

राधा कहली, "ईहो झूठे बोलऽ तारऽ। तूहीं हमार दिल चोरा लेले बाड़ऽ।"

किशुन उनका सखी लोगिन से पूछले "तूँ ही लोगिन अब फैसला कर। झूठ बोलतारी आ कि साँच। तूँ लोगिन त इनकरे नूँ सखी हउ जा। तूँ हीं लोगनी साँच-साँच कह द?"

कुल जानी एक-दोसरा प ताके लगली। सभे चुप हो गईल।

सखि लोगिन पूछल, "राधे, तोहार मामा-मामी ना जानेला लोग? ऊ लोग के कभी कुछ आवाज ना मिले?"

किशुन पट दे बोललन, "हमरा भीरी ई आवली, त ऊ लोग का जानी? ऊ लोग के कभी कुछ आवाज ना मिले?"

"ऊ लोग जानित तब नूँ? ई त एकदम सूतला रात खानि आवली।"

राधा अब अतिने कहली, "हम इनकरा से हरदम हार मान जाइला। अइसन बतफरोस से के मुँह चोंथउअल करो?"

फेर तुरते राधा गुनगुनईली-

"सुबह से शाम हो जाली' इनके गली में,

मुन्नी बदनाम हो गईली इनके गली में।"

कुल लोग किशुन ओर कनखी मार-मार के मुसकुरात रही।

किशुन मुसुका के बात फेर देलन।

कहे लगलन, काल्हु त गजब हो गईल। गोपाल के बहनोई हमरा एसकुल के चपरासी हवन। गोपाल के मेहरारू से हरमेसा हँसी मजाक करत रहन। बहनोई ननदोई कीहाँ अतिना हँसी करत रहन कि गाँव के नाँव करहँसी पड़ गईल। ई बात धीरे-धीरे गोपाल के बहुत बुरा लागत रहे। ऊ सह ना पवलन, उनका शक हो गईल। भीतरे-भीतरे उनकर करेजा लहके लागल, ऊ कहले अपना एंगो साथी से,

"अंबहीं ले हम काँप त बानीं,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आग लगा के तापऽ तानी "एगो कवि के कविता गावे लगलन आं राति सलफास खा लेलन। तब से लोग कहे लागल कि न हँसी फेन त उनका गाँव के नाँव नहँसी पड़ गईल। ढेर लोग ई कथा कहला।" सभ लोगिन हँसे लागल तुक प। राधा कहली, अइसन त ढेर गाँव के नाँव परल बा। कोइलर बोलत रहे त कोईल, कोइल बोलत रहे आ एगो दुलहा आ गईल त कोईलवर, एगो औरत के घूँघट एक जाना हटा देलन त पटखउली, प्रेमिका प्रियतम के छोड़ के नईहर चल गईली आ प्रियतम रोवते रह गईलन त पियरो, एगो लइकी के दोसर लईकी कहली कि छाती मलदऽत मलउर, धोबी गाँव में रहे लोग त धोबहाँ, गोरी करेली बजरिया आई हो दादा, त दुलहिन बाजार, बाबू साहेब के बीबी के घर ओहिजा बन गईल त गाँव के नाँव बीबी गंज, बेटा के बिना पइसा ले ले बिदाई क देलन त छौड़ादानो, हाथी प राजा जात रहन त कुकुर भूँकें लागल, गाँव हो गईल कुकुरभूँका, गरदन ध लेलक त धरकान्हा, चोर भागल जात रहे त एगो डाँड़े ध लेलन त घर डाँड़, ढेर लइकीन के शादी भईल रहे त सारा, गाँव के कुल लड़की सालो भर मेंहदी लगावत रही स त मेहंदिया, जाये के बेरी कहलन कि पहिले तूँ जा त पहलेजा, राम जी के खड़ाँव, छोटकी खड़ाँऊँ, बाबू के अलगे हबेली बनल त हबेलीपुर, केहूँ के पानी भरे के कुँड़ देलन त देकुँड़ा, बिना मेंह के दँवरी चलत रहे त अमेहता, सोना अस जादे दाम प अन्न बेंचात रहे त सोनबरिसा, केहू डाली में से कुल मुरही खा गईल त कुरमुरी, तालाब पानी से भर दिआइल त भड़सर, दिन भर विष्ठा धाँगे के पड़त रहे राही प त बिहिटा, लोग आजादी के लड़ाई में बलि देल बलिगाँव पोखरा धान से भर गईल त धान पोखर आ गाँव में खूब कोंहड़ा फरेला त कोंहड़ा नाँव धराईल।

किशुन कहलन काल्हू त हम एहिजा ना आ सकब काहे कि फजीरहीं रोहन भीरी पुछार करे जाए के बा उन कर माई मरल बाड़ी। "राधा कहली" त हमरे भीरी काल्हु आवऽ। हमार सखि लोगिन हमरे भीरी अइहें। तय भईल कि बारह बजे राधा घर सभे जुटी।

दोसरका दिन किशुन अईन समय प पहुँच गईलन। राधा के रूम के केवारी ओठंघावल रहे। केवारी किशुन खोललन त देखलन कि राधा माथा प बायाँ हाथ घ के एकदम सूत गईल बाड़ी। अबहीं अवरू केहू नइखे आईल। किशुन राधा के गोर गाल चूम लेलन। राधा ओइसहीं सूतले रहली, ऊ ना जनली कि का भईल ह? राधा के जगावे के रहे, एह से किशुन कईएक बे चूमा लेलन, तइयो राधा कुछ ना बोलली आ ना जनली। सूतले रहली, निपट निठुराई से सब देह जोर झकझोर देलन किशुन, तब चिहा के ऊ उठली आ कहली, "का भईल ह?"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तली कुल्ह सखी लोगिन आ गईली, एगो ललिता खाली ना अईली। राधा घरे गईली आ मामी से कुछ कहि के तुरते आँख मुँह धो के चल अईली। सब लोग राधा के पलंग पर बईठल। सतफूटा-छव फूटा पलंग रहे। किशुनो ओह प अँट सकत रहन, बाकी ऊ लोहा के कुर्सी प बईठलन।

राधा कहली, "तूँहू एही प बईठऽ ऊ गरम हो गईल होई। गरमी के दिन बा।" किशुन कहलन, "कवनो बात नईखे। हमरा गर्मी सहे के आ गरमी छोड़ावे के आदत बा। अबगे नू एगो आदिमी के गरमी छोड़वली हँ। हमरा ढेर जोर लगावे के ना परल ह तुरते जगा देलीं हँ।"

राधा मुसकुरा देली आ कहली कि "खा के अइलीं हँ, परलीं हँ त झपकी लागि गईल ह, तोहार आईल ना जनलीं हँ।"

किशुन कहलन कि ठीके बा हमरो नीन लागेला। राधा उनका प तकली। किशुन चुप हो गईलन।

धनपातो आ बन्टी कहली जा कि तोहरा लोगिन के बात हमनी के नइखे बुझात कि सूते जागे के का कहऽ तारऽ जा।

अतिने में राधा के मामी छोटकी पितरिया बाल्टी में मिश्राम्बु केसरिया बादाम दूध में बना के ले अईली। कुल लोग उठ के उनकरा के गोड़ छू के कहल, "गोड़ लगतानीं चाची।" ऊ आपन असीरबाद देली, "जीयऽ जा, जागऽजा।"

किशुन निहुर के, दूनों हाथ जोर के आ उनकर पैर छू के कहलन परनाम मामी।

मामी उनुको के ईहे कहली, "जियऽ, जागऽ बबुआ तूँ त कहियो ना आवऽ एहिजा के जाने काहे लजालऽ। हमार रधिया रोज तहरा बारे में कहली, किशुन बड़ी बढ़ियाँ से बतिआवले, कुछ पढ़ावत रहले, बातें-बात में अंगरेजिओ सिखावले।"

किशुन लजा गईलन आ कहलन "हम त क बेर आईला मामी। राधा ना कहत होइहें। एही जे से फेनुँ हम चल जाईला। आछा अब हम आईब त मामी के जरूर परनाम क के जाईब।"

मामी राधा के बाल्टी दे के चल गईली आ कहते गईली, रस पिय जा, आ घटी रधिया, त कहिहे, अउरी बना देब।

***

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

खण्ड - 8

राधा सीसा के बड़का गिलास में पहिले अपना सखी लोग के मिश्राम्बु देली तब अंत में किशुन के पिअवली रस बाँचल त फेनु, एक गिलास किशुन ओर बढ़वली। किशुन कहलन कि ना अब हम ना पिअब। राधा पूछली, "नीमन नईखे लागत?"

"ना, हई लोग ढरती जा आ अपना हाथे दिहती जा त माजा आ जाईत!" ओह लोगिन ओर कनखी मरलन। कुल्ही लोग मुसकुराये लागल आ एक बे सभजानी बोलली जा, "हमनियों के सभ जानऽ तानीं जा, बात नईखे बनावे के!"

हँस के कहलन किशुन, "हम तनिको बात नईखीं बनावत। हम झूठ के पंजरा ना जाईं, पूछ लऽ जा राधा से, का रधिया?"

राधा कहली, "हमरा के फुसिलावऽ मत, हम तहरा लोग के बीच में ना आईब। आपुसे में फरिआवऽ लोग।"

"आछा, बीच में ना परबु त जज बनि के तूहीं फैसला कर दऽ एह में त कवनो दिकत नइखे नूँ? साँच कहऽ?" किशुन समझवलन?

राधा झमक के गिलास उनका हाथ में धरा देली आ तनी जोर से बोलली, "ढेर चोन्हा मत करऽ, ई सभ लोग जानतारी जा, तूँ के हवऽ आ हम के हईं!" सभ लोग हँसे लागल।

किशुन गट-गट पी गईलन। फेर एगो अउरी गिलास में बाँचलका रसवा ढार के किशुन राधा के हाथ में धरा देलन आ मुसुका के राधा गिलास झट दे खाली क के रख देली।

कुल जानी कहली, "का माजरा बा, बुझाए से बाकी रहि गईल?"

किशुन बात बदल देलन आ पूछलन, "तहरा लोग के टोला में केकरा के वोट देवे के लोग सोचता? एह घरी त कुल्ही पाटी खूब परचार करऽ तारी सऽ, केहू माईक लगा के स्कूल प सभा करऽता, त कवनो पाटी के नेता घरे-घरे मेहरारून के भेज के आ परचार करावता। सोसलिस्ट पाटी के त मेहरारूए मालती पासवान खड़ा बाड़ी आ कईगो

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मेहरारून के साथे मुंशी जी उनुको के ले के घूमतारे जवना के बड़ी असर पड़ता। मुंशी जी एह ईलाका के सबसे बड़का नेता हवन। करीम मियाँ सरकार के सिंचाई मंत्री उनकर फास्ट फ्रेन्ड हवन। मुंशी जी के एक बे सीट पाटी से दिअवा देले रहन त मुंशी जी रोपेया के कमी से पूरा परचार ना कर सकलन आ हार गईलन।''

ललिता कहली, ''मुंशी जी से बढ़ियाँ के आदमी खड़ा रहे? सब के काम करे वाला, हर काम में पैरबी करे वाला, चीनी आ किरासन नईखे मिलत त खड़ा हो के बँटवावे वाला उनका लेखा के बा?''

धनपातो तेवर बदल के कहे लगली, ''मुंशी जी बढ़ियाँ आदिमी हवन, त एह घरी हँसुआ के बिआह में खुरपी के गीत गावला से का फायदा बा? आरे कहऽ जा कि हमरा नईखे बुझात कि तहरा लोग के?''

''ठीके कहतारू?'' किशुन कहलन।

ललिता कहली, ''एह घरी जवन जवन पाटी के नेता खड़ा बाड़न उनुके बात बतिआवऽ जा। फिजुल का मुँह दुखवावे के बा?''

''हमनी घरे त पासवाने के वोट देवे के लोग सोचता। ऊ मेहरारू हई, सभ के बात मनिहें आ उन्हुकरा से सभके हर मेसा भेंटो- मुलकात होई। बढ़ियाँ आदिमियो हई। सबके से हँस के ऊ बतिआवली। उन्हु करा लेखा दोसर के हू बढ़ियाँ आदिमी खड़ा नईखे। सभ के इजत-हाल में आ हर मोका प ऊ काम करे आ मदद करे में बेचैन हो जाली। जबे खोजीं, तइयार रहली। बीडियो आफिस में त रोजो जाली।''

अतिना बोल के ऊ चुप हो गइली आ किशुन के मुँह ताके लगली।

किशुन के बोले के पहिलहीं लखपातो कहली, ''हमनी के दुसाध टोली में त माले के लाल झंडा में वोट देवे के ढेर लोग बतिआवता। ओइसन इंसाफ अवली एको पाटी नइखे। बड़लोग केहू के दबावला आ चाहे मार-पीट कर देला त माले आपन झंडा उठा देला। बिडियो आफिस में धरना प लोग बईठ जाला। कवनो ना कवनो फैसला कराइके लोग दम लेला। क जगे त रात में सऊँसे गाँव के जुटा के लोग सभ के बात सुन के आ कुछ दण्ड लगा देला-सजाय ओहिजे लोग दे देला। गलती करे वाला लोग ओहिजे पिटा जाला। अइसन दोसर कवन पाटी बिया हो? तनी बतावऽ, जा तऽ।'' ऊ कहते-कहते गरमा गइली।

ललिता कहली, ''ऊ त मुंड़ कटवा पाटी ह। वर्मा जी के, के गोली मरले रहे, सँउसे गाँव जानता।''

''वर्मा जी पढ़ावते-पढ़ावते रमरतिया के फुसला लेलन आ ले के भागि गईलन। अइसन एह गाँव में आज ले के कइले रहे।''

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हम कहलीं कि जे जइसन करी ओइसन पाई। कहल जाला, "जैसा को तैसा।"

राधा बोलली, "जइसन करनी ओइसन भरनी।" सभे चुप लगा गईल।

बंटी कहली, "हमहुँ कुछ कहीं? कहतू जा त हमहूँ कुछ अपना ओर से कहितीं?"

सभे बोल पड़ल, "तूँ काहे ना कहबू, तूँ त अपना कलास में हरमेसा फस्टे करलू, तूँहूँ कह?"

बंटी बड़ घर के बेटी हई, उनकर बाप पलामू जिला के पांकी थाना में बी.डी.ओ हवन, उनकर कपड़ा-लता भी अउर लोगिन से भिन्न बा, चमकदार बा, आ लिपिस्टिको रोज लगावली, उनकर सभे बड़ाई करलाऽ बंटी कहली, हमनी कीहाँ सभे जनसंघ पाटी के वोट देवें के सोचता। एकर जोगीन्दर दास खड़ा बाड़े। ऊ मियाँ लोग से कहले कि कच्छ-मच्छ मत खा जा अंडा-मुर्गीसे सउँसे महल्ला-टोला महँकत रहेला, ओने जाये के मन ना करे। सबिसा खाँतून हमरा जवरे पढ़ली आ साफ-सुथरा रहली, सी. ओ. आफिस के किरानी उन कर अब्बा, हवन। उनकर घर त बढ़ियाँ बा। साफ-सफाई प लोग धेयान देला। हम त कबे उनका घरे गईल बानीं। बाकिर अउर मियाँ लोग उनकर कहना ना माने। उनका से त गाँव के सभ के राय रहला। हमार दूनों बाबा तजेया के दिन मियाँ लोग जवरे खूब गदका दउर-दउर के खेलला लोग। गाँव के ढेर हिन्दू लोग तजेया के दिन गदका खेलले। बाकी उ लोग प्रजा सोसलिस्ट पार्टी के जग राय के वोट दी ही। खातून कहत रही कि राय जी से बढ़ियाँ एको कन्डीडेट नईखन।

हमनी के टोला जन संघे के वोट दीही आ कुछ लोग सोसलिस्ट के। माले के हमनी टोला वोट ना दी। ऊ हिन्सा अवली पाटी ह।

किशुन तूँ कहऽ, कि "कवन पाटी आछा बिया?" बंटी पूछली।

किशुन कहे लगलन, सुनऽ जा। वोट बहुत कीमती चीज ह। वोट से केहू के एम. एल. ए., एम. पी. बनावल जाला। उहे एम.एल.ए. या एम. पी. मंत्री, मुख्य मंत्री या प्रधान मंत्री बनले। एह तरह से सरकार बनली आ राज के तथा देश के सभ काम होला। पहिले देश अंगरेजन के गुलाम रहे। अब देश आजाद हो गईल। एह से सगरे ओट पड़ला आ वोट से सरकार बनली आ देश के सभ काम-काज चलत रहेला।

एह वजह से हमनी के खूब सोच समझ के वोट देवे के चाहीं, आ जरूर वोट में शामिल होखे के चाहीं। वोट कबहूँ छोड़े के ना चाहीं।

वोट ओकरे के देवे के चाहीं जे नीमन आदमी होखे। जे सभके काम करे, सभके से राय लेके काम करे, जे जात-पात ना करे। धर्म के नाम प जे वोट ना माँगे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जे काम आ सिधान्त प वोट माँगे, जे खुद गलत काम ना करे। जे सभके के एक समान समझे, जे भेद-भाव ना करे, जेकरा से समय प भेंट हो सके आ जे सभके मदद करे। जे गरीब प धेयान रखे आ समय के अनुसार उचित कानून बनावे में मदद करे, कानून के अनुसार खुद चले- सभ काम करे।''

बन्ती पूछली, ''ई बतावऽ कि कवना पाटी के कैन्डीडेट के वोट देवे के चाहीं?''

राधा कहली, ''कवनो पाटी ठीक नइखे। सभ में खाउमल उमीदवार बाड़े। पारा-पारी सभके के हमनी के देख लेलीं जा। समाजवादी पाटी के नइखीं जा देखले। अबकी बेर ओकरे के वोट दिआय आ देखाय कि ई पाटी कइसन काम करऽ तिया।?

हम कहलीं, ''सुनऽ जा। ई ठीक कहऽ तारी, बाकी हम त आई. पी. एफ के रसीद कटवावत आवत बानीं। अब ओकरे के हम वोट देल चाहत बानीं। ऊ पाटी गलत करे वाला के सजाय देली। ई बात हम बहुत पसन करी ला। अइसे समाज बादी पाटी भी ठीके बिया। इहो जबून पाटी नईखे।

देखऽ जा हम त क गो एम. एल. ए. आ एम. पी के देखलीं। कुछ त अपने पेट भरेआ जात-पाँत में लागल रह गईले। एही से दोसर की बेर ऊ लोग जीत ना पवले। केहू में झगड़ा हो जाय त एम. एल. ए. आ एम. पी. के ओह में ना पड़े के चाहीं आ पैरवी केनहूँ से ना करे के चाहीं।

एगो एम. एल. ए. से हम कहलीं कि हमरो गाँव में पक्की सड़क बनवा दीं। ऊ कहले कि अब की बेर ना, अगली बेर में बनवा देव, बाकीर ऊ अगली बेर हार गइले।''

हम त अबहीं सोचऽ तानीं कि केकरा के वोट दिआय?''

कुल जानी एके बे बोलली, ''हमनियों के टोला में अबहीं तय नइखे भईल। टाइम आई त देखल जाई।''

हम कहलीं, ''हम त कहिए देले बानीं कि खोलऽ तानीं। एह से हमरा जवन मालूम बा खोलवे करब। हम सभके बारे में जवन मालूम बा खोलवे करब। हम सभके बारे में जवन जानऽ तानीं, खोलवे करब, हम बे खोलले ना मानब, सभ के कलई, खुल के रही। जे जवन कइले बा, के नइखे जानत? बाकीर सभे कही ना, हम त खोलब, हमरा केहू से डर नइखे। साँच के आँच का? हमर विचार तहरा लोगिन के कइसन लागऽ ता? हम जबुन कहऽ तानीं?

राधा कहली, ''तूँ जवन कहऽ तारऽ कि खोलब आ खोलऽ तानीं? एह से का फायदा बा? आपन काम छोड़ के केकरा अतिना फुरसत बा? तू अनेरिया बात करऽ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तारऽ। हम तहार एह बात के पसन नइखीं करत। केहू पूछी त कहब, अइसहीं बे फीस के के वकील बनी? तूँ खोलऽ तारऽ त जा खोलऽ जा। के रोकता? हमनी के त जे बढ़ियाँ बा ओकरा के वोट देब जा। तहरा जवन बुझाय तवन करऽ।"

हम कहलीं, "त हमरा से काहे पूछलू ह जा? पूछलू ह जा, त हम कहऽ तानीं। जे गलत कइले बा ओकर पोल खोलल त नीमन बा, जबून नइखे। एही से हम कही ला, कि खोलऽ तानीं। केहू कउँचे त हम का करीं?

लखपातो कहली, "तूँ जबून नईखऽ कहत, जे जवन कइले बा ऊ कहल त झूठ नइखे। साँच बात त कहहीं के चाहीं। हम त तहार समर्थन करत बानीं।"

बात आगे अउरी बढ़ित कि धनपातो आ राधा दूनों जानी कहली, "सभ बात आजे हो जाई, आरे काल्हो कुछ होई नूँ? फेर से सरबत एक बे अउर बनवावत बानीं, राधा घरे जाये लगली त सभ जानी रोक देली कि ना अब काल्ह बनी, अब आज हमनी के जात बानीं?

सभलोग उठ के जाये लगली। दोसरा दिन दुपहरिया में फेर सभ लोग जुटल। ओही घरी मड़ई राय आ गईलन आ बोललन जय रामजी भइया, गोड़ लागऽ तानीं।"

हम आशीरवाद देलीं, "जय हो भइया, जय हो! आवऽ बईठऽ।"

ऊ आके बइठलन एगो कुर्सी प आ पूछे लगलन, "का जमावड़ा बा किशुन भइया? एह घरी एसकूल नइखऽ का जात?"

"ना, मड़ई भइया, एह घरी गरमी के छुटी बा।" आच्छा मड़ई भइया, एह लोगिन से हम झूठ कहऽ तानीं कि बिना बिचारे कवनो काम ना करे के चाहीं? काहे कि कवि कहले बाड़े,

बिना बिचारे जे करे,

से पाँछे पछताय।"

"बात का ह? ई कहऽ?" भईया पूछलन। हम कहलीं, "वोट के टाईम आईल बा, गली में लोग अपना-अपना पाटी आ कन्डीडेट के परचार करत बा, नारा लगावत बा, चौराहा प लोग मिटिंग करऽ ता। का करे के चाहीं?

ऊ कहलन, "हम त लाखापुर के चौबइया के खड़ा कइल चाहतानीं। ऊहे धूर फेंकना हो, जवन अन्डर बियर लाल पहिर के उघारे-निघारे लंगट लेखा दउरल चलेला। अपना घरहूँ भावह- पतोह भीरी ओही ड्रेस में रहला। ओकरा लाज-शरम के कवनो काम नइखे। सभ पी गईल बा। हटर-हटर बोले लागऽ ता त बुझाता कि एकदम सनक गईल बा। लोग ओकरा के चिढ़ावे खातिर चौबे जी कहेला, आ ऊ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आपन चौबें नाँव सुन के फूलल चलेला। जानऽ ला कि साँचो के चौबे जी आ छबे जी हऽ। दू गो बाप-बेटा के, सिपहिया के मुआ देलक, दू जाना के निसतानी बना देलक। अब फेनु दू जाना के पीछा नईखे छोड़त। एक जाना त अतहत डील-डौल वाला बरेठा बाड़न उनकर पोछ छोड़ते नईखे। उनका के बबुर के लासा लगा देले बा, सगरो दिन-रात सटल चलऽ तारन। पूरा परिवार उनकर सभ उलटा-पुलटा काम करे से बेमार रहऽ ता आ ऊ भूत झरवावत तारन। दूर-दूर के दोसरा जिला के ओझा-गुनी बोला के ओझाई कराव तारन। चौबइए बहकवले बा, ओझाई में ऊ रोपेया सुखवावऽ तारन। हमरा से पहिले ओकर सिकाइत करत रहन आ अब चौबइयाके अंगुरी धईले चलऽ तारन। गीत गावलन चौबइया के,

"लिहले लाल लंगोटा लाठी,
कान्ह प मलि के चलले माटीं,
आजु ले ना केहु ओकरा से आँटल,
आ ना केहु कहियो आँटी।"

एगो अउरी सिंकिया पहलवान बाड़े। उनका के चौबइया गामा पहलवान कहि के पुकारेला। कहेला, "का हो गामा, काहाँ लुकाईल बाड़?"

जब-जब यानी सइयो बे उनका घर मेंहे जाई, आ उनका मेहरारू से सुना के चिचियाई, "गामा का करत बाडऽ हो? बोलत काहे नईखऽ?" बुझाता अब एहू दूनों जाना के घाट तक पहुँचा दी।

हमरा बुझाता, "कह-सुन के एही चौबइए के अबकी बेर खड़ा करा दीं जा, माजा आ जाई। उखड़-पुखड़ के ठीक हो जइहें। चौबे आ छबें बनल बुझा-जाई।"

"उन्हुका से ना केहु-आँटल बा, ना केहु आँटी, इहे उनकर नारा बनावल जाई। रिक्शा प अंडर बियर लाल पहिरा के उघारे-निघारे जवरे सिकिया पहलवान आ भूत झरवावे वाला सरेखा पहलवान के फोटो पीछे से टाँग दिआई। बस अबकी बे ओहनी के पोंछ उखाड़ हो जाई।"

सभ लोगिन हँसे लगली जा। खूब हँसली जा। हम कहलीं, "घर बनावे में कतिना लोग टूट जाला, चौबइया बा कि कतिना लोग के घर उजार देलक।"

एगो तिवारी जी कौलेज में पढ़ावल छोड़ के टिकट माँगे दिल्ली के काँगरेस ऑफिस में आपन मेहरारू के लिया के गइलन। उनकर मेहरारू बड़ी धनिक घर के बेटी हई। ऊ बाल के बाबकट कटवा के साथे ऑफिस में जात रही। कवनो असर ना परल आ उनका पतिदेव के टिकट ना मिलल। तिवारी जी काँगरेस प खूब

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

खिलाफ में सगरो लेकचर झारे लगले। बोलत-बोलत उनकर आवाज बन्द हो गईल आ अब साँय-साँय बोले लगले।

एक रात में हम सूत गईल रहीं। आधी रात में हमरा दरवाजा प कुछ आदिमी चिलाये लगले। हम जाग के आहे लगलीं, का बात ह। कहल लोग कि तिवारी जी वोट माँगे आइल बाड़े। हम सीढ़ी से नीचे उतरलीं आ केवाड़ खोललीं। दू गो बेन्च रहे ओही प कुछ आदिमी धका-धकी क के बइठलन। तिवारी जी हमार गोड़ ध के बइठ गइलन। कहे लगलन कि हमरा जीते के आशीरवाद दीं तबे उठब। हम बड़ी फेर में पड़लीं कि का करीं? बाद में हमरा अजीज होके कहे परल, "जय हो।"

तिवारी उठलन आ गोड़ छू के हाथ जोरले जीप प चढ़े गइलन।

दोसरा दिन छव-सात गो जीप ले के हमरा स्कूल प पहुँच गइलन? पचासों आदिमी मरद-मेहरारू देख के सभे चिहा गइल। चाय पिआवे में हमरा काफी प्रइसा लागल। ऊकहलन कि तनी लइकन से कह दीं वोट देवे के, बताईं, लइका वोट देले स?

एगो हाईस्कूल में हेडमास्टर रहन। एसकुल के जतिना पइसा आवे चेंटिया लेस। कैस बुक एको दिन उन कर ना लिखात रहे। फेर दू बरिस के बाद रिटायर हो गईलन आ निरदलीय खड़ा बाड़न। खादी के कुरता-धोती आ जैकेट पहिर के परचार करऽ तारन। हमरा प खिसिया गईलन। पूछलीं कि माहटर साहेब पिनसिनवाँ मिले लागल? हिसाब-किताब ना ठीक भईल रहे, एह से पिनसिन राउर ना नू भईल रहे?

हमार बात सुनते गरमा गईलन। खिसिया के कहलन कि तोहरा एह से कवन काम बा। हम वोट माँगे आईल बानीं त तूँ पिनसिन के बात करतारऽ। अजब अदिमी बाड़ऽ। किरानी गिरी करलऽ एसकुल में नूँ कि वोट में किरानी गिरी करबऽ। जा, आपन काम देखऽ।

हम कहलीं, "एगो कवि कहले बाड़े कि हमहुँ छिपावे के जनितीं त जग हमरा के साधु कहित। हम त साँच बात निठुराई से बिना लाग लपेट के कह दिहिला। रउरा खिसिया तानीं त ना कुछ कहब।"

ऊ कहलन, "अपने काम देखऽ। कहलीं नूँ?"

हम गली ध के घर ओरे चल देलीं, एगो मेहरारूओं एह साल एम.एल.ए. खातिर खड़ा बाड़ी। उनकर कहानी बा कि तीन गो आपन जनमावल बेटा आ आपन मरद छोड़ के दोसर मरद क लेली। उनकर खेयाल बा कि एम.एल.ए. हो गईला प पुलिस ओह केसवा में भरपूर मदत क़री आ केस जीते के उमेद रही। के ना बात मानी।

एगो गोआर जी खड़ा बाड़न जवन दूध में सियाही सोख ऊजर रोज अपना मेहरारू से पानी में पिसवा के, मिला के, गरम क देत रहन। एक दिन दरोगा जी से

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उनकर एकलाद के भाई, जवन अलगा बाड़न, तेल-निमक मिला के कह गईलन। अब जबानत प आईल बाड़न आ ऊहो उमीदबार हो गईलन। उनुको के त कुछ लोग ओट देबे नू करी?

हिंजड़न के ओर से रतजगिया हिंजड़ा खड़ा बिया। एक दर्जन हिंजड़ा चोली-साड़ी पहिर के सगरो गली-गली गीत गावते परचार करऽ तारी स। ओकरा कबूतर चिन्ह मिलल बा। कबूतर के सुन्दर चित्र वाला बड़हन कूट लेके ओहनी के परचार होता।

एकदिन चौबइया दू आदमी के लिया के आईल। हम पूछलीं, "ई लोग के ह?"

चौबइया कहलस, "ई लोग दूनों जाना भागल पुर से आईल बाड़न। जनसंघ के परचार करी लोग।" रात में खा लेल लोग त सूते के भईल। हम पूछलीं, "रउआ सभे के का परिचय ह?"

एक जाना मोट रहन आ एक जाना पातर आ चौदह-पनरह बरिस के रहन।

मोटकू कहलन, "हम चउधरी जी हईं आ हाई स्कूल भागलपुर के हेडमास्टर हईं। हमरा जवरे ई हमार नाता में भतीजा लागलन। जनसंघी हईं जा। परचार करे आइल बानीं जा। पक्का जनसंघी हईं जा। पटना से परचार के आवतानीं जा। अपना बेरादरी के गाँव समझ के अइलीं हँ जा। जनसंघ के वोट दीहीं जा। जनसंघे पाटी 'रामराज' ले आई। सुनले बानीं नूँ, "राम राज बैठे त्रयलोका,

हरषित भये गये सब सोका,"

तब हम कहलीं,

"रामराज काहुहि नहिं बेआपा।

रउआ ठीके कहतानीं। अब सूते के टाईम हो गईल बा सूतीं सभे। एगो चउकी हई बा आ भीतर से एगो खटिया बिछा देत बानीं।

मोटकू एजेड रहन, ऊ कहले, काहे के परेसान होखब, एके प काम चल जाई। चाचा-भतीजा हईं जा, कवनो बात नइखे। रउआ चिन्ता मत करीं। हमनी के त रोज बाहरे रहे के बा। बाहर में काम चलावे के आ कइसहूँ गुजारा करे के परेला। रउआ एगो चदर हमनी के दे दीं आ जाईं खाईं-पीहीं। चिन्ता मत करीं।"

हम कहलीं, "ई गाँव ह शहर ना ह। खटिया-मचिया खोजे के नइखे, काहे एके पातर चउकी प धका-धुकी करब सभे। रउरा दू मिनट बईठीं, हम एगो खटिया-बिछौना निकाल देत बानीं, कवनों दिकत नईखें।"

ऊ चउधरी जी आके हमार हाथ ध लेलन, "ओह, कहलीं नूँ कि मेहनत मत करीं। अनेरिया परेसान काहे होखब। हमनी के काम चल जाई। रउरा जाके खाईं।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एके प सूते के उनकर अतिना जोर लगावत देखि के हमार ओझा जी कहलन, "जाये दीं बड़ा बाबू सूते दीं। हमनियों के खाईं जा।"

खा-पी के हमनी के आपन-आपन बेड प जाके सूतलीं जा। ओझा जी मुसुका के अपना चउकी प गईले आ हम अपना चौकी प।

सबेरे चउधरी जी जब लैटिन गईले त ओझा जी पूछलन लइकवा से, "तू हूँ इनके गाँव के हवऽ? भतीजा लागलऽ चउधरी जी के?"

ऊ कहलन, "ना हम दोसरा गाँव के हईं। ई माहटर साहेब के एसकुल में एगों 'हिन्दी साहित्य परकाशन' के किताब के परचार करे गईल रहीं त ईहाँ के कहलीं कि का परचार करऽ तारऽ, हमरा जवरे जनसंघ के एक महीना परचार करे चलऽ, तोहार स्थाई नोकरी लगवा देब।"

हम कहलीं, "बिसवास बड़वऽ त घूमऽ। हो सकेला नोकरी लगवा दीहें। अब त इसकुलो सरकारी हो गइली स, सरकारे बहाली करेली, हेडमाहटर के कहाँ कवनो पावर-बा? हमहूँ बड़ा बाबू हईं, सभ जानऽ तानीं। अइसें तहरा के चकमा दे के अपना संगे राखऽ तारे त रहऽ।" एकरा बाद चउधरी जी मोटकू लोटा ले ले आ गईलन आ नल प लोटा मले लगले।

ओईसहीं चौबइया के हम का कहीं! कुपातर ह। जिनिका के धर ली, उनकर पोंछ उखाड़ क दी, जियता भर में फेन उनकर पाँख जामें लाएक ना रही। हमरा के पूरा चिन्ह गईल बा, हमरा से मुँह ना खोलेला बाकी भेंटाई त हमरा अँखिया प ताके लागेला। हम त ओकरा आँख के किरकिरी हो गईल बानीं। बोले लागला त कामा फुलिस्टाप के भुला जाला। हटरावे लागी त सुनेवाला के कान दुखवा दी। केहूके मुँह खोले के तनिको टाईमे ना लागे दी। कवनो बात आ विषय हो खो, ऊ सब के गेआन के पुलिन्दा ह। ओकरा बात के ओर पोर नइखें जिनकर साथ धरे ला उनका के बेदम क दी। अब भूतधरना के आ सिंकिया पहलवान के यानी दूनों जाना में जोंक अस सट गईल बा, बे जर उखड़ले ओह लोग के जान ना छोड़ी। ऊहो लोग आँख मून्द के ओकरा संगे लागल बा। ऊ केहू के अइसहीं सरिया के धरे ला आ हरमेसा खातिर लोगिन के माँजदेला, अंठई लेखा छोड़ ना सके।

राधा कहली, "चौबे अस हमरो गाँव में एगो जाली बतफरोस आदमी बाड़न। ऊ त भूतो झारलन आ अपने आन्हर हवन। नाम उनकर फतह बहादुर पाण्डेय ह। पाण्डेय जी दूर-दूर तक भूत झारे जालन। उनका डरे हमरा गाँव में कवनो आदिमी के भूत ना धरे। हमरा गाँव डिहरी सोन नदी से नियरे बा। लरिकइयें से हम नइखीं सुनले कि केहू के भूत धइले होखे। पाण्डेय जी से सभ भूत-पिशाच एकदम डरले।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बाकी पाण्डेय जी के बड़हन ओझा रहते हुए भी उनकर भारी दोष उनकर बतफरोसी बा। बोले लगिहें त चुपे ना होइहें। ओठ उनकर राते-दिने ना सटे। बोले में ओझाईए अस ऊ केहू से परास्त ना हो सकस। आन्हर हवन तबो ना मालूम कहाँ से अतिना सीखले बाड़े। कवनो इसकुलो में के पढ़ल ना हवन। भगवाने उनका के अतिना गेयान देले बाड़े आ ऊ केहू से बतियावे लागले। केहू के दरवाजा प हित-नाता के अइला प पहुँचजाले। बिना चाय पियले टस-से-मस ना हो सकस। हहरावत रहिहें। लोग उनका से बतिआवे में थक जाले। ऊ ना थाकस। ओट आवेला त हर पाटी से, कैन्डीडेट से बिना रूपेया लेले ऊ जान ना छोड़ऽले। कुछुओ ठग लेले आ मने-मन कहले भगला भूत के एकनी भला। ऊ त चौबे के भी काका हवन आ चौबे से नरम ना सरस हवन। जेकरा पीरी परलन उनका के लूट लेलन। एक बे सदनपुर के एगो बाबा जी कीहाँसे भूत भगावे गईल रहन। उनका अँगना में भंडार कोन में दू हाथ गुना दू हाथ कोड़वलन। एकरा बाद नास्ता करे, पानी पीये मजदूर बहरी गईलन स। अन्हरू पाण्डे जी कहलन, "हम काम खतम भईला प खाईला चाहे पानी पीहीला, बीच में ना।"

जब मजदूर पानी पीये बहरी गईलन त बगली में से एगो छोटहन हाड़ निकाल के गड़हा में गिरा देलन। मुनिया ओही घर के छव बरीस के लइकी रहे, ऊ हाड़ गिरावत देखले रहे। जब मजदूर फेन कोड़े अइलन स त कहलन कि हाड़ मिल गईल, अब काहे के कोड़ाई?

मुनिया कहलस, "अन्हरू बगली में से निकाल के गड़हा में गिरवलन ह।"

अब त भईल हल्ला। सभ मरद-मेहरारू अन्हरू के डाँटे-फटकारे लागल लोग। पाण्डे जोर से चिचिआए लगलन त अदिमी थपर-लपड़ से मारे लगलन। एह तरह से ओह दिन त पाण्डेय के कचूमर निकल गईल। कान ध के लोग उनकरा के गाँव से बाहर क अइलन, त ऊ नव दू अगारह भईलन।

एही बीच में एक दिन समाजवादी पाटी के मिटिंग गाँव में भईल। माइक प बड़का नेता लोग खूब गरऽ जल। बड़ी अदिमी जुटले। जखनी हेलीकोप्टर उतरल ओखनी लोग टूट परले।

दोसरा दिन माले के ओर से गाँव के हर गली में माले के लगभग सैकड़ों लइका-सेयान लाईन में लाग के रैली कइलन आ नारा लगवलन। बड़ी गहमा गहमी रहे। कुरमी टोली के गीता ढेर दिन प आज राधा से बतिआवे आईल रही। एहीजा के पाटी पौलिटिक्स के बात सुनली त कहे लगली, "आरे चौवइया से दहिने एगो मानधाता भगत हमरो टोला में बाड़े। उन का घरहीं पारा-पारी कुल जानी खेलावे लागेली आ जिला-जवार के भूत-पिचास दउरे लागेलसऽ। भगत नीम के पाता हाथ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

में ले के खूब झूम-झूम के खेलावले। उनका डरे कइसनों बरमपिचास नव दू एगारह हो के लमी ले लेले।

उहे भगत जी खूब बतकूचन करऽ ले। सबके से कहलन कि अबकी बे बच्चा बाबू जवन पुजारी जी कहाले उनके के खाड़ा कईल जाई। ऊ देवी जी के पुजारी हवन, बड़का भगत हवन। गाँव के केहू उनकर विरोध ना करी। ऊ त अपने लाउड स्पीकर हवन, अपने परचार क लीहें। भगतजी पूरा टोला से चन्दा उगहले आ पनरह हजार जमा हो गईल। एकरा बाद चुप हो गईले।

कुछ दिन के बाद पूछल लोग कि परचार काहे नईखीं करत भगत जी? त सभ के से कहत-चलत बाड़न, जहमत अवला जनसंघिया रोपाएवाँ ले लेलक आ सीटवो ना देलक। कहता कि भूत झारल आ खेलावल छोड़ के तोहरा पाटी-पौलिटिक्स करे के टाईम ना मिली। एही से हम बईठ गईलीं।

भगत जी, पर साल सूखा के टाईम में सभ के से खाता खेलवावे के पइसा लेले रहन आ केहू के खाता ना खुलल, पइसो ना मिलल। ऊ प्रान्तीय भ्रष्ट आ नामी जाली हवन।''

***

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

खण्ड - 9

परसों जईसन तय भईल रहे, मलार किनारे टीला भीरी ठीक टाईम प राधा आ गईल रही। ढेर देर ले तकली बाकिर अउर केहू नहिएँ जुटल। थोरे देर के बाद किशुन आवत लउकले। राधा उलुटा मुँह क के बईठ गईली।

किशुनु गुनगुनाते अईलन, "बूझत स्याम कवन तूहुँ गोरी?"

आ के पूछलन, "रधिका, राधे? कब अइलू ह?"

राधा ना बोलली,

फेर किशनु पूछले, "राधे नईखू सुनत, बहिर हउ का?"

तबो राधा ना उनका ओर तकली आ ना कुछ बोलली।

एकरा बाद

"निठुर ऊ नायक निपट निठुराई कइलन, कि झोंका के झड़ियन से सुनर सुकुमार-देह सऊँसे अंकवारी में कस के झकझोर देलन, मसल देलन पाकल सेव अईसन गोर गाल। चउँक पड़ली जुवती?"

"कब अईलऽ हऽ ? हम तनिको ना जनलीं हँऽ?

"आछा ना जनलू हऽ त अब जान गईलू नू?"

"हँ जनलीं, काहे टाईम प ना अइलऽ हऽ? हम तहरा से आज ना बोलब।" राधा कहली। किशनु कहलन, "बात कवनो जनलू ना, रूस गइलू।

किशुन कहलन, "रम भवना के माई कहलक सुनरी से, ओकरा घरे राते साँप निकलल रहे। ऊ देखलक त अपना मरद के जगा के बतवलक। मरदा ओकर दउर के दोसरा घरे गईल आ हाँफते लवटल त मउगी बोलल जोर से-तूँ मरद हवऽ कि ना? दउरल मरद के बोलावे गईलऽ ह। ऊ बेचारा लजा गईल।

अतिना बात सुनते सुनरी हल्ला बोल देली, कइसन मरद बा, मरद ह कि मेहरारू ह, मरद बोलावे जाता।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मुनरी जान भर सुनरी प चिल्लाइली, आ लड़े लगली दूनों जानी। झोंटा-झोंटी हो गईल आ खूब मारा-मारी भईल ह। सभे देखत रहे बाकिर केहू केनहूँ से कुछ बोलत ना रहे। दूनों जानी के मरदो जुट गईल लोग बांकी दूनों जने खड़ा रहन। सभे तमाशा देखत रहे। बड़ी देर तक उटल-पुलट के बाहाँ-बाँही, मारा-मारी लोगिन कईल। हमरा से ना ठटाईल ह त गते-गते गावे लगलीं भिखारी के गीत,

"रगर से झगर,

झगर से गारी,

तेकरा ऊपर मारामारी।"

उहे झगड़ा रूक गईल। सभे कहे लागल, जा लोग अपना-अपना घरे। रोज दिन-दिन भर राह चलत लोग से घेर के बतिआवलू जा आ आज आपुसे में झगर गईलू जा। अइसन ना करे के। आपन-आपन काम देखऽ जा। क गो गाँव के ई राह ह। जे देखी त का कही? बड़ी फूहर बात बा। हम ओहिजा से चल देलीं हँ। एही से देरी हो गइल ह।

राधा किशुन ओरे तिरछे तकली। किशनु कहलन, "एह जहरीला बान से त हमरा करेजा में घाव कुछ दिन में राम हो जाई बाकिर बात के घाव करेजा में लागी त ना राम होई। शकुन्तला दुष्यन्त से कहले रही कि 'न संरोहति वाक क्षतम्'।

कनछी से देख के राधा धीरे से फुसफुसऽइली, "हम बात ना कुछ बोललीं हँ त करेजा में कइसे चुभ गईल?

किशुन जवाब देलन, "नजरिए के जहर चभोरल बान लाग गईल। तिलमिला गईलीं। बुझाता पुरान देवाल अस भरभरा के चारों खाने चित हो जाईब। सम्हारऽ ना त हमार नाक-भूभूर टूटे चाहला। हमार घाव के दरद तोहरा ना नूँ बुझाई।"

राधा चुप रह के उनका ओर फेर तकली। किशनु कहलन, "आरे हाथ जोरऽ तानीं, तरकस बन करऽ।"

राधा हँसे लगली त किशनु फेन बोलऽ लन, "अबगे हरिअर मिजाज भईल, नातऽ जरे के ठेकान रहे।"

"चल जाईब हम! बात बनउअल हमरा ना सोहाला।"

किशनु उनका ओर प्रेम से देखलन आ बोलऽलन,"

आछा, एगो बात कहीं?

"का?"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

किशुन तनी नरम आवाज में कहलन, ''तहरा बिना, के जाने काहे, हमार तनिको मन ना लागे। जहिया तोहरा के ना देखीला, चाहे ना बतिआईला ओह दिन मन भीतर से कउआईल रहला। किछुओ नीमन ना लागे, कुछुओ खाये-पीए के इच्छा ना करे।''

राधा उनका प धेयान देके ताकत रही। दोसरा ओरे, फेर, मुँह फेर देली।

किशुन कहले, ''ओने काहे ताके लगलू? सुनल नइखू चाहत त ना बोलब।''

राधा उनका ओर ताक के आ रोवे लगली। लोर ढरके लागल। खूब रोवें लगली आ कहली, ''हम अपना गाँवें कबहूँ ना जाईब। हम दोसरा जगे जाईब त ना जीअब। केकरा से हम बतिआइब आ बोलब। साँच कहऽ तानीं, जहिया तोहरा के ना देखीला ओह दिन हम उपवास रहीला। कुछुओ ओह दिन खाईला ना। मामी पूछत रह जाली। हम कहीला, भूखे नईखे बुझात। तोहरा से दूर जाके हमार जिअल कठिन ना, असंभव हो जाई।'' मुँह फेर के फेर रोवे लगली। लोर बन होखे के नामे ना लेत रहे। ओढ़नी आधा भींज गईल पोंछत-पोंछत।

किशुन उनकर दूनों हाथ ध के अपना ओरे उनका के कईलन। आ कहलन, ''ई का कहतारू राधे, हम-नबोज बानीं जे बुझत नइखीं! हम त खुद तहरा बिना मर जाईब। तहरा कहला प हम जानब? ई कहे के जरूरत नईखे। हम जानऽ तानीं, तूँ हमरा बिना आ हम तहरा बिना, केहू ना रह सके।''

राधा फेन रोवे लगली त किशुन कहलन, ''तूँ हमरो के बे रोअवले ना छोड़बू?'' किशुन के भी रोआई छूट गईल, झरऽ झर लोर चूवे लागल।

राधा संभर गईली आ कहली, ''तूँ मरद होके काहे रोवे लगलऽ? चुप हो जा, तहार ई रोवाई हमरा से बरदास ना होई, करेजा फाट जाई।''

किशुन गमछा से मुँह आ आँख पोंछत रहन त राधा अपना ओढ़नी से बढ़ियाँ से उनकर आँख पोंछ के चुप करवली आ अपन हूँ चुप भईली। राधा के आँख लाल लागत रहे।

राधा आँख धोवे खातिर मलार ओर जाये लगली आ किशुन धोती बढ़ियाँ से पेन्हे लगलन तली ललिता आ गईली आ देख के मुस्काए लगली।

किशुन पूछलन, ''काहे मुसुका तारू?''

ऊ कहली, ''हम सब जान गइलीं।''

''का जान गइलू?''

ऊ कहली, ''हम सब जान गइलीं।''

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"का जान गइलू?"

"ऊहे जवन भईल हा।"

"ऊहे त पूछ तानीं, का भईल हा?"

ललिता कहली, "अऊरी कुछ बाकियों का रह गईल बा?"

किशुन कहलन कि लऽ खोलऽ तानीं। इहे कहि के आ धोती पहिरत रहन त खोले लगले। चुनिआवल धोती खुल गईल। अन्दर बियर के नीबी खोले लगले। कस के बन्हाइल रहे एह से खुले में देरी भईल। ललिता पीछे मेंहें मुँह क के भगली। तब किशुन फेन धोती पहिन लेलन आ राधा मुँह धोके आ गइली। ललितो जवरे अईली, आ के किशुन के सामने बईठली।

किशुन जवाब देलन, "हलुक अदिमी हलुके रहला आ ओइसहीं सोचऽ ला। ई हमनी के बारे में के जाने का सोच लेली ह? हमरा नईखें बुझात, ई अबहीं लईकी बाड़ी, अबहीं इन का में भारी लईकपन बा।

एहिजा चारू ओर लोग-बाग भरल बा, कतना लोग होने दिशा फिरे जात बा, हेने से सब राहगीर सड़क ओरे बस धरे जा तारे। हमार राधा ना मेहरारू हई आ ना हम राधा के मरद हईं। हम एसकूल में किरानी बानीं। हमरा एही दुनियादारी में रहे के रहित त हमहूँ बिआह आज ले ना कईले रहतीं? एक-से-एक अगुआ अईलन आ हम केहू के आपन नाँव तक ना बतवलीं। हमार बिआह ना भईल रहित? हम आन्हर-लंगड़ बानीं कि बउराह अनपढ़ बानीं?"

"आच्छा तूँ ही ललिता धरम भर कहऽ, तोहरा जवरे हम बहुत रहल बानीं, तोहरा से कवनो हरकत, छेड़-छाड़ आ चाहे कुछुओ तोहरा जवरे हम कईले बानीं? तूँ कईसे अइसन बात हमनी के बारे में सोच लेलू ह? हमनी के लूचा-लफंगा हईं जा, ईहे तोहरा आज ले समझ आईल बा? अगर अईसने समझऽ तारू त हमरा तहरा से कुछ नईखे कहे के।"

ललिता लजा गईली आ कहली, "तहार देह ध के कहऽ तानीं, जवन कहऽ ऊ किरिया खा तानीं, हम मजाक कईलीं हँ। तूँ खिसिया गईलऽ"

किशुन गंभीर होके कहलन, "अईसन मजाक ना कईलजाला। ई बहुत जबून बात बा।"

ललिता कहली, "हाथ जोरऽ तानीं, माफ क दऽ।"

राधा ललिता के अंकवारी में बान्ह लेली आ कहली, "हम माफ क देलीं। जानऽ तारू, हमहीं कहलीं हँ, तोहरा से दूर जा के हम जी ना सकीं, आ हमरा रोवाई

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

छूट गईल ह। उहे आँख धोवे मलारी में गइलीं हँ। देखऽ ललिता, हमार कुल्ही सखि लोगिन जानऽ तारी जा, हम बियाह ना करब। हम क बे अपना बाबू जी से कह चुकल बानीं। ऊ हमार मन के बात जानऽ तारे। एही से ऊ अब कतहूँ लईका देखे नईखन जात। हमार माई रहती त हमार मन के बात जानि के सबके से समझा देती। हम समाज के काम में आपन जिनिगी लगाईब। किशुन से एहीजा अइसन संबंध बा कि बिआह ना हो सके। बाकी किशुन के हम कबहूँ जियता जिनिगी भुला नइखीं सकत। किशुन से हमार मन छिपल नइखे। सभ बात ई जानत बाड़े।

ललिता, तहरा से जेयादा प्यारी सखि हमार केहू नईखे। हम इहे चाहऽ तानीं कि किशुन आपन एगो निमन-चुमन लइकी से बिआह क के आपन घर बसावस। उमिर बीतल जाता आ इनका कवनो बात के कमी नइखे।"

किशुन कुछ सोच के कहे लगलन, "बिआह त हमरो नईखे करे के, तू लोगिन खूब बढ़ियाँ से ई बात जानऽ तारू जा। हमरा ढेर समझावे के नईखे। हमार सोच कुछ अलग बा। हमरा बिआह करे के रहित त अब ले हम बाँड़ रहितीं। हमरा बारे में तूँ लोगिन काहे के चरचा करतारू जा। हम त बहुत पहिले ई बात सोच लिहले बानीं। हमरा अब सोचे के नईखे आ ना एह बारे में तोहरा लोगिन से कुछ राय लेवे के बा। हमार बात छोड़ि द जा।"

"हमरा बिआह करे के रहित त अबले बाल-बच्चा भईल रहित। हम बाल-बच्चा आ मेहरारू में नईखीं। हमार सोच दूसर बा। देश-दुनिया में बाल-बच्चा के कमी नईखे। हमरा में भाव-विचार बा त सभ बाल-बच्चा आ लोग से हमार आपन एक अस सम्बन्ध बा। केहू से हमरा एक तरह के बरताव करे के बा, आ एक तरह के बरताव करी ला। बराबर धेयान रहला कि सभे आपन ह। दू भाव ले के नईखे जीये के। हमनी के विवेकानन्द जी के नाम सुनले बानीं जा, बर्नाड शा बिआह कइले रहन?

हमार सोच इहे बा। सभ के साथ प्रेम से रहीं। विनोबा भावे के कहला के अनुसार अपने जीहीं आ दोसरो के जिये दीं। अपना जिये खातिर दोसरा कवनो प्रानी के दुःख में मत डालीं, दुःख में केहू के डाले के कवनो कोशिश मत करीं। अगर अइसन गलती हो जाय त अपसोस करीं आ आगे गलती से एकदम बचीं। ई विचार आ चाल हो जाई त सही सुख के अभाव ना होई।"

राधा कहली, "तनी हमरा बात प सोचऽ। हमहूँ बिआह ना करब आ तूहूँ बिआह ना करबऽ त ई बात बड़ी जोर से बसन्तपुर में हरा होर होई आ सभे सोची कि दूनों जने आपुस में कुछ सोचिए के ई कहऽ तारे। लोग कही कि जरूर एह में कवनो बात बा। हमनी के दूनों आदिमी रोज जवरे रही ला जा, बोली ला जा,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बतिआई लाजा, एक–दूसरा कीहाँ आईला–जाईला जा। लोग कही कि एह में कवनो भेद बा। एह से हम तहरा से विनय करत बानीं, आ तोंहरा भलाई, के बात कहतानीं, तूँ बिआह कऽलऽ। हमार आपन विचार त इहे बा।''

ललिता दूनों जने के बात सुनत रही खूब धेयान से, कुछ बोलत ना रही। चुपचाप दूनों जना के मुँह ओर ताकत रही आ सुनत रही।

राधा फेर कहली, ''किशुन, हम हर तरह से सोच–विचार के कहऽ तानीं, तूँ बिआह करऽ। तूँ हूँ बिआह ना करबऽ त गाँव में एगो लीला हो जाई, हमनी के दूनों आदिमी के नाँव एक साथे जोड़ के लोग कथा–कहानी कहिहें जवन हमनी खातिर अच्छा ना होई, एह से बड़ी शिकाइत होई।''

किशुन कहलन, ''सुनऽ, हम त ई बात बहुत दिन से कहऽ तानीं, इ कवनो नया नईखे आ सभे जानता कि हमरा बिआह नईखे करे के। हम नया नईखीं कहत। हमरा आपन अलगे दुनिया बसावे आ परिवार बसावे के नईखे। एह काम में हमरा कवनो रूचि नईखे। तोहार बात हम नईखीं मानत, इहो बात नईखे। हम हर तरह से सोच लेले बानीं। नया कुछुओ सोचे के नईखे। हमरा कवनो हठ आ चाहे जिद नईखे। हमार इहे सिधान्त बा। तूँ बिआह से काहे भागऽ तारू, ई हमरा नईखे बुझात। तोहार का विचार बा, का सिधान्त बा? तोहार मामा–मामी तोहरा एह विचार से बहुत दुख आ चिन्ता में पड़ीहें। ऊ लोग तोहरा के अतिना दुलार से पोसले बा कि ई बात ओह लोग से ना सहाई। तोहरा ई बढ़ियाँ से सोचे के चाहीं। निमन–जबुन सभ बात के धेयान में रख के तूँ सोचऽ। हम त पहिले से ई परतिग्या कइले बानीं, केहू से ई छिपल नईखें। तोहार ई बात जब लोग जानीं त जरूर सभ लोग के अचरज होई। एकदम ई तय बात बा कि लोग एह बारे में अपना–अपना ढंग से नमक–तेल लगा के बतिआई आ क तरह के शोर–शराबा होई। ठीक से राधा तूँ सोच ल। बिआह ना कईल आ जिनिगी भर कुँवारे रहल लइखेल ना ह। जिनिगी में क तरह के कठिनाई आई।''

राधा कुछ देर चुप रहली। फेर गंभीर हो के बोलली, ''हम अब लईकी आ अबोध नईखीं। खूब सोच लेले बानीं। एक–दू दिन में ना, कई दिन से हम सोचत रहीं, अपना मन में खूब तर्क–बितर्क कर चुकल बानीं, निमन–जबुन सभ सोच लेले बानीं। हमरा अब सोचे के नईखे। हमरा बिआह नईखे करे के।''

दूनों जना चुप हो गईले। केहू कुछ ना कहल। ललिता तब बोलली आ आपन विचार बतावे लगली, ''हम त तोहरा दूनों जने के एह बात के समझते नईखीं कि कवना कारण से दूनों जना बिआह ना करब। दू अदिमी बिआह ना करी त देश में चाहे दुनिया में का अन्तर आई। एह कोशिश से देश में आ समाज में का बदलाव

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

होई, नईखे बुझात। ई सुन के लोग त चरचा करबे करी कि एकर का मतलब बा? राधा आ किशनु में अतिना घनाह बा, एक दाँत के रोटी लोग खात बा, रोजे जवरे रहना बा आ दूनों जने बिआह ना करिहें। खूब अचरज गाँव में फैली आ तिल के ताड़ भी होई। तोहनी लोग भलहीं अपने-अपने अलगे ई बिचार कईले बाड़ऽ बाकिर सभे सोची कि दूनों जने मिल के जवरे ई नया मसाला लोग गाँव में देले बा। अलगे-अलगे के निरनय ह केहू ना पतिआई। सभे चरचा त करबे करी आ इहो कही कि देखऽ आगे का होला। समय बताई कि परिनाम कहाँ जाई। हमरा नइखे बुझात कि हम तोहरा लोग से का कहीं। हमहूँ बड़ी अचरज में बानीं।

किशुन बात साफ क के कहलन, "हमनी के दूनों अदिमी के अविवाहित रहे के निरनय से सभके अचरज त होइबे करी आ आखिर का बात बा? हमनी के अचरज के बारे में का कर सकीला जा? राधा अपना बारे में सोच लेस, हमरा त कुछुओ अब नईखे सोचे के।"

राधा भी लोहा अस कड़ा होके कहली, "हमरोअब दोसर कुछुओ नईखे सोचे के। हमहूँ टेकुआ अस सोझ बानीं, हमरा बिआह नईखे करे के। हम कवनो भरम में नईखीं।"

किशुन विचार करे लगलन। कुछ सोच के दूनों जानीं ओर तकलन। फेर बोललन, "देखऽ जा, देश के आबादी बड़ी तेजी सेआगे भागल जा रहल बा, हमनी के संख्या अरबों हो जाई। तब सोचऽ, कईसे सब के भोजन चली, अन्न ना जुटी। रोजे कतिना लोग के चूल्हा ना जली, बरतन ना मंजइहन स। कतिना दिन उपवास चली? एगो गीत लईका गावऽ लेस-

बूढ़ी कइसे रहबू उपास हो,

एकें दिन में टंग जाई साँस हो....।

बतावऽ कईसे देश चली? अच्छा त इहे होई कि बहुत लोग हमनी लेखा अविवाहित आ ब्रह्मचारी रहित। देश के सुखी बनावे खातिर एगो राह निकसित आ लोग-बाग एहसे फायदा उठइतन।"

ललिता आपन विचार कहली, तूँ त उहे कहऽ तारऽ कि सभ लोगे साधु बन जाय। साधु आ सधुआईन चुपचाप खाली भोजन करिहें। अन्न उपजाई से ओह लोग के कवनो मतलब ना रही। बिना अन्न उपजवले समाज एको महीना ना चली। ओही तरी कल-कारखाना, रेल गाड़ी, पानी जहाज, हवाई जहाज, बस, कार चलावे वाला चाहीं नूँ। साधु बनला से काम ना चली।"

किशुन जवाब देलन, "हमार बात प तूँ धेयान ना देलू ह। हम कहतानीं कि सभ के बियाह जरूरी नईखे। कुछ परतिसत लोग बियाह ना करी त संख्या घटी। हम ईहो

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कहतानी कि अविवाहित रह के देश के काम लोग करत रही जइसे विवाहित लोग करऽ ता।''

ललिता आगे कहे लगली, ''हमार बात सुनऽ। जतिना लोग अविवाहित रह जाई ओह में ढेरलोग जवाबदेही से भागे लागी। उत्साह खतम होखे लागी, काम करे में दिलचस्पी कम हो जाई, लापरवाही आ काम ना करे के भावना बढ़े लागी। जनसंख्या मत बढ़े, एकरा खातिर बड़े-बड़े लोग ढेर उपाय आ राह खोजले बा आ खोजता। हमरा समझ से किशुन जी तहार ई विचार जनसंख्या रोके खातिर सतही सोच बा। एह में कवनो भारीपन नईखे। केहू के भूख-पियास लागी त कब तक ऊ जीव-जाँती आ लंगोटा कसले रही। हमएक अदिमी के बात नईखीं करत। हम त जेनरल बात कहऽ तानीं। किशुन जी,रउरा हमार बात प खूब सोचीं। काहे कि बिना बिचारे जो करे सो पांछे पछताय। जिनिगी भर लंगोटा कसले ना रही, कभी ढीला होई त समसेया पैदा होई आ दुराचार बढ़ जाई। किरिया खाईल भुला जाई। बीसों कुराह के जनम होखे लागी, पूरा समाज के अस्तर प का परिनाम आ नतीजा होई, ई गहराई में भीतरे जाके सोचल जाय। तह तक बे पहुँचले आ बे खोजले मोती मिले के कम संभावना रही। तीथा पऽ त आंकड़ो ना भेंटाई।''

राधा बहस में रस ना लेत रही। एह से ऊ बात के राह बदले खातिर बोलली, ''एह प जादे बहस का करे के बा?हम त अपना मामी-मामा से सब कह देले बानीं। बाबू जी के भी एकर संकेत मिल चुकल बा। हम कई एक महीना से एह बारे में सोचत रहीं। बाबू जी क जगे दू बरिस से दउरत-दउरत जूता के एँड़ी खियवा देलन। जवन लईका चूहू-चूहू करिया बा पाकल जामुन अस,ओकरो बाप हेमा खोजऽ तारे। जवन लईका चार फूट ऊँचा बा ओकर बाप सींढ़ी अस लईकी के फोटो माँगऽ तारे। जवन लईका पढ़े में थोबर ना, पूरा गोबर बा ऊ फस्ट डिविजन के लईकी से वियाह करे खातिर ओठ में तेल लगावत रहता।''

हमार बाबू जी लईका देख के कहीं से आवले त आ के खटिया प बे गोड़-हाथ धोवले मुरदा अस पर जाले। जवन पोलियो मारल लईका बा ओकरो बाप, लाख-दू लाख के बात सुन के कहऽ तारे कि हमरा एह साल नईखे करे के। जेकर लईका नोकरी में बा ऊ त तीसरा आसमान प ताकत बा, छव लाख सात लाख से नीचे नईखे सुने प तईयार। एगो इनकम टैक्स में नोकरी करऽ ता, ओकर बाप बतीस लाख के साथ चर पहिया गांड़ी के परसताव देले बाड़न।

बियाह हो जाई त दुलहा भलेहीं, डँड़टूट होइहें, सभ अच्छर ना इयाद होई बाकी सुहागे रात से गाड़ी आ वासिंग मशीन खातिर मुँह लटकावे लगिहें। उनका के मनावे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

में छवो मान के उपचार फेल हो जाई आ सुहाग रात के अईसहीं बिहान हो जाई। ओकर शायद जिनिगी भर कसक मिटवलो प ना मेटी। टीस खीस पैदा करे लागी, जिनिगी कोरहाग से नरक बन जाई। बियाह त लईकिन के जान के जंजाल हो जाता।''

किशुन राधा के बात सुन के एकदम मौन हो गईलन। ललिता कहली, ''किशुन, तूँ चुप काहे हो गईलऽ?''

किशुन राधा प धेयान से ताक के कहे लगऽलन, ''ई जवन आपन बात कहली ह, ओह प हम कुछ नईखीं कहल चाहत। हम कहतानीं आपन दिल के बात कि राधा के बियाह हो जाई आ ससुरा चल जइहें, आ चाहे कवनो कारन से नईहर चल जईहें त हम साँचो असहाय आ बेजान हो जाइब जियते मुरदा हो जाईब। अपना मामा-मामी कीहाँ बाड़ी त बतिया के, इनकर बात सुन के लाल ओठ देख के हम हरिअर रहीला, एकदम मन भरल रहला, मिजाज चुस्त-दुरूस्त रहला, बेखइलहूँ अघाईल रहीला। बुझाला कि दिन रात इनके में समाईल रहीला। इनका अभाव में हमरा करेजा में कारिख लागि जाई। हम जानत बानीं हम कतहीं के ना रहब ई सब के बाद भी हम इनका से इहे कहब कि हमार बात मान के, जहाँ इनकर बाबू जी बियाह क देस, ओहिजा बियाह क के ई चल जास, हम अपना मन के, जियरा के जरे से बचावे खातिर जी तोड़ मेहनत करब। हमरा खातिर ई आपन जिनिगी जियान मत करस।''

इनकर मामा-मामी चचेरा मामा-मामी लोग ह। ऊ लोग अपना लईकी अस इनका के मानऽ ला आ दुलार-पेयार करेला। बाकिर दूनों जने बुढ़ाईल बाड़े, पाकल आम कब टपक जाई केहू नइखे जानत। अविवाहित रहिहें त एक दिन त राधा के नईहर जाहीं के पड़ी। एही से हम सलाह दे तानीं, इनकर भलाई चाहऽ तानीं कि ई बिआह क लेस, औरत बे बियाह के एह समाज में भारी मुसीबत में पड़ जाई। एक तऽसमाज में लाँछना से बचल संभव ना होई आ दूसर बात बा कि औरत अबला कहाली। समाज के उनचास तरह के आँधी सहे में लोहा के चना चबावे के परी, जवना के कवनो ओर-छोर नईखे।

रूपसपुर के रतिनाथ के बहिन के बारे में के नईखे जानत। बढ़प रजवार जवरे सिनहा मेला जात रही, जहवाँ जग होखे, ओहिजा उनका जंवरे जात रही। उनका जवरे हरदम सटल रहत रही। उनकर बाप कोढ़िया के मर गईले आ गाय-बैल बेंचा गईल त अकेली पड़ गईली। पचास तरह के कथा-कहानी चले लागल। बढुप नोकरी खातिर गुजरात चल गइले। अइसन भईल कि ऊ कतहीं के ना रहली। लाचार हो के एगो उमरदार साधु से बियाह क के घर बसावे परल। उनकर जिनिगी में जहर घोरा गईल, ऊ जिय तारी त का जियतारी!''

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

"मरद के बात दोसर बा, मेहरारू के बात दोसर बा। अलग-अलग समसेया बा। खास कर राधा तोहरा के कहतानीं। मामा-मामी थाकल जात बाड़े। ओह लोगिन के उमर बहुत भईल। हम बेवहारिक बात कहतानीं। तूँ जब सेयान होइबू त ऊ लोगिन दुनिया छोड़ दीहें। अंत में तोहरा नइहर जाये के परी। ओंहिजा तोहर माई अब नईखी। एही से तोहरा एहिजा आवे के परल। तोहार बाबू जी भी बुढ़ा चलले। कतिना दिन तहरा खातिर जीयत रहीहें। उनुको उमिर देखते बाड़ू!"

"हम ई सब बात एक त एह से कहतानीं कि तहरा से अपना के हम अलग ना जानीं। हमनी के एक प्रान दू देह बानीं जा। तूँ अगर दुख में पड़बू त हमहूँ सुखी ना रह सकीं।"

दूसर कारन ई बा कि पंडित लोग कहले बा, 'अग्र सोची सदा सुखी।'

"एह से चतुर आदिमी आगे के बारे में सोच-विचार क के कवनो काम करेला। एह ढंग से काम कईला से सुख के संभावना रहेला। तू अकेली पड़ जइबू एक दिन अईसन होई। खूब सोच के, हर तरह के नीमन-जबुन बात के धेयान रख के योजना बना के जे चलेला ऊ कबहूँ दुख में ना पड़े। सोच समझ के आदिमी के काम पूरा मन से करे के चाहीं। परिनाम भगवान के हाथ बा। लोग कहेला, 'बिना विचारे जे करे से पांछे पछताय।"

ललिता राधा ओरे ताके लगली आ कहली, "किशुन कुछ गलत नईखन कहत। तोहरे खातिर कहऽ तारे। हमनी से उमिर में भी बड़ बाड़न आ जादे पढ़लो बाड़े। इनकर कवनो बात काटे लायक नईखे। खूब सोच लऽ राधा। ई बहुत गंभीर बात बा। गहिरा जाके सोच लेवे के जरूरत बा। जिनगी के सवाल बा। एकरा प सोचे के परी, हँसी में उड़ावे के बात नईखे।"

राधा जवाब देली, "हम हर बात प सोच लेले बानीं। हम बी.एस.सी. में नाम लिखावे के सोचऽ तानीं। कवनो बी.एस.सी के कोचिंग त बसंतपुर में नईखे चलत, इहे कठिनाई बा। फिर भी हम अपनहूँ तइसारी करब त फस्ट डिविजन त आईए जाई, हमरा अपना प पूरा बिसवास बा। कभी-कभी किशुन से मदद लेब आ सभ पेपर के कोश्चन-ऐन्सर तईयार क लेब। हम एम-एस-सी तक पढ़ के ट्रेनिंग करब आ एसकुल में रहे के सोचतानीं, इहे हमार जोजना बा। हम जानऽ तानीं कि जे दुनिया में आईल बा ऊ एक दिन जाई। मामा-मामी आ बाबूजी के बारे में हम सोच लेले बानीं। भविष केहू नईखे जानत, बाकी हम पढ़ के पढ़ावे के सोचले बानीं। जिनिगी में जवन समसेया आई हम सामना करब। कठिनाई के डर से जिनिगी से भागल कमजोरी होई। हम हर मिहनत करीला, आ आगे करब। रहन-सहन के तरीका हमार

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सरल बा आ साधारन ढंग से रह के हम आपन पढ़ाई से जी ना चोराइब। हम जानऽ तानीं, हमरा कुछ करे के बा। बिआह क के हम आपन जिनिगी सांसत में ना डालब। बिआह के बाद ढेर लोगिन के देखऽ तानीं, लइकिन के कवनो आगे के चाहें एगो-दूगो लइकिन के बात हम नइखीं करत, हम जेनरल बात करऽ तानीं। ढेर लईकी खाना बनावे आ बाल-बच्चा पयदा करे के मशीन बन जातारी। हमरा सब लउकऽ ता। हमरा ओईसन मशीन बन के जिनिगी जियान नईखे करे के। शिक्षक खाली हमार मंजिल नईखे। हमार जोजना सही ढंग से चलत रही त आगे हमरा खोज करे के बा, रिसर्च करे के बा आ लिखे-पढ़े के बा। चूल्हा-चाकी तक जिनिगी के खूँटा नईखे गाड़े के। पढ़े के बा, बढ़े के बा।''

बईठकी बहुत देर से चलत रहे। एह से किशुन उठ गइले आ जम्हाई ले के कहलन कि अब चलीं जा। ''राधा के सोच बहुत ऊँचा बा। इनका अतिना नियरा रहते भी आज के पहिले हम इनका एह विचार से परिचित ना रहीं। इनकर आज के कुल बात सुन के हमार जियरा जुड़ा गईल। हम इनका अउर नियरा हो गईलीं। सँचहूँ कहऽ तानीं, हम इनका अतिना गहिरा कहियो ना गईल रहीं। आज से ई हमरा दिल में बहुत ऊँची हो गईली। साधारन लईकी अतिना ऊँचा प चढ़े के सपना ना देखे।''

हम ललिता तहरा सामने ई करार करऽ तानीं कि जतना बनी, जरूरत के अनुसार हम भरपूर हाथ लगाईब। ऊँचाई प इनका चढ़े में हम जतिना बनी ओतना करब, अपना मन के बात कहऽ तानीं। इनकर हिमत आ मन के बल के अनुमान क के हम बहुत प्रसन बानीं। इनका के मंजिल तक पहुँचावे खातिर हम आपन करेजो निकाल के दे देब। अधिका हम का कहीं?''

फेन किशुन कहले, ''अब हमनी के अपना-अपना घरे चलीं जा। राधा तहार बात हम हलुक नईखीं समझत। हम तहरा सोच से बाग-बाग बानीं। मिजाज गदगद बा। आपन जोजना में जहाँ हमरा हाथ लगावे के तहरा जरूरत बुझाई, बिना संकोच के कहिहऽ। हम तहरा से हरदम आगे रहब, पिछुआ ना सकीं।''

***

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

खण्ड - 10

लखपाते सोनपातो से पूछत रही कि एसकुल के रिजल्ट एह साल कईसन भईल बा? सोन पातो कहली, "एक नमर से हमार सेकन डिविजन छूट गईल ह। एसकुल के रिजल्ट त हर साल लेखा बढ़िएँ भईल बा, सतरह गो फस्ट डिविजन बा आ एक सै एकानवे गो सेकन डिविजन। बारह गो थड बा।

ओही घरी राह से आवत किशुन लउकलन आ तुरते टीला भीरी पहुँच गईलन। सोनपातो कहली कि हई रिजल्ट के बारे में पूछऽ तारी, तनी इनका के बढ़ियाँ से किशुन बता दऽ।

किशुन जवाब देलन, "रिजल्ट हम अईसहीं बता दीं?"

लखपातो बोलली, "त काहे मिठाई खा के बतईबऽ?"

"तहार भाई पास भईल बाड़न त अइसहीं रिजल्ट कह दीं?"

"त रसगुला का खईब?"

"रसगुला जबून लागी? अइसने मोका प नू अदिमी रसगुल्ला खिआवऽ ला। अब अउरी खुशी होई?" किशनु पूछलन।

"अच्छा कहऽ, रसगुल्ला खा लिहऽ।"

किशुन कहे लगलन, "सुनऽ, हमरा एसकुल के रिजल्ट खूब बढ़ियाँ भईल बा। खूब चोरी आ चिटगिरी भईल रहल हा। कहीं-कहीं खूब कड़ाइओ रहे, आ ढेर जगे तऽ किताबे से सेन्टर प उतारत रहन स। फलाईंग एसकाड अईलन त टिफिन, में एगो लइका अपना बाबू प बड़ी खिसियाईल। कहलस कि तूँ हमरा के फेल करा के रहबऽ। राते कहले रहीं कि ठीक से बाबू जी पढ़ लऽ। त ना जानीं कि तूँ का पढ़ले रहऽ रत जगा क के। सब चिट आज उलुटे देले रहऽ। कुछ सवाल के त रहले ना रहे। अगिला बेंच के सामने अवला लइका से देख के दू-तीन गो सवाल के लिखलीं हँ। कइसहूँ-कइसहूँ आज लिखाईल ह्। ऊ तऽ बुचुनुआ आगवा रल ह कि काम चलल ह।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"एह तरह त एह साल इम्तहान भईल हऽ। तबहूँ हमरा एसकुल के रिजल्ट दूसे लायक नइखे। बढ़िएँ बा। मालूम ना भईल हऽ?"

इहे सोनपतिया त कहीं से सुन के हमार भाई के बतवलक ह कि फस्ट में ऊ आईल बा, बाकिर ई साँच बा, चिटबाजी ना चलित त ऊ फस्ट में ना मारित।

"इम्तिहाने के खाली बात नइखे नूँ। हम बड़ा बाबू हईं त मास्टर के ना बहाल होखे से एगो घंटी हेडमाहटर साहेब हमरो के संस्कृत के देले बाड़े। एही वजह से हमहूँ हर साल संस्कृत के हेड एगजामिनर रहिला चउथापेपर में। अनुभव में मार्किंग से सब परीक्षक में अपना दल में हमार नंबर जादे रहे से एह साल हमहीं हेडएकजामिनर हो गइलीं। पटना के कदम कुआँ एसकुल में कापी देखात रहे मध्यमा के। एसकुल के मास्टर हमरा दूर के हित लागत रहन शर्मा जी। उहे कापी हेड तक पहुँचावे वाला रहन। हमरा पहुँचते हमार जोरदार स्वागत कइलन आ खूब खुश रहन। ऊ कहलन, "बड़ा बाबू, लिस्ट में राउर नाम देख के हमरा अपार खुशी भईल। असल बात ई बा कि हमार एगो बेटी आ हमार सार की एगो बेटी इक्तहान देले बिया। ओहनी के कोड आ क्रम नंबर हम दे देत बानीं। ऊ बन्डल जब निकली तब दोसरा हेड के ना देके रउवे के हम देब। दूनों लइकिया तेज हई स। रउआ हमरा बेटी के चौरानवे-पंचानवे दे देब त ओहनी के काम हो जाई। ओहनी के शिक्षिका बनावे के बा आ रउवे उपर सब बा।"

हम जवाब देलीं, "शर्मा जी, रउआ हित नाता हईं, आ राउर बेटी तेज बाड़ी स त जरूर खूब लिखले होइहें स। अधिका से अधिका नंबर हम देब, एह में हमरा से पैरबी का करे के बा। रउआ इतमीनान से जाईं आ आपन काम करीं। उहाँ के हमरा भीरी चाह भेजलीं। हम चाह पी के कॉपी गिने लगलीं आ परीक्षक लोग के कापी प चढ़ा के बाँटे लगलीं।

अन्तिम दिन हमरा पहुँचते शर्मा आ गईलन आ बन्डल देलन। खूब खुश हो के फेर से सब बात दोहरवलन। हम आशा उनका के देलीं। एकरा बाद चौबे जी एगो परीक्षक रहन। रोज नंबर चढ़ावे में हमरा के मदत करत रहन। उनके से हम कहलीं, ई दूनों कॉपी एगो हित के बा, बढ़ियाँ से देख दीं, देखब एह दूनों कॉपी में बढ़ियाँ नंबर आवे के चाहीं। ऊ तुरूते देख के हमरा कहलन कि रउरो तनी देख लीं। हम उनका से कहलीं कि रउरा देख देलीं नूँ? हमरा पूरा भरोसा बा रउरा ऊपर। ऊ हमरा देखे के बड़ी जोर देलन। तब कॉपी उठा के हम देखलीं। एगो में सात आ एगो में एगारह नंबर आईल रहे। हमरा बड़ी ताजुब भईल। बढ़ियाँ से सब सवाल के जवाब देखे लगलीं। शर्मा जी भी पहुँचलन। हम देखा देलीं। ऊ देख के माथ ध लेलन आ इहे कहलन कि रउआ त एकदमेधंसा देलीं। अब रउवे देखीं हम जात बानीं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जात-जात कह गईलन कि बढ़ा के लगभग नबें दून्हों के नंबर दे देब, रउआ पूरा पावर बा। चल गईलन। हम सोचे लगलीं, का करीं? ई हित बाड़न आ सामने नियम-कानून बा, नेआय बा, हम उलटी गंगा कइसे बहा दीं, हमरा ना बुझात रहे का करीं। बड़ी उहा-पोह में पड़लीं।

फेर बहुत सोच-विचार के भीतरे कुछ काट-कूट क के दूनों कापी में सात के सैतीस आ एगारह के एकतीस कइलीं। शर्मा जी अइलन त देखऽलन त फेर माथा ध लेलन। आ चल गईलन। हम ओतंने नंबर दे के कापी जमा कर देलीं।

बाद में जब टेबुलेशन होखे लागल त ओही एसकुल के ऊ मास्टर रहन, उहे चार्ट पर दूनों लईकिन के एकानबे आ सतासी चढ़ा के जमा क देलन। एही तरह से सब पेपर में कइले आ ओहनी के पचासी-छियासी प्रतिशत से पास भइली स। अब ऊ दूनों लइकी ओही नंबर के आधार प शिक्षिका बाड़ी स सरकारी एसकुल में। एही तरह से एह घरी राज में सभ काम चलऽ ता, सगरो टके सेर भाजी, टके सेर खाजा बिकाता। आ मोटर साइकिल पऽ साँढ़ ढोआता।"

"हमरा एसकुल में एक दिन डी. ओ0 सोहेब दू पहर में अइलन। हम चिन्हत रहीं। देखते अकचकाके उठ गईलीं आ हाथ जोड़ के परनाम कइलीं त उहाँ के परनाम के जवाब देके आ खड़े-खड़े मँगलीं कि हाजिरी बही दीं। हम ड्रावर में से हाजिरी बही निकाल के दे देलीं। उहाँ के बड़ी जल्दी से दूअदिमी जे ना आईल रहे ओकर हाजिरी के कॉलम घेर दिहलीं आ आपन दसखत क दिहलीं। हेडमाहटर साहेब के बारे में पूछलीं। हम बता दिहलीं कि बगल के हाई एसकुल के पंडी जी के विदाई समारोह में गईल बानीं, साहेब एकरा बाद चल गइलीं। हम जानत रहीं कि इहाँ के माल कमाये खातिर ई तुमाफेरी करत बानीं। तुरते साइकिल उठा के हमहूँ, ओहिजा चल गईलीं आ देखलीं कि साहेब अपना कमान्डर गाड़ी से पहिलहीं पहुँच गईल बानीं। साइकिल शिक्षक-सदन के कोना में ले जाके स्टैन्ड पर खड़ा कर देलीं। तुरते मंच प जा के हेडमाहटर साहेब से सब बात के जान कारी देलीं। हेडमाहटर साहेब शिक्षकसंघ के जिला के अध्यक्ष से सब बात जाके कहलीं। उहाँ के कहलीं कि घबराये के कवनो बात नइखे, आ डी. इ. ओ. साहेब से धीरे से पूछलीं कि बगल अवला एसकुल में राह में उतरल रहीं का?

"इहाँ भाषण भोजन का काम देखिए अध्यक्ष जी, आप सोच लीजिएगा, जैसा चाहिएगा वैसा होगा?" साहेब कहलीं।

अध्यक्ष के कान में धीरे से उहाँ के कहलीं, "हम किसी को दण्ड देकर परेशानी में तो नहीं डालते हैं? आरे दो-चार सौ में सब रफा-दफा कर देते हैं, आप से कुछ छिपा है? कहिएगा जवाब मास्टर दे देंगे और आप आइएगा।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एकराबाद भाषण शुरू हो गईल डी.ओ-साहेब के शिक्षा विषय पर धुआँ-धार भाषण होखे लागल। चाय आईल त उहाँ के ना लेलीं, गरज-गरज के भाषण करत रहीं, हाथ खूब एने-ओने फेंक के पोज करत रहीं। बुझात रहे कि शिक्षा-मंत्री जी के भाषण होता।

लोअर-अपर के एसकुल में त पारी बान्हल रहेला माहटर लोग के। के कहिया-कहिया आई, आपुस में गोटी बइठा दियाला। काम चलत रहेला। डिप्टी साहेब के हर एसकुल से ठीक टाइम प हर महीना में उपरवार पहुँच जाला। जहाँ के ना पहुँचे ओहिजा डिप्टी साहेब जाँच करे पहुँच जाले। लइकन के 'मिड डे मिल' में माहटर लोग दूपहर तक बाझल रहेला। एकरा बाद लइका-लइकी कंटोरा-थरिया ले के अपना घरे नव दू एगारह हो ले स आ माहटर हेडमास्टर आपन घर के राह धरऽ ले। लइका-लड़की के पढ़ाई के बात 'अपना भाग बसे दनवार!' माहटर लोग के चार-पाँच गो अंगुरी घीवे में रहता।

एक दिन एसकुल के ताला टूट गईल आ जिम के कुल्हीए सामान हवा हो गईल। माहटर लोग जुटल त बतिआवे लागल लोग। हेडमाहटर साहेब के कहे से हम एफ.आइ.आर थाना में जा के लिखवा अइलीं। उहो त मुंशी जी जातरा बनाई माँगत रहन त हम कहलीं कि हेडमाहटर साहेब नइखीं देले। त ऊ मुँह पितराईल थरिया अस क के कहले, "बड़ा बाबू जइहन नूँ त हेडमाहटर साहेब उनकर पाकिट गरम क दीहें। एके झौसा प हजुर-हजूर करे लगिहें बाकिर हमार बहनी बिगाड़ देलन। आछा एही जो नाक रगरीहें, घबराये के हमरा नईखे। बिल्डिंग अवला केस के अबहीं डयरिए नइखीं कइले। दउरत-दउरत जूता के एँड़ी खिया जबइन।"

हम फेनु एसकुल में चल अइलीं। एहिजा सब माहटर लोग खूब बहस करत रहन आ आपन-आपन विचार से भंड़ास आपन क जना पर उतारत रहन। हेडमाहटर साहेब कहले, "एहिजा कनई सेमराँव नईखे आईल, ई बात त सभे जानता, का बहस करे के बा। दू जाना के पुलिस कोड़ा लगाई नूँ त पैंटे में पोरफेसर साहेब लेखा पेशाब हो जाई।

हम पूछलीं, "कवन पोरफेसर साहेब के बात कहतानीं ए हाकिम?"

"आरे ओही जुगुल परसाद के कहऽ तानीं। बोड के पिछला साल इम्तहान चलत रहे। जवना रूम में जुगुल जी रहन ओह में इम्तहान अवला लइका खूब दूध से हाथ धोवत रहन स। बाजार अस गहमा-गहमी रहे। एस.पी.साहेब जुगुल बाबू के रूम के हालत देखलन। लइका-लइकी बहरी-भीतरी दउरत रहन स। एस.पी.सीधे ओही रूम के रूख कइलन। भीतर घुसलन त एकऽ गो बेंच प दस-दस गो लइका लदाइल रहन स। लइकी एके में सट के किताबे से सभ उतारत रही स, भाग-दौड़ मचल रहे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जुगुल बाबू जोश में होस खो देलन आ कहलन कि हमरा इजाजत बिना हमरा से बे पूछले एह कमरा में आप काहे धूस गईलीं?

एस.पी.अपना बडी गाड के ओर तकलन। बडी गाड ड्रेस में रहन आ खूब बउँकार रहन। जुगुल बाबू के ध के आरेस्ट क लेलन। लेके बहरी चललन त जुगुल बाबू पैन्टे में छुलू-छुलू मूत देलन। सभ पैन्ट उनकर भींज के चहबोता हो गईल।''

हम बात बढ़वलीं, ''देखऽ लोग एगो बसन्तेपुर के ओह टोला में हमार मित बाड़े। पाँड़े जी। उनकर नाम जयकिशुन पाँड़े ह। गाँव से नियरे शहरियो में बड़का मन्दिर के सामने ठहरे एगो पका मकान बनवले बाड़े। किशुन आ जयकिशुन नाम में कवनो खास अन्तर नईखे, एही से हम उनका के मित कहीला। बढ़ियाँ अदिमी हवन, झूठ हरदम ना बोलस। हमरा से रोज भेंट होला। ऊ हमरा घरे अइहें आ दू-तीन दिन ना अइहें त हमरो मन कउवा-जाला, ठटइबे ना करी, हमहीं उनका घरे पहुँच जाईब। ऊ जान जाले कि दू-चार दिन हमरा कीहाँ नइखन आईल त किशुन आज बेखटके पहुँचिहें। जाते-जाते उनकर मेहरारू हमरा के पिओर दूध में चाय बना के दीहें। ऊ चाह ना ह। ऊ अमरित ह। उनका मेहरारू के सुगा लेखा चुनमुनिया मुँह आ कबूतरी गरदन ओरे भी हम चाह पीए के बेरी ताकल छोड़ दिहीला। ओइसन चाह त हम अपना मौसेरा भाई के मेहरारूए के हाथ के पिअले बानीं। दोसरा जगे हम कह दिहिला कि चाह ना पीहीं। के मुँह जरावो? उहाँ के शहरी घर के बगल में किराया प एगो नवहा बभनी अपना बेटी जवरे रहली। ऊ अपनी बेटी के जनम दिन जरूर मनावली। ओह में टोला महल्ला के ढेर लोग शरीक होले, पोलाव ताड़का खाले आ भारी-भरकम तोहफा देले जा। रात भर ओह दिन मन चउल होला, ऊ रात अतिना रसगर होली कि मियाँ सालों भर अगिला जनम दिन गिनती करत रहेला लोग कि कहिया पर ऽ ता ओकर जनम। एक से एक तोहफा के पहिले से ही लोग तइयारी करे लगेला। ऊ बेटिया भी अब टाँठ हो चलल बिया आ चल बिधर ह? देख के नियरा के लइका ओकरा ओर ताकते रहजाला लोग। बुझाला जे अपना हिरनी आँख के कोर से लइका लोग के ऊ करेजा काढ़ ली। अजबे ताकली, का बरनन करीं? हम पाँड़े जी से कहीला,

'कमसिनी खेल रहल बा, का रखल बा, आसरा, आसरा वाला लोग लगा रखलबा।''

तबहूँ ओहिजा कुपातर बाड़े स कि लाइन तूरत नइखन स, बुझाता नूँ कि तुरते कनउँसी तूरिए के रहिहें स।

पाँड़े जी ओहिजे बड़का गाँव के लोअर एसकुल के प्रधानजी हवन। उनका एसकुल के खपड़ा-नरिया गाँव के एगो धौंस वाला बाबू साहेब माहटर लोग के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नवासी दिन के हरताल में उतरवा के अपना घरे ध देलन, पूछल लोग त कहलन कि हमार बाबू जी बनअवले रहन। हरताल के बाद जब पाँड़े जी उनका से पूछलन त खिसिया के पाँड़ेजी के कहलन कि तोहरा लइकलन्डी के, के माहटर बना देले बा? पाँड़े जी उनका ओर ताकते रहि गइलन। जबर जंग से लपटा के का मिलित?''

पाँड़े जी के एसकुल के एगो बहुत बढ़ियाँ मास्टर रहन। राह में गीत गावे के बेरी बड़ी सुरीली आवाज में पिहकत रहन। ऊ एगो लरिका के दुआर प रह के पढ़ावे लगलन। जेकरा दुआर प रहत रहन ऊ कहीं शहर में अफसर रहन। ऊ गाँवे बहुत कम आवत रहन। मास्टर साहेब सब्जी बाजार से खरीद के ले आवे लगलन। गाय के चरवाह अंगिला साल भाग गईल। अफसर के बेटी बारह-तेरह साल के रही। नाम पिंकी रहे। पिंकी एक दिन त कईसहूँ गाय के खियवली बाकी दोसरका दिन ऊ बड़ी देर तक सूतले रह गईली। गाय बहरी चरन प आठ बजे माहटर साहेब ले अइले आ दुहले। फेन साँझि खा उहे हालत रहे। गाय के सानी ना गोताईल आ गाय साँझिखा ना लागल त रात में केहू के दूध ना मिलल।

माहटर साहेब जब खाये बइठले त पिंकी के माई बड़ी मीठ आवाज में बोलली,

''माहटर साहेब, रउआ आज दूध ना मिलल, हमरा बड़ी शरम लागता कहे में। चरवाह बदमासी कइलक आ बीचे साल में काम छोड़ के भाग गईल। हम अपना नईहर काल्हु चिठी भेज के ओहिजा से एगो अदिमी बोलाइब। एहिजा अदिमी के बड़ी दिकत बा''।

माहटर साहेब वड़ी फुरती से कहलन, ''ई कवन मुसीबत बा, रउआ चिन्ता मत करीं। जबले राउर अदिमी नईखे आ जात, हम गााय के खिया देब आ दूह देब। दुहब खियाईब तबे नू हमरो दूध मिली।''

माहटर साहेब रोटी तूर के तरकारी जवरे मुँह में डलले आ कहे लगलन, ''बड़ आदमी के बात बा, इज्जत के सवाल बा, हम रउरा दुआर प बानीं, रउरा लइका-लइकी के पढ़ावत बानीं त खात पियत बानीं आ ईज्जत आबरू ना देखब? जब ले अदिमी राउर ना आ जाई हम सम्हार देब। हमहूँ बड़े अदिमी हईं। हमरा बुझात नईखे जे रउआ अचानके कतना फेरा में पड़ गईलीं? असमन जानीं कि हमहूँ रउरे परिवार के हइं। हम बउराह ना हइं।'' ओह दिन से माहटर साहेब गाय के बान्ह-छान के खियावे लगलन आ दूहे लगलन। सभके दूध मिले लागल। एकरा बाद टाईम प माहटर साहेब नहा-धोआ के आ खा के एसकुल में चल जास। साँझि खा एकाध घंटा पिंकी आ उनका छोट भाई के माहटर साहेब दुआर प पढ़ावतो रहन। एकरा बादे गाय भीतर बान्ह के खाये बइठत रहन। पिंकी के माई उनका के खाना

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
दे के उनके भीरी बइठ के बेना हाँकत रही। जब माहटर साहेब खा लेस त ऊ बरतन माँज के अपने खाये जास।

एहीबीच में पिंकी के बाबा जे अफसर रहन एकदिन अइलन। ओही दिन साँझ के पिंकी के भाई के अगुआ आ गईलन। माहटर साहेब नास्ता–चाय घरे से ला कै अगुआ के स्वागत में कवनो कोर–कसर ना रखलन। भोजन के बाद अगुआ से बात होखे लागल त अफसर साहेब बड़ी शान से बतऽ वलन, "लइका के हिस्सा सतरह बिघा खेत परता। लइके पढ़ावे खातिर दुआर प माहटरो रखले बानीं। लईका के पढ़ाई, के बात मत पूछीं, एकदम मरचाई ह। कबहूँ सेकन अबहीं तक नईखे भईल। कुछ बनिये के रही!"

अगुआ पूछलन, "हई जवन गइया खियावत रहन इहे माहटर साहेब पढ़ावेलन कि कवनो दोसर माहटर रखले बानीं?"

अफसर तनीं झेंपलन, बाकिर संभर के समझवलन, "आरे का कहीं जी, हम एहीजा ना रहीला, आ बीचे साल में चरवाह साला काम छोड़ के भाग गईल। ई माहटर साहेब संस्कार वाला बड़े अदिमी हवन। पछिम के हवन। बेचारे दस–पनरह दिन खातिर काम संभार लेलन। बड़ी तेजमाहटर हवन। अंगरेजी, हिन्दी आ हिसाबो पढ़ावलन। एही से हमार पोता बहुत आछा कर रहल बा?"

अगुआ कुछ कहलन ना, दोशाला ओढ़ के करवट लेलन।

बिहने अगुआ फराकित होके आपन राह धइलन। उनका फजिरे अवली गाड़ी पकड़े के रहे।

पिंकी के बाबा दोसरा दिन खा–पी के अपना नोकरी प चल गईलन। उनका गईला के बाद पिंकी के माई माहटर साहेब के नहइला के बाद भोजन संरिया के ले अईली। माहटर साहेब जब खाये लगलन त पिंकी के माई उनका भीरी इतमीनान से बइठ के बेना हाँके लगली। तनी देर के बाद माहटर साहेब के मुँह ताके लगली बाकी कुछ कहली ना। माहटर साहेब तियन के तिंताई से घुटके लगले त एक घोंट पानीं पिअले। पानी पी के पूछलन, "कुछ कहल का चाहतानीं?"

ऊ कहली, "का कहीं ए माहटर साहेब कहतो भारी बुझाता। रउआ रात खा अकेले भूतलेखा दुआर प का सूततानीं। रउआ दुआर प ताला लगा के आ आजु से हे रसोइया घरवा में सूतीं, घरहीं। ओहिजा भूत अस अकेले रउआ अनेरिया जान दे तानीं। ई हमरा नीमन नइखे बुझात। रउआ बड़ आदिमी हईं, लाजे जान दे तानीं। हँ, एगो आउरी सलाह करेके रहे बाकी, रउआ से का कहीं, जबून बुझाता।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

माहटर साहेब बे देर कईले पूछ देलन, ''अतना दिन से रहऽ तानीं आ रउरा हमरा के बढ़ियाँ से चिन्हलीं ना? हम त रउरा घर के एगो सदस्य हो गईल बानीं, लाज छोड़ के कहीं?''

पिंकी के माई कहली, ''बड़ी देर भईल, नइहर से अबहीं अदिमी ना पहुँचल। पहिले के गोईंठा सबओरा चलल। बड़ी चिन्ता बा कि फेर कईसे चूल्हा जरी। दोसर कवनो जलावन बा ना। नईखे बुझात जे कइसे काम चली?''

माहटर साहेब साफ-साफ कहलन,

''हम अपने घर समझऽ तानीं। दस-पाँच दिन अदिमियाँ नइखे जब ले आवत, हम काल्हु से गोबरा पाथ देल करब आ तबे तइयार होके एसकुल जाईब। तनी सबेरे अनमुन्हारे में जागब आ सब गाय-गोरू के सम्हार के टाईम प एसकुल रोज चल जाईब। नन्हीं चुकी बात के अतिना घुमा-फिरा के रउरा काहे कहऽ तानीं। हमरा के रउआ आपन नईखीं समझत?''

एकरा बाद से माहटर साहेब पिंकी आ उनका भाई के पढ़ावे के साथ-साथ उनका घर के सभ काम सम्हार लेलन। तरकारी खरीद के ले आवे के, दुआर-दलान बहारे के, ताला लगावे के, गाय खिआवे, बान्हे, दूहे के आ हित-नाता के अइला प सब स्वागत करे के आदि-इत्यादि सभ अपना ऊपर बोझा उठा लेलन। दुआर प भूत अस अकेले सूतल छोड़ के घरहीं सूते लगलन आ निमन चुमन जिनिगी चले लागल। कमी इहे हो गईल कि रोज सभ माहटर लोग जवरे साइकिल से आवत रहन त संड़क प जे पिहकत रहन ऊ अब सुनाईल सपना हो गईल।

एही तरह से हमनी के गाँव जवार में शिक्षा-दीक्षा के खूब बिकास आ बढ़ोतरी होखे लागल, पूरा जवार में खुश-हाली हो गईल, अब पढ़ाई में आ समाज में जादे कवनो समसेया ना रहल।

***

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

खण्ड - 11

हम राधा के ड्राइंग रूम में जा के बईठल रहीं। अब जाड़ा करीब-करीब खतम होत रहे। एह से खाली शर्ट-पैन्ट पहिनले रहीं, गुलबन्द भी ना लेले रहीं। अइसे हम गुलबन्द रखबो ना करीं काहे कि जे लइका सेयान ऐडभान्स बा ऊ गुलबन्द लेके ना चले। जनाला कि ओह लोग के कान में आ माथा में ठंढ ना लागे, तबे नूँ गुलबन्द के जरूरत ना बुझाला।

पटना के लभ गुरू के शिष्या उनकर गुलबन्द ध. के उनका के अपना ओरे पढ़े के बेरी खींच ले ले रही, तब दूनों प्रानी आपुस में सट गईल रहन आ फेर अइसन सटलन कि कभी हटलन ना। एह से हम गुलबन से दूर रहत रहीं।

ओह दिन के जाने, काहे राधा के ढेर देरी ले राह ताके के परल। एही बीच में ललिता आ गइली आ अचानक हमरा ना, ना कहतो रहला प ऊ हमरा के कतिना चूमा ले ली हम गिनती ना कर सकलीं। जवना के हमार कवनो चाह ना रहे आ ना चाह बा, ऊ अनचलावल बेवहार कर बईठली। हम कईसहूँ अपना के छोड़वलीं।

राधा अईली त हमनी के दूनों प्रानी बिना कवनो हरकत के, चुपचाप आमने-सामने बईठल रहीं जा। नईखीं जानत आजुतक कि अब ओहिजा ललिता का सोचत रही आ उनका मन में का उथल-पुथल मचल रहे। हमार मन शान्त रहे जइसे कमलपात से पानी बेदाग डलते नीचे गिर गईल होखे। हमरा कुछ ना बुझाईल बुढ़ईला के शिवराज मास्टर लेखा जे बस के हिचकोला खईला प बस में सवार एगो जुवती के छाती जोर से पकड़ले, तब तक आँख मूँदले खड़ा रहन जबतक लोग थपर-लपड़ से मार के बस में गिरा ना देल उनका के। अन्तर इहे रहे कि ऊ हरकत कइले रहन आ हमरा ओर से कवनो चेष्टा परचेष्टा आ हरकत ना भईल रहे। एह से कवनो माजा बुझाए के त सवाले ना रहल हमरा।

ओइसे चरचा भईला प एगो मास्टर साहेब डी. ओ. साहेब के ओर से जाँच करे गईले। शिवराज से पूछले कि दू गो रउरा पर चार्ज बा, रउरा का कहे के बा?

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ऊ कहलन, "इन्चार्य हेडमास्टर रहीं त हमार एगो चेला एक हजार रोपेया छात्र-कोष से मंगले रहे। अब हम माँगऽ तानीं त हमरा बिरोध में लिखले बा कि ई बस में अइसन कुचाल चलल रहन आ इनकरा आपन पतोह जवरे भी इलिसिट कनेक्शन बा। ऊ हमरा के इन्चार्ज से हटवा के अपने इन्चार्ज भईल चाहऽ ता। हमार त पढ़ावल चेला ह, आ अईसन लिखले बा। पतोह अवली बात एकदम झूठ ह, ऊ लगानी लगावता। हँ, बसवा अबली बतिया साँच ह। बाकीर हम जान के कुछ ना कईले रहीं। बस, गड़हा में चाका परे से हिचकोला लेलक आ हम गिरे-गिरे भईलीं त ओकर छतीए धरा गईल, हमार आँख मूँदा गइल हम कुछ ना जनलीं। राउर देह ध के कहऽतानी, झूठ ना बोलब, इन्चार्ज हेडमास्टर हईं, हाइ स्कूल के।"

"राधा गावे लगली, करिया प अतिना गुमान, चलेला लूँगी झार के ए सखिया। पाकल-पाकल पानवाँ के बिरवा लगवलीं, पनवाँ ना खाये करे शान ए सखिया। धनेसरा करियवा। लूँगी झार के जात रहल ह।

राधा पूछ बइठली, "फेन का भईली?" हम कहलीं, "ई सभ सुन के केहू जानल चाही, आगे का भईल, कहानी कहाँ तक ले पहुँचल। बाकीर हम कहलीं कि एह में हमरा कवनो रस नईखे मिलत, बात आईल ह त परतुक देलीं ह। अईसन गिरल बात के का चरचा करे के बा? छोड़ऽ ई बात, तूँ का करत रहलू ह कि आवे में अतिना देर कइलू ह?"

"हमरा बुझाईल ह कि तूँ आ के बईठऽ लऽ। हम मामी से चाह बनावे के कह के चुल्हा धरावे लगलीं हँ। चाह के केटली चुल्हा प रख के त चलले आवतानीं। कवनो ढेर देरी ना भईल ह। बाकिर ललिता काहे गूँगी सधले बाड़ी, का बात बा? ई त अईसे चुप रहे अवली ना हई।"

हम बचाव कईलीं, "असल में देरी जान के ललिता बड़ी तेजी से एहीजा हाँफते अईली ह। तब से ई सुसता तारी। एही से चुप बाड़ी। हम कहाँ चुप बानीं, हम त क गो कथा-कहानी तहरा के सुनवलीं। हमार मुँह कहाँ बन बा?"

राधा पूछली ललिता से, "गते-गते अईतू। दउरला के कवन काम रहे। हम लुटात का रहीं? तूहूँ कबो-कबो बउराह बन जालू। तनी देरिए से पहुँचतू?"

एकरा बाद उनकर मामी चाह लेके आ गईली। राधा तस्त ले ली आ कप निकाल-निकाल के हमरा के आ ललिता के हाथ में देके अपनहूँ पिए लगली। कहली कि दूध जर गईल रहे, एह से बढ़ियाँ चाह नइखे बनल।

ललिता कुछ बोलते ना रही। थोड़ी देर के बाद चाह पी के राधा से कहली कि तबीयत रतिए से ठीक नइखे, हम जा तानीं, आ ऊ उठ के राह धइली।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

राधा हमरा से कहली, "का बात बा, तूँ कुछ बोललऽ ह का?"

"ना, हम त कुछ ना कहलीं हँ आ कुछुओ ना कइलीं हँ।"

"हमरा बुझाता कि तूँ हमरा के आन्ह समझऽ लऽ!"

"ई कइसे कहऽ तारू? कवनो आधार?" "हमरा मन में अइसन लागता कि तूँ कुछ छिपावऽ तारऽ। ना कहबऽ त हम जा तानीं।"

राधा खड़ा हो गईली रूस के। हम उनकर दहिना हाथ ध के बईठा देलीं। कहलीं, "हम कहब त तूँ ललिता प खिसिया जइबू आ तूँ सह ना सकबू, लड़े लगबू, जइसे सब औरत करऽ ली जा।"

राधा कहली, "हमरा के तूँ पूरा चिन्हले नइखऽ। तूँ कहबऽ त हम आपन करेजा निकाल के दे सकीला। हम अउर औरत ना हईं। तूँ जवन कहबऽ तवन करब।"

राधा हमरा अउर नियरा सट के बईठ गईली।

"हमरा से सभ बात साफ–साफ कहऽ ना त हम रोवे लागब राग ध के, दाल में कुछ काला बा?"

"आछा कहतानीं, सुनऽ, सुन के तूँ जवन मन करी करीहऽ तूँ मनबू ना?"

"तूँ जवन कहबऽ, करब, कहलीं नूँ, भरोसा नईखे?"

हम कहे लगलीं, "तूँ ड्राईंग रूम में बड़ी देर से अइलू ह। हम आ के सोफा प अकेले चुपचाप बईठ गइलीं हँ। धनपातो लेखा ईहो सुलग गइली ह। आवते अकेले देख, बईठली ह ना, हमरा ओर निहुर के चूमा लेवे लगली ह। हम कुछ सोंचतीं तली कई बेर हमार माथा आ गाल चूम ले ली ह। हम हाथ ध के जबरजस्ती सोफा प बईठवलीं हँ तली तूहूँ आइए गईलू ह। हम त अकचका गईलीं हँ। तूँ ना अइतू त हम उन का के खूब डँटतीं, बाकिर तूँ आ गइलू हऽ तऽ टाइम ना मिलल ह कुछ कहे के। उनका के बचावे खातिर कहलीं हँ कि आवे में हाँफे लगली ह एही से चुप बाड़ी?"

राधा अवाक हो गइली। कुछुओ बोलत नईखी।

हम कहलीं, "का सोचे लगलू? उनका से झगरा करबू का?"

"ना, तहरा से कसम खईलीं हँ त तहरे अनुसार चलब।"

हम समझवलीं, "देखऽ हम कुछ ना कईलीं हँ आ आगे भी हम आगे बढ़े के तनिको चेहटा ना करब। तूँ हमरा के जानऽ तारू। एह मामला में हम एकदमें ठंढा हइं। तूँ त जानते बाड़ू? हमार कवनो हरकत तहरा–जवरे आज तक नईखे भईल। एगो

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ओह दिन जान-बूझ के आँख मूँद लेले रहू त चूमा ले लेले रहीं बाकिर ओह बात के हमरा बहुत अफसोस रहेला। हम बार-बार सोचीला कि हमरा ऊ ना करे के चाहत रहे। तूँ बहुत पवितर विचार के बाड़ू कि हमरा गलती के माफ क देलू आ आजु तक ओह बात के कबहूँ नामो तक ना लेलू। हमरा-तहरा में अगाध, अथाह प्रेम बा। अईसन पेयार राधा-कृष्णा के छोड़ के शायद केहू में ना भईल होइ। देह ओर जे फिसल जाला ऊ साँच प्रेम ना ह, ऊहे बासना कहाला। हमार-तहार पेयार बेजोड़ बा। हमरा मन में तहरा बिना बेचैनी अतिना रहला कि जईसे हम आग में जरत रहीला। तूहूँ हमरा खातिर हरदम छटपटात रहलू। हम सभ अनुभव करीला। ई हमरा-तहरा ना, सऊँसे बसन्तपुर में जानकारी बा। तबहूँ सभे जानऽ ला कि हमनी में कवनो लईकपन नईखे। हमनी के पेयार के गइराई से शायदे केहू अपरिचित आ अनजान होई। तहार मामा-मामी भी खूब जानऽ तारे आ ऊंहो लोग समझऽता कि हमनी हलुक नईखीं जा। ऊ लोग बूझऽता कि हमनी के दूनों अदिमी में केहू बाचा नईखे, दूनों आदमी सेयान बा, समझदार बा। ई दूनों लईखेल ना कर सकस। अतिना बिसवास ओहू लोग के भीतर से बा। ऊ लोग हमनी प शक-सुबहाँ ना कर सके।''

''तहार एह बारे में का खेयाल बा?''

राधा कहली, ''जवन तूँ कहऽ तारऽ उहे साँच बा। हमहूँ इहे सोचीला? हमनी के नीचे नईखे उतरे के। राधे-श्याम लेखा हमनीयों के जिनिगी निबाह देवे के बा। हमरा देह के कवनो भूख-पियास नईखे। हम त सूतलो प तहरा के देखत रहीला। हमरा दुनिया के सभ चीज में किशुन छोड़ के दोसर कुछुओ ना लउके। खाईला, पिहीला, सूतीला, जागीला, किशुन हमरा से आन्ह ना होखस, नियरे आ जवरे रहले! हमहूँ उनका से तनिको घरी छन अलगा ना रहीं। तूँ नाहींओ आवलऽ तबो हम नियरे रहीला। अवरू कुछ हमरा लउकबे ना करे। 'जागत सोवत सपने सौतुंख कान्ह कान्ह जकरी।''

अतना कहली नूँ त हम उनकर दूनों हाथ चूम लेलीं। कहलीं, ''देखऽ राधा, ललिता के कवनो दोस नईखे। सभ मेहरारू में कमजोरी होला, सभके भूख पियास अस देहियो के पियास लागला। ई दुनिया के नियम ह। एकरा के समय अईला प केहू झुठला ना सके। कुछुए अदिमी होई जे भूख के दबा दी आ चाहे दबावे के कोशिश करी। अधिका लोग। कुछ अइसनो होले जे जीव जाँत के, सह के रह जाले। कुछ त गिर जाला, बह जाला, ठटाय ना लोग के कुछ चिन्हा जाले। हमनी के हलुक नईखे बने के। कमजोरी नईखे आवे देवे के। अपना जगह प एँड़ा लगवले रहे के बा।

ललिता से तूँ एह बारे में कुछ चरचा कबहूँ ना करबू आ हमहूँ कवनो राह ना देब, त लजाईल रहीहें आ अपने आगे बढ़े से रूक जइहें। अगर-मगर कुछ होई त हम तहरा से तुरते जना देब आ मिल के दूनों अदिमी कवनो राह निकाले के।''

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant 2

राधा पूछली, "धनपातो के का परतुक देलऽ ह? हम ना बूझलीं हँ।"

धनपातो जवरे भी अईसहीं एक दिन भईल रहे। मलार किनारे टीला के नीचे एक दिन दूनों अदिमी रहीं जा। ढेर देरी ले दोसर केहू ना आईल। हंमनीएँ के अकेले रहीं जा। दुपहरिया रहे। खेत में भी केहू कतहूँ लउकत ना रहे। थोड़ी देर जवरे चुपचाप रहला के बाद धनपातो चारू ओर ताक के हमरा मुँह प धेयान से ताके लगली। हम जनलीं कि अईसहीं ताकऽ तारी। हमार दहिना हाथ दूनों हाथे ध के दोसरे तरी दबवली। हम त अवाक हो गईलीं। कहलीं, "ईका करतारू? केहू देखी त का कही?"

ऊ कहली, "कहत रहो। हम का करऽ तानीं जे केहू कही? हम पूछऽ तानीं कि हमनी के अईसहीं रहे के?" ऊ हमरा के चूमे लगली!

हम पूछलीं, "त कईसे रहे के, कहऽ?" ऊ कहली, "हमरा में का कमी बा, रूप-रंग में, पढ़ाई-लिखाई में? तूँ त सभ जानते बाड़ऽ"

"हम त कुछुओ नईखीं जानत। तहार बात हमरा तनिको नईखे बुझात कि का कहऽ तारू?"

धनपातो मुसुका के कहली, "लईका मत बनऽ। दूध मुहाँ लईका बाड़ऽ का?"

"साफ-साफ काहे नईखू कहत? बुझउलिया हमरा नईखे बुझात।"

ऊ कहली, " हमनी के आपुस में बिआह ना हो सके?"

हम कहलीं, "हमार बिआह कईसे, होई, हम त लरिकाई से कहत आवतानीं कि हमरा बिआह नईखे करे के। तूँ ई बात जानके आ हमरा जवरे अनटिआवत बाड़ू? ई हे रहित त अब ले हमार बिआह ना भईल रहित?"

धनपातो चुप हो गईली। हमहूँ उनका ओर ताके लगलीं आ सोचे लगलीं कि धनपातो अब का कहिहें। एही बीच में लखपातो आ अवरू क जानी आ गईली। ऊ लोग धनपातो के चिन्तित आ मौन देख के हमरा से जानल चाहल लोगिन कि का हो रहल बा, आ ई काहे चुपचाप बाड़ी? ई चुप रहेवाली त हई ना।

हम कहलीं, "देर से हम आईल बानीं बाकिर ई त तुरते अइली ह आ समाचार गाँव-घर के होत रहे। अइसन कवनो बात नइखे कि छिपावल जाय। ई कहत रहली ह कि नाम कोलकाता लिखाई काहे कि इनका बाबू जी के ओहिज़ा तीन-चार गो बस चलली स। पढ़े-रहे के ओहिजा सभ सुभीता बा। कवलेज भी उहाँ ढेर बाड़े स। इनका तीसरा दिन चल जाये के बा, एही से चिन्तित बाड़ी आ कहतारी कि अब ना जानीं कतिना दिन पऽ भेंट होई?"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

राधा के हम सलाह देलीं, "हम पाक-साफ बानीं, तोहरा खातिर कुछुओ करब, हम तहरा अतिना नियरा बानीं कि कुछ छिपावल-लुकावल असंभव बा। तूँ हमरा तरफ से निश्चिन्त रह के जतिना बढ़ियाँ से हो सके आपन पढ़ाई आ आगे के जोजना खेयाल रखऽ।" राधा उनका ओर ताक के हँस देली, कहली, " हमरा त पूरा भरोसा तहरा प बा। बाकी ई बतावऽ कि तूँ कुछ ना कइलऽ? ऊ दूनों जानी अपना ओर से हरकत कईली आ तूँ साधु बनल रहल? कि तूहूँ कुछ कईलऽ?"

किशुन सन्न हो गईलन। कुछ देर तक एकदम चुप हो गईलन! बोललन, "कईलीं काहे ना, बाकी का रहल? अतिना कहलीं तबो पूरा बूझलू ना?"

"कहऽ का-का भईल, ईहे नू पूछतानीं?"

"कहते बानीं, सभ हो गईल जवन होला। अब अउरी का कहवावल चाहतारू? तूँही जवन पूछऽ तवन हम कहीं। पूछऽ, साफ-साफ पूछऽ, हम तहरा के बता देतानीं। अब तहरा से तनिको ना छिपाइब, बोलऽ, पूछऽ?"

राधा जान गईली कि रंज हो गइले। राधा अब चुप हो गईली।

दूनों ओर चुप, चुप। केहू बोलल ना, केहू के नईखे बुझात कि अब बात कईसे फेर से शुरू कईल जाय। पीनो गिरला के आवाज ना रहे।

राधा उठके जाये लगली त किशुन बोललन, "हम अब अपना घरे जा तानीं।" राधा कहली, "ना, ना, बईठऽ। मामी भीरी से तुरते आवऽ तानीं।"

किशुन सोफा प फेर बईठ गईलन। राधा बड़का गिलास में पानी ला के टेबुल प रख के फेर भीतर गईली। कस्तरी में चार गो पिआव आ दू गो पनतुआ ले के आ गईली।

कहली, "ल पानी पिअऽ मिठाई खा के।" "ओह लोग जवरे खूब भईल, ओकरा खूशी में अतिना मिठाई खिआवऽ तारू?"

"हमरा के खिस मत बरावऽ! हमरो खिस बरेला, आ खिसियाये, रूसे आवेला।"

"ना पूछीं कि मिठाई कवना खुशी में ले अइलू ह?", किशुन कह के एगो पिआव गटक के गिलास खाली कर देलन।

राधा पूछली, "ई सभ के खाई?"

"तूँ।", किशुन कहलन।

"हम अपना खाये खातिर एहिजा ड्राईंग रूम में मिठाई ले आईल बानीं?"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"खुशी में तूहूँ दू-तीन गो खा लेबू त नीमने नू होई," किशुन कह के चुप हो गईलन। ढेर देर ले चुप्पी रहल।

एकरा बाद राधा के मामी अइली आ कहली, "चलऽ जा, खाना तइयार बा, ग़रमे खा ल जा।"

किशुन खड़ा होके कहलन, "हम जा तानीं घरे, जा के खाईब ना त हमार भोजन जियान नूँ हो जाई?"

मामी हाथ धर लेली, "ना बबुआ, राधा कहले रली हा, त हम तहरो भोजन बनवले बानीं। चलऽ, आज एहीजे खा लऽ।"

मान-मनौवल करे ना परल। हम खाये चल देलीं त राधा भी पीछे-पीछे रसोई घर में पहुँचली।

भोजन परोस के मामी दूनों अदिमी के सामने छीपा, डुभा आ तियन के कस्तरी रख के बेना हाँके लगली। खात खानी हमनी के आपुस में कुछुओ ना बोललीं जा। खा के फेर दूनों अदिमी सोफा प आ के बईठ गईलीं जा। ओही घरी बालक महतो आ गईलन। हम ऊहाँ के बोलऽवलीं, "एसकुलन के हालत अजब बिगड़ गईल बा। बीरपुर हाईस्कूल के बर्मा माहटरवा बड़ी पिटाईल बा। ऊ भारी बदमास ह।"

हम पूछलीं, "महतो जी का भईल ह? हमनी के त कुछुओं नईखे मालूम।"

कहे लगलन, "सगरो शोर हो गईल बा, लुक शुरू होखे से पहिलहीं स्कूल में छुट्टी हो गईल। मिडिल एसकूल के हेडमाहटर नंद कुमार यादव जिन्हकर हाथवा ना खूब हिलेला, ऊ देर से डेरा में आवेलन। आजुओ अबहीं ले आइल नईखन। बर्मा उनका भतीजवा से कहलन कि चल हमरा कोचिंग रूम में तनी हमरा माथा में खिजाब लगा दे। ओकरा के लिया के ओहिजा गईलन। लगभग बारह बरिस के ऊ लइकवा बा। रूम में गईल त केवारी, वर्मा बन्द कर देलन आ ना जाने का कईलन कि ऊ केवारी खोल के जोर से पराईल। गाँव में अपना हित के हित से भेंट क के रोवे लागल आ अतिना कह के रोवते कहलस कि खोलऽ तानीं। ओकर ऊ हित के हित कहलन कि अब का खोलबऽ, खोले के बाकिए बा। हम जान गईलीं। चलऽ हमरा जवरे बाजार प। ओहिजा जा के एगो लईका के बर्मा भीरी समझा के भेजलन। कहलन कि कहिहे, "बेनी बाबू माहटर सिदेनी के चाह के दोकान में रउरा के काहे खातिर त जरूरी बोलवलन ह। हमार नाँव मत धरिहे ना त छनक जाई। एही जे गुमटी के पीछे बानीं जा।" दू-तीन गो बदमाश लईकन के ऊ जवरे लिया लेले रहन।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ऊ जाके सभ समझा के कहलन। बर्मा जी कहलन, "जा के कह दीहे कि साँझ खा भेंट करब।"

लईकवा कहलस कि ऊ पियरो जा तारे, जरूरी बोलवलन ह। बर्मा चल दिहलन आ सड़क प आ गईलन। चाह के दोकान भीरी ओकरा से पूछलन कि कहाँ बाड़न? ऊ देखवलस, "ऊहे दोकान के गुमटी भीरी देखीं, रउवा खातिर पीछवा खड़ा बाड़े।"

बर्मा जी ओहिजा जइसे पहुँचलन कि फराठी चलावे के शुरू क देलन स। क जगे लिलार प आ कान प छिला गईल ह। बड़ी दउरा-दउरा के पिटलन हँ स।

ओही घरी बड़का दरोगा सिंह जी भीरी बर्मा एफ.आई.आर देलन। बर्मा के ऊ लुफुत छोड़ा देलन स आज। दोसरा दिन दस बजे स्कूल खुलल त हेडमाहटर साहेब अपना ऑफिस में पहुँचलीं। तुरते बर्मा पहुँच के परनाम क के कहे लगलन, "देखीं हमार शर्ट फार देले बाड़न स, बाकी हमहूँ लोग के कुरता फार देले बानीं। हमहूँ कवनो दया नईखीं देखवले, हमरो हाथ में दूब ना जामल रहे।"

हेडमास्टर पूछलन, "का भईल ह? हम त कुछुओ नइखीं जानत।"

प्रार्थना कराईं त बतिआवल जाई।"

ओही घरी दरोगा, सिंह ज़ी ऑफिस में आ गइलन। हेडमास्टर उनका के बइठा के अपने प्रार्थना में चल गईलन। प्रार्थना करा के हेडमास्टर शिक्षक-सदन में मास्टर लोग से कहलन, "अपना-अपना क्लास में तुरते जाईं सभे, ओहिजे एक दू छन ठहर गइलन। सभ मास्टर लोग अपना क्लास में जाये लगलन। सभ क्लास लाग गईल। हेडमास्टर ऑफिस में आ के चपरासी के चाय ले आवे के कहलन आ दरोगा जी से बात करे लगलन।

"का आदेश बा हजूर?" दरोगा काल्हु के एसकुल बन्द भईला के बाद के सभ बात बतलवन। कहलन, "रउरा एसकुल के बर्मा मास्टर एगो लइका से अप्राकृतिक मैथुन के दोषी बाड़े, उनका जवरे मारामारी भईल बा, दूनो ओर से लिख के लोग देले बा, हम बर्मा के गिरफ्तार करे आईल बानीं।"

चाह आ गईल। दूनों अदिमी चाह पीए लगलन। अतिना देर चुप्पी रहल। केहू बोलल ना। चाह पी के हेडमास्टर खड़ा हो के हाथ जोर देलन। कहलन, "हजूर; रउरा पावर बा, एह घरी जवन चाहीं करीं, बाकिर हम त कहीं के ना रह जाईब। अखबार में निकल जाई स्कूल बदनाम हो जाई, हम त कहीं मुँह देखावें लायक ना रहब, काल्ह से हमार राह चलल त एकदम मुश्किल हो जाई। गईल-गुजरल अदिमी भी हमरा प आ हमरा स्कूल प अंगुरी उठावे लागी। एह से अधिका हम रउरा से अउर का कह सकीला! हम ओह मास्टर के अपना ढंग से राह देखाइब, वादा करऽ तानीं।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दरोगा जी बड़ अदिमी रहन, संस्कार अवला रहन। खड़ा हो गईलन आ हेडमास्टर के बड़ी गुनगान कइलन। हेडमास्टर के सामने ही सब कागज फाड़ के फेंक देलन आ थाना में चल गईलन।

हम महतो जी से कहलीं "महतो जी, दुनिया कहाँ जातिया, कहे लायक नईखे। बड़ी खराब दिन आगे आ रहल बा। हम त बड़ी सोचिला, कईसे इज्जत आवरू बाँची, समझ में तनिको नईखे आवत।"

***

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

खण्ड - 12

गाँव के गली साफ करे के रहे। मलिकार के दुआर प मिटिंग खातिर सभे जुटे लागल। बलवंत सिंह, बुझावन सिंह चन्देल सिंह, सरोज पाँड़े, बरमेश्वर पाण्डेय, उनकर छोटका भाई सुमेसर पाण्डे, रितेश अहीर, धरमेस यादव, मुन्ना कहाँर, जमीन्दार विसकर्मा, जनरधन पासी, गोबरधन दुसाध आ जसन तेली मिटिंग में अइलन।

सब लोग आपन जगह प बइठल। दुआर प पुअरा बिछावल रहे। एह से सभ के जगह मिल गईल। बुझावन बाबू बोलऽलन "आज काहे खातिर मिटिंग होता मलिकार?"

बलवंत सिंह कहलन, "आज के मिटिंग के उदेस बा कि एहिजा हमनी के एगो कवलेज खोलीं जा।"

सुनर बाबू खड़ा हो के कहे लगलन, त मलिकार कहलन कि बइठिए के कहऽ जवन कहे के बा।

एकरा बाद सुन्नर बाबू बइठ गइलन आ सवाल कइलन, "ई बताईं सभे कि एहिजा तऽ लोअर एसकूल चलते नईखे, एहिजा कवलेज चली?"

रमेसर कहलन, "लोअर एसकूल के का भईल बा, मंजूर होइए गईल, बाबाजी पढ़ावे आवते बाड़न, अब कईसे एसकूल चलो?

सुन्नर बाबू कहलन, "सनीचर के दिन मिसिर जी आवेलन, सनीचरा खातिर। लईकन से सनीचरा असुल के आ चल जालन। अनगुतहीं से लईका काच्छा पहिर के एसकूल के सभ कमरा लीप के आ गोइंठा प धूप जला के सनीचरा गीत गनेश जी के जय गनेश जय गनेश देवा, माता गउरा पारबती पिता महदेवा," गा के आ पूजा करे लन स। मिसिर जी सभ चाउर झोंरियाके चल देलन, हो गईल पढ़ाई। एही खातिर कवलेज खुली, झोरिआवे खातिर? पढ़ाई लिखाई तेरह-बाईस बा!?

रमेसर बोलऽलन, "अरे भाई, कवलेज आ एसकूल में अन्तर नईखे? दूनों एके ह? सभ भाँग बाईस पसेरी?"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बलवन्त सिंह कहलन, "कवलेज में एक-से-एक पढ़ल-लिखल लोग अईहें आ पढ़इहें। केहू सूट-बूट पहिर के आई, केहू कोट पहिर के आई, केहू इंगलिश कोट त केहू अरबीयन कोट पहिरले रही। कतना लोग जाकिट आ जवाहिर कट पहिर के आई।"

बुझावन कहलन, "कोट-पैन्ट आ सूट-बूट एहिजा देखे के बा? एही खातिर कवलेज खुली? कहऽ हम सोसलिस्ट पाटी के मिटिंग बुला देतानीं जे करपुरी आ अशोक मेहता शेरवानी पहिर के आ जइहें जईसे परधान मंत्री अचकन पहिरऽले। जहीए कहबऽ ओही दिन बुला देब, धावल लोग जुटि हें। का समझतार? एक-से-एक बड़का तोंद वाला नेता जुटा देब, सूट-बूट देखते रह जईबऽ?"

अझुरावन पांड़े कहलन, "आरे हँसुआ के बिआह में खुरपी के गीत गावे लगलऽ जा। एहिजा मिटिंग बा कवलेज खोले के। एही में हमरो एगो सवाल बा। कहीं सभे तऽ हम कहीं?"

सभ लोग बोल परल, "कहऽ भाई, तूँ काहे रोकब? तूहूँ कहऽ का कहल चाहऽ तारऽ?"

ऊ कहे लगलन, "देखीं सभे, रउरा सभे समझदार बानीं। हमनी के ई बसन्तपुर गाँव पहिलहीं से बहुत नामी गाँव रहल बा। बाप-दादा जवार में पूछात रहन। सेमराँव तक पंचाइती करे जात रहन। हमनी गाँव के राहता गली सभ जाम हो गईल बिया। कवलेज जरूर खुले, बढ़ियाँ बात होता त आग में पानी डालल ठीक नईखे। बाकिर गाँव के सभ गली भी साफ हो जाये के चाहीं।"

"मलिकार रउरे कुछ कहीं, का करे के चाहीं? ई लोग अइसहीं पहर भर आग-खर डालत रही। एह से कवनो काम ना सधी।" ढेर लोग एके बे कहले।

मलिकार कहले, "सभ के मन बा त कवलेज खुले आ कोलकाता से ट्राम बाबू सभ जान समझ के आईल बाड़े। उनकरा के एकर जिमा देल जाय। बगइचा में सभकरे जमीन बा, सभे पद के मोताबिक आपन जमीन ट्रामू बाबू के नाम से जगदीशपुर चल के बयनामा कर देवे।

ट्राम बाबू सेक्रेटरी रहिहें आ सभ के घरे जवन लईका जइसन पढ़ल बाड़े स, ओहनी के बहाल क दी हें।"

अझुरावन बाबू बोललन, "रजिस्टरी क के आईल जाई आ गाँव के गली भी सभ साफ क के बढ़ियाँ राह बना दिआई। केहू गली में घूर-पात रखले बा त केहू नाद-चरन बनवले बां सभ साफ क दिआई।"

एकरा बाद तय भइल कि काल्ह सबेरे सभे खा-पीके जगदीशपुर के बस पकड़ लीही। मुंशी जी के भी कह देवे के होई।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मिटिंग खतम भईल। सभे अपना-अपना घरे गईल।

किशुन उठलन आ सीधे राधा के गली ओर डेगरडन हो गइलन। राधा इम्तहान के तईयारी में भीरल रही। किशुन ओहिजे भीरिए जा के बईठ गईलन। राधा कहली,

"बड़ा खुश लागऽ तारऽ, का बात बा, कुछ नाया बा का?"

"हँ, नाया बा तबे नू एह रात खा अइलीं हँ!"

राधा मुस्काए लगली। बुझाईल कि कुछ कहिहें बाकी कुछ कहली ना।

किशुन कहलन, "तहार चेहरा आ हाव-भाव से कुछ दाल में काला बुझा तरूए।"

राधा फेन मुस्कुरा के कह देली,- "

"मन करऽ ता कि तहरा के चूम लीं आ...."

"अइसन बउराही करबो मत करिहऽ। जानऽ तारू, हमनी प सभे बिसवास करे ला। सभे हमनी के भाई-बहिन अस जानेला। तहार मामा-मामी के हमनी प अटल विसवास बा। एह से केहू के बिसवास के साथ खिलवाड़ ना करे के। सुनऽ जवन कहतानीं।

"गाँव के सभ लोग जुटल रहे। मिटिंग भईल ह। गाँव में कवलेज खुली। बसन्तपुर में साँचो बसन्त के रंगीनी आ जाई। बसन्ती बयार चले लागी। सभ के घरे जवन लईका पढ़ल बाड़े स, कवलेज में बहाल हो जइहें स। केहू छोटा बाबू, केहू बड़ा बाबू, केहू दरवान, केहू नाइट गाड हो जाई केहू परफेसर हो जाई।" ई बात समझा के किशुन कहलन।

"तूँ अबहीं चूमा-चाटी में बाझल बाड़ू। खूब पढ़ऽ मन लगा के। हम तहरा के परफ़ेसर बनवा देब। हमार बात केहू ना उठाई।" किशुन फेन कहलन।

राधा पूछली, "तूहूँ कवलेजे में आ जइहऽ। दूनों अदिमी पोरफ़ेसर हो जाये के। बड़ी माजा रही। एके साथे कौलेज में पढ़ावे चले के नूँ?"

"फेंड़े कंटहर ओठे तेल। अबहीं खुलल हइए ना, का-का सपना दिने में देखे लगलू!" किशुन समझवलन।

राधा राय देली, "हमनी के दू गो डिपाटमेन्ट रही तबहूँ एके भीरी बइठे के। हमरा दोसरा जगे मन ना लागी। भीरी बइठे के मीठ-मीठ बतिआवे के बड़ी आनन्द रही।"

किशुन कहलन, "आनन्द का रही जवन तूँ सोचतारू, सब गुड़-गोबर हो जाई। लभ गुरू लेखा ह्हराहोर हो जाई, आ हमनियों के कहीं मुँह देखावे लायक ना रहब जा।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दोसरा दिन गाँव के हर घर के मालिक जगदीशपुर रजिस्ट्री आफिस में गईल लोग। ट्राम बाबू सेक्रेटरी के नाम सभ लोग आपन-आपन जमीन कवलेज खातिर बय-रजिस्ट्री कर देलन लोग।

रजिस्ट्री कइला पऽ ओहिजा लोग खूब भरपेटा जिलेबी कचरऽ ला। ओह दिन तऽ अपने खाये के रहे, एह से जिलेबी चलल जरूर बाकीर कचराहट आ नाक डुबौवल ना भईल।

अगिला एतवार के दिन फिर बइठकी लागल। अझुरावन मलिकार से सवाल कईलन, "अब कवलेज के तइयारी हो चलल। काल्ह गली सफाई के काम कर दियाय।"

बलवन्त जी कहलन, "आरे भाई कवलेज खुल जाये दऽ। उहो काम होइबे करी। बाकी ना रही। केहू ओकरा विरोध में नईखे।

अझुरावन खड़ा हो के जोर से कहे लगलन, "हमनी के गाँव के आदर्श गाँव बना देवे के बा। काल्ह जरूर से गाँव की कुल राह, गली-गलियारा के खूब बढ़ियाँ से सफाई कर दिआय। एकरा बाद के बईठकी में गाँव के अउर विकास के सोचल जाई।"

आगे अब केहू कुछ ना बोलल। तब मलिकार कहलन,

"भाई सुनीं सभे, अतना जोर ई राह-राहता साफ करे खातिर लगावऽ तारन, तऽ ई काम कवनो जबुन नईखे। अच्छा बा, काल्ह आठ बजे सबेरे सभे कुदारी-छँइटी ले के पुरूब भर जुटे। काल्ह दिन भर में पारा-पारी मय गली के सफाई कर देल जाय। ई हे तय भईल।"

सभे अपना-अपना घरे चल गईल।

बिहने आठ-नौ बजे पूरूब भर लोग के जुटान भईल।

बहादुर के दुआरी के सामने के घूर के ढूह उठा के पूरे राह प खाला में बिछा दियाइल। मोहन के पपीहटा आ बईर काट दियाईल। जगन तेली आ ज़हूर मियाँ के बैल के खूँटा उखाड़ के फेंक दियाइल। नाद-चरन ढहा गईल आ ओकर माटी राह पऽ पसरा गईल। नन्दन कुरमी के चरन ढहा गईल आ ओकर माटी राह पऽ पसरा गईल। राह खूब चौड़ा आ साफ-सुन्नर लागे लागल।

सामने ईनारा रहे। लोग आगे बढ़ल। ट्राम बाबू कहलन, "देखीं जा, लकीर के फकीर ना बने के। पूर्वज लोग कतिना दम लगा के ईनार बनवले होई, हमनी के एकरा के आबाद रखे के चाहीं। आगे बढ़ीं सभनी।"

लोग आगा बढ़ गईल। अझुरावन के मड़ई रहे। छव-सात गो लईका धकिया देलन स। मड़ई-भर-भरा के जमीन पऽ चीत हो गईल। सभे ओनहीं ताके लागल,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तली-अचानक अझुरावन तलवार चम चमावत, उनकर बेटा फरसा लेके आ नाती गँड़ासा ले के भीड़ पऽ झपटलन!

सभे भाग चलल पाँछा, आ ऊ लोग बहुत दूर तक सभके के खदेर देलक। बड़ी देर तक खदेरा-खदेरऽउवल भईल। फेर गिट्टी ढेला चले लागल। ढेलाउवल में केहू घायल ना भईल।

ढेर देर तक ढेलउवल-गिटउवल भईल फेर तुरते अझुरावन सलाई से मड़ई में आग लगा देलन।

रात में मुसहर टोली में सूअर के खोभाड़ में आग लग गईल। सूअर झोला गईल। अझुरावन थाना में ढेर लोग पऽ केस क देलन। बहुत दिन ले केस चलल।

कवलेज बनावे के काम पूरे खँटाई में पड़ गईल। जब दिल में दरार हो जाला तऽ आँगन में देवाल खड़ा हो जाला। गाँव आदर्श बन गईल। सब गुड़ गोबर हो गईल। गाँव में कऽ गो पाटी खड़ा हो गईल।

***

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

खण्ड - 13

डीघा बधार बसंतपुर के उत्तर तरफ बा। ओने के ऊँच जमीन ह। ओकरा नियरे गढ़ पऽ कहाला। बान भट के भाई राजा रहन। उनकर महल खूब जमीन ऊँचा क के तीन मंजिला बनल रहे। ऊ जबाना के बात रहे। राजा के बड़का बेटा ऊपरे के रंग-महल में एगो रंगरेजिन जवरे रंग करत रहन। रोज राति भर नाच-गान होत रहे आ मुसहर के महुआ के चुआवल दारू के पियकड़ी चलत रहे। राजकुमार के आपन बरात बरडीहाँ गईल रहे पियरो से दू माइल प आ पिअरो के दखिन सामियाना आ दस गो छोलदारी, एगारह गो टेन्ट आ बारह गो झाड़-फानूस वाली कोठरी बनावल गईल रही स। अम्बेस्डर गाड़ी से बरियात जनवासा से बफ सिस्टम से खाये खातिर मांड़ो में जात रहे। पूरे पाँच दिन बरियात मरजाद रहे। सोनाधारी के त पयदले खाये खातिर जाये परल, आ खा के बावन चोप के सामियाना में हाँफत अइलन तऽ ढेर देर ले हाँफते रहि गईलन। पाँड़ेजी से आपन दुख रोवे लगलन, तनि सुसता के कहलन कि अजब हाल बा। गया गाँड़ आ बनारस पीढ़ा बा। कहल ह लोग कि छपन तरह के बेअंजन बनल बा एही लोभ में खाये गइलीं हँ। पँड़िजी पूछलन, "गोड़ घिंचत गईल ह का जे थउस गईल ह?"

ऊ कहलन, "हमनी के रेज केऽ के पूछऽ ता कि कवना गिनती में रहऽ ल?" ओही राज कुमार के पियकड़ी के परिनाम ह कि गढ़ मलकूट के, गढ़ पऽ, खेत कहाये लागल। गढ़ टूटे भहराए लागल त नरिया-खपड़ा फूट-टूट के छितरा गईल आ ओह जमीन पऽ खेती होखे लागल। ओह बधार के झिटकोरिया कहाला। राजा जगत पति पाँड़े के ऊहे इयादगारी रहि गईल बा।

ओहिजा से तनी मनी दूर डीघा पऽ बधार बा। जमीन आ खेत ऊँच बाड़े स, एह से डीघा बधार कहाला।

देवधारी काल्ह खिस्सा कहत रहन। भइँस के चरवाह नगेसर, बरमेसर, सोना मियाँ, सिवबचन माहटर आ सुखिया रउताईन आपन भइँस मैदान में छोड़ के, आपन डंडा-डुंटी ले के छोपिया आम तर बईठल रहन लोग। सुखिया साँचों के सुखिया रही। उनका सास

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

के लईका ना होत रहे त सिकरहटा मजार पऽ हर शुके जरूर जा के खेलावत रही। बड़ी दिन खेलावला के बाद में मेहनत से सुखिया के मरद के जनम भईल रहे। उनकर सास उनकरा से ई खिसा कहले रही। उनकर सास खूब ताड़ अस लमहर आ मोट-झोंट रही तबो सिकरहटा के पीर बाबा के भारी सेवा लइकोरी होखे खातिर करे के पड़ल रहे। जानीं जे पहाड़े ढाहे के परल रहे। शुक कबो नागा ना जात रहे।

सुखिया के बेटा-बेटी खातिर ऊ तीन गो भईस आ दू गो पाड़ी छोड़ गईल रही। सुखिया सुखी रही। मरद लोग जवरे दिन भर लीलबोरी साड़ी पहिर के भईंस चरावत रही।

छोपिया तर छाँह खातिर तऽ चरवाह लोग बइठते रहे, अउरी छोपिया बड़का गुदगर बम्बइया आम रहे। अतना फयलल रहे कि चारों ओर से जमीन के छोंपले रहे।

सभ चरवाह जवरे सुखिया टँगरी पसार के आराम से बइठल रही। महेन्दर सुखिया से पूछलन, "ए, रउताईन, ए गो बात बतऽइबू?"

मनीन्दर बाभन कहलन कि नीमन बात पूछबऽ त काहे ना बतइहें?

सुखिया ओही लोग ओरे ताकत रही कुछ कहली ना, चूपे रही।

महेन्दर पूछलन, "आछा रउतिनिया साँच कहिहे, रोजे मन करऽ लऊ?"

सुखिया तमक के चढ़ बईठली, "आरे नतिया, कुल्ह तोंहनी के छिनारे हवऽ स? तोहनी के इहे बात खाली बतिआवे के रहला?"

शिववचन रिटायर माहटर रहन। अपना पतोहिन से अहो, आहो कह के बतिआवलें, उनका कहे ला लोग कि ऊ मसहूर पीपीओ हवन। एकदिन रमेसर पाठक भईसी में समझवलेरहन कि पीपीओ माने पतोह पावन पदाधिकारी होला। ढेर लोग देहात में पतोह के बड़ी दुलार-प्यार करे ला।

शिववचन माहटर अन्डरबियर ना पहिरस। खाली लूँगिए पहिरले। ओह सुखिया के सामने ऊ चूका-मूका बइठल रहन।

सुखिया जब झमक के बोलली तऽ रमेसर पाठक सुखिया से कहलन, "माहटर साहेब बड़ी सोखाह मरद हवन। नइखू पतियात त निहार के देख लऽ?"

ओने सुखिया तकली तऽ शिववचन माहटर के बड़की चिरइयाँ प साक्षाते नजर पर गईल। ऊ त अइसन बइठले रहन कि उघारे रहन

सुखिया खिसिया के कहली "ई महटरवा के सऊँसे गाँव कहला एही से नू, एकर पतोहिया सऊँसे गाँव में हाला कइले रहे।"

झमक के सुखिया आपन डँटुली उठवली आ भईंस भीरी चलि गईली।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रमेसर पाठक कहलन कि बिन्देश सिंह के खिस्सा जानऽ तारऽ जा कि ना? कुल लोग चिहा के पूछलन, "का भईल ह?"

रमेसर पाठक कहे लगलन

"एह गाँव में दू गो नया घटना हो गईल बा। एगो तऽ बिन्देश सिंह के आठ बरिस के बेटा रहे, ओकर नरेटी चाँप के लोग मुआ देल।"

बरमेसर पूछलन, "मादा के बिन्देश सिंह के मुनवाँ बड़ा सुनर लइकवा रहे तवना के? एके बेटा सात-आठ साल के रहे आ पाँच गो बहिन रहीसऽ?"

रमेसर पाठक कहेलगलन, "हँऽ हँऽ उहे नातऽ दूसर लरिका उनका थोरे बा?

बड़ा बाबू कहत रहन। उनका एसकुल में पनरह तारीख के लइकन से फीस असुलात रहे। सभ माहटर अपना वर्ग में फीस लेवे लागल रहन। बिन्देश सिंह उजर पगरी बान्ह के एसकुल के हाता में दू-तीन बे गईलन आ गेट ओरे लवट गईलन। बड़ा बाबू देखऽलन। बड़ा बाबू कहलन कि हमरा आफिस में चलीं आ राम भजन से चाह दू गो अंगुरी देखा के ले आवे के कहलन। बिन्देश सिंह बड़ा बाबू के आफिस में बईठलन। बड़ा बाबू चपरासी से उनकर पईसा क्लास में भेजवा के उनकर छोटकी बेटी के फीस जमा करा देलन। चाह दुनों जाना पी लेलन। बड़ा बाबू कहलन, "लइकिया ना आइल ह त लइकवा से काहे ना फिसिया भेज देलीं हँ?"

ऊ रोवे लगलन। बड़ी देरी ले रोवलन। चुप भईला पऽ बड़ा बाबू बड़ी अफसोस करे लगलन, हम काहे के रउआ से पूछलीं कि रउआ दुख लाग गईल! अईसन जनतीं तऽ ना पूछतीं। बिन्देश सिंह कहलन, "इयाद पर गईल ह। एके लइका रहे। हम बनारस में पुलिस सिपाही रहीं। हमार भतीजवे ओकरा के नरेटी चाँप के मुआ देलन स। ए सरकार, ओहनीं के बाप के मर गईला प हमहीं पोस-पाल के सेयान कइलीं। अपना बेटा अस दुलार क के पढ़वलीं लिखवलीं आ उहे हमार धन लेवे खातिर हमार एक मात्र बेटा के मुआ देलन स। फेर रोवे लगलन। चुप भइलन त कहे लगलन, ओहनी के कवनो दोस नइखे। एह जबाना में जेकर केहू भलाई करे ला ऊ बीछी लेखा हुमच देला। ए सरकार ओहनी के साँचो कवनो दोस नइखे।"

"सरकार हम जवन कुकरम कइले बानीं ओकरे फल भगवान हमरा के देलन। ओहनी के कवनो दोस नईखे।" फेर रोवे लगलन। चुप भइलन तऽ कहलन, "रउआ के बता देतानीं, हम पेशाबो कइला के लोग से पइसा असुलत रहीं। अइसन एक से बढ़के एक कुकरम हम कइले बानीं। सभ बात रउआ से ना कह सकीला।"

ऊ चलि गइलन।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

छव महीना के बाद जेठ-असार में फूही फूही साँझि खा पड़त रहे। बिन्देश सिंह रिटायर हो के गाँवहीं रहत रहन। दुआर पऽ खटिया पर परल रहन आ कुछ सोचत रहन। भतीजा लोग एक बे आईल आ दूनों गोड़-हाथ मीसे लगलन जा। कहलन जा कि हमनी तहार लइका हईं जा कि ना? गोड़-हाथ मिसब जा। खेत जोते के देबऽ चाहे ना, देह दबाइब जा।

खटिया उठा के चल देलन जा कि आजु लिटी-चोखा के पिकनिक होई। घंसउआ ना चभकौवा लिटी चली, बिन्देस बाबू चिचिअइलन,

"हमार जान का मरऽ बऽ स रे ....?"

"आजु चिचिअइला में दम नइखे। आजु चभकौआ लिटी चली आ पिकनिक होई?" फेन, खूब लिटी चभकल कटोरा के घीव में।

अनगूते गाँव के लोग फराकित होखे जाये लागल तऽ बगइचा में अदिमी के रेला लागल रहे। बुझात रहेकि बिन्देश बाबू सूतल बाड़े।

***

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

खण्ड - 14

राधा कीहाँ जमावड़ा लागल रहे। लतिका, उनकर आरे की सखी आइल रही।राधा जवरे ऊ पढ़त रही। दूनों जानी में बड़ी भारी सखिऔरा रहे। दूनों जानीं जवरे सूतत रही जा। जवरहीं नेहात-खात रही जा।

लतिका जब खा के राधा जवरे पलंग प सूतली त एगो अपना आरे के घटना कहे लगली। दूबे जी केमिस्ट्री के नामी प्रोफेसर हवन। उनका बेटी के नाम सुमन दूबे ह। सुमन खूब धक-धकऽ गोर आ लमछर बाड़ी। गर्ल्स स्कूल में पढ़त रही त सभ लइकीन लेखा उहो नेहा धोआ के एगो लाल टीका करत रही। उनकर टीका देख के लइका लोग के जियरा हहरे लागे। करेजा में फुरहुरी होखे लागे। सभ लोगे उनकरा से चाहे कि एक बे बतियइतीं। ऊ केहू से बतिआवली त मुसुकाइए के बतिआवली। उनकर लाल ओंठ से रस चूअला। चमकत चेहरा भगवान अपना से गढ़ले बाड़े। लइका के, के कहो कवनो लइकियो उनका से बतिआवे के मौका खोजत रहली स।

पोरफेसर दूबे भीरी दूगो लइका (टिवशन)पढ़त रहन स। लतिका कहली, "एगो बसन्तपुर के बाबू साहब के तीसरका बेटा झमन आ एगो आरे हीं के बाबा जी के लइका रहे। दूनों साथी रहन स। सुमन दूबे के मैटिक के रिजल्ट फस्ट डिबिजन में भईल। दूनों साथी ओह दिन आपुस में राय करके बधाई देवे खातिर उपहार खरीदे गोपाली चौक प गइलन स। दूनों में बात भईल कि आपन-आपन (पसुगबती) खरीदीं जा। उपहार देवहीं के बेर हमनीयों के जाने के कि का ह?

बाबाजी हिन्दी-इंगलिश डिक्शनरी छोटकी खरीद के चमकीला रंगीन कागज में पैक करा देलन। ओने झमन सिंह के बाप हाई स्कूल के हेडमास्टर रहन। (मलगर) रहन। सोना-चानी के दोकान में जा के खूब चमकीला चान्दी के वजनदार रून-झुन आवाज करेवाला पायल तीन सौ पचास रोपेया में खरीद के आ पैक करा के घरे चल अईलन। घरे देरी ना कइलन, तुरते लेके दूबे जी के डेरा प पहुँच गईलन। ले जाके सुमन दूबे के बोला के उपहार देके खुशी में कहलन कि ल तहरा मैटिक पास भईला के खुशी में बधाई देवे के ले आइल बानीं। सुमन मुस्का के पूछली कि का ह? ऊ बोलन कि कहब नाऽ। घर में ले जाके देख लऽ। मन साँचों नाचे लागी। ऊ उनका

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ओर तीरछे तकली। झमन हँस देलन। ऊ घर में भीतरे जाके पैक खोलली आ पायल के निहारते रह गईली। खुशी ना ठटाईल। दूनों गोड़ में पहिर लेली। मिजाज गदगद हो गईल। तनी घरे में खड़ा हो के चलली त रून-झुन, रून-झुन आवाज सुन के मन में आइल कि नाचे लागस।

दाल चीनी डाल के पिओर दूध के अपने से दू कप चाय बना के ड्राईंग रूम में झमन के हाथ में मुस्का के देली। पायल बजावते गईली। झमन भी आवाज सुन के कहलन कि पायल त तोहरे गोड़ खातिर बनल रहे। देखऽ, भींजल कपड़ा अस तहरा में सट गईल बाड़े स। ई एह से सटल बाड़न स कि अब एको छन तहरा से हमरे लेखा हटल नइखन स चाहत। हटावला प हमरे लेखा इहो रोवे लगिहें स। ऊ पूछली, "तूँ रोवलऽ का?"

झमन नीचे मुँह झुका के बोललन कि ई पूछऽ मत। डबडबा गईलन आ मुँह पीछे फेर देलन।

ओही घरी बाबा जी डिक्शनरी के पैक ले के अइलन आ पूछलन झमन से कि पहिलहीं आ गईलऽ हाऽ?

आपन उपहार देलन आ सुमन के बधाई देलन। सुमन ले जाके घर में धऽ देली आ चाय के कप उन को के देली कि 'बाबाजी एक घोंट पी के त कहलन ठंढा हो गइल बा।

तुरते टाइम प परफेसर साहब आ गईलन आ केमिस्ट्री पढ़ावे लगलन। सुमन भी आ के एगो कुरसी प झमन भीरी बईठ गइली आ कहली कि ममी आज ईलायची डाल के सेवई बनावत बिया। नास्ता करके जई ह जा।

थोड़े देर में उनकर ममी चार गो कटोरा में चमच डाल के सेवई ले अइली। कहली कि खा लोग ना त सेरा जाई। पढ़ाई बन्द हो गईल। नास्ता होखे लागल। सुमन बराबर झमन प ताकत रही। ई बाबा जी के ना समझ में आवत रहे। ऊ कहलन कि हम बधाई में डिक्शनरी ले अइली हँ, तूँ का देलऽ ह झमन ? झमन कहलन कि हम त इनका के गीत सुनावे वाली इनकर एगो सखी आनदेलीं हँ। ई बराबरे पढ़त रहली। अब इनकर सखी गीत सुनावत रहिहें। सुमन के जियरा सुन के जुड़ा गईल। हँसे लगली।

फिर पढ़ाई शुरू भईल त बाबा जी देखलन कि अजबे दृश बा। पढ़ाई छोड़ के झमन आ सुमन एक हो जात रहे लोग।दूनों जने एक दोसरा प नजर गड़ा देत रहन। नजर से नजर के बात होत रहे। दूनों जने गदगद हो जात रहन। बाबाजी पढ़ाई छोड़ के ओही लोग के पढ़े में लागल रहन। बइठल केहू ना रहे। सभे कामें में बेचैन रहे। बाकिर प्रोफेसर साहेब के बात केहू ना सुनत रहे। प्रोफेसर साहेब तुरते समझ गइलन।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

समझे के उनकरा कुछुओ बाकी ना रहि गईल। प्रोफेसर साहेब बचपने से तेज विद्यार्थी रहन। उनकरा बिहारी के दोहा इयाद परल। कहत नटत रिझत खिझत नैनन ही सो बात। प्रोफेसर साहेब कहलन, अब जा लोग, तहरा लोग के आज पढ़े में नइखे मन लागत। इहे कहि के ऊ भीतरे अपना घरे चल गइलन।

सुमन खड़ा हो गईली आ कहली कि बइठऽ जा, जइहऽ जा मत। दालचीनी डलवा के चाह बनवा के ले आवतानीं, खूब मजा आई।

भीतर गइली आ ममी से कहि के फेर चल अइली। तीनों जने के बईठकी लागल। बात चले लागल। बीच में सुमन जाके चाह ले अइली। चाह के चुस्की चले लागल।

झमन कहलन बाबाजी के ओरे कनखी चला के, तहार उपहार उपयोगी बा, नीमन बा। सुमन के आगे के पढ़ाई में काम आई। तहरा सूझ-बूझ के हम सराहना कर तानीं। हमहीं बउराही कइलीं हँ। हमरो ओइसने उपहार ले आवे के चाहत रहे। सुमन उनकरे मुँह ओरे ताकत रही। आ आँखि से हँसत रही। खूब मुस्का के झमन प धेयान लगवले रही। झमन भी भीतरे-भीतरे खुशी से एकदम भींजल रहन। सुमन, झमन के व्यंग आ मसखरा खूब समझत रही। एकरा पहिले सुमन दूनों जने से बराबर दूरी आ लगाव-सटाव राखत रही, बाकिर आजु अन्तर आ गईल बा दूरी में । ई बाबाजी के बुझाता। उहो बउराह थोड़े हवन? झमन के बुझा गईल बा कि आज बहुते नियरा हम पहुँच गईल बानीं। उनकरा 'सन्निकर्ष च गच्छति' के बात बुझाए में तनिको कमी नइखे रहि गईल। ऊ जानऽतारें तमे वेच्छन्ति योषितः'। एह से उनकर जियरा रस से सराबोर बा। आजु त उनकरा जवन टास्क मिली, पूरा कर दीहें।

बाबाजी के ओहि लोगिन के लुका-छिपी तनिको सोहात ना रहे। उठि गइलन आ जम्हाई लेके कहलन, चले के। फेन चलि दिहलन। झमन उनकरा के जात देख के उठलन बेमन के, आ मुस्का के सुमन ओर ताकते आगे बढ़ गइलन।

अब रोज पढ़े आवे लोग त भीतरे-भीतर एगो अउरी पढ़ाई, चले लागे। एकर अब तार टूटे के कवनो जोग ना लउकत रहे बाबा जी के। उनकरा बुझाय कि रोजे एगो नया खेल चल रहल बा, आ उ ओह में पार्टनर नइखन। सुमन आ झमन खेलाड़ी बाड़न। ऊ त खाली दर्शक भर रहि गईल बाड़न। अनाड़ी बाड़न!

बाबाजी भारी फेर में बाझ गइलन। उनका कवनो डगर ना मिलत रहे जे उहो पहुँचे के रियाज करस। उनकर करेजा मुँह तक आवे लागल। दिल में नोचनी लाग गईल। दिमाग सनके लागल। ऊअस्त-व्यस्त हो गईलन। कवनो काम में मने ना लागे। नींद एकदमें उचट गईल। भूख भाग गईल। उनकर माई रोजो कहस कि तोरा का हो गईल बा। बैद जी के बोलवली। देखवली। बैद जी नाड़ी धइलन, बुखार ना रहे। दस्त

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ठीके होत रहे, भूख के एगो दवाई देलन। कहलन दोसरा दिन फेर दवाई बदलब। बैद जी उमरदार रहन। दोसरा दिन पूरा दिनचर्या पूछलन। टिवसन के के पढ़ऽला? ओहिजा के-के रहेला? सुमन नाम के जब खुलासा भईल त बैद जी रोग पकड़ लेलन। उनकरा माई से अलगे ले जाके कहलन। आरे एकरा लभलाइटिस हो गईलबा। एकर दवाई इहे बा कि जतना फुर्ती होखे कहीं बिआह कर द। सब रोग आ भूत-प्रेत मलारी में भाग जाई। उनकर माई बैद जी के निहार के मुँह ताके लगली...।

बाबा जी फेर रात भर ना सूतलन। रोटी-दाल माई कह सुन के, बबुआ-बचवा कह के खिअवली। पलंग प परलन, बावें करवट, छने में दहिना करवट, फेन चिते, फेन छाती के भरे, उँघी भागि गईल।

सोचे लगलन, भिनसार हो गइल बाकी उँघी लगबे ना कईल। फराकित होवे चल गइलन। बहुत देर ले ओनहीं रहलन। का करे के चाहीं, समझ में ना आवत रहे। नाहर ओरे चल गइलन आ दिनभर बेखइले-पिअले अकेले ओनहीं रह गइलन। साँझ भईल त झमन के डेरा ओरे जाये लगलन। झटक गइलन आ अन्हार होते झमन के तीन मंजिला डेरा के छत प चढ़लन? झमन मोबाइल प हँस-हँस के सुमन से बतिआवत रहन। पूरवारा जाफड़ी प तिरछे ऊ बइठल रहन। देखलन कि बाबा जी एकदम उदास आवऽ तारन। हाथ के इशारा से बोलवलन? बाबाजी, भीरी जब पहुँलन त झमन मोबाइल प कहलन कि का कहतारू, हम तहरा खातिर जान दे देब। ओही घरी बाबाजी उनका पीठी प जोर से घूसा मार देलन। एको छन देरी ना भईल। झमन धायँ से तीन मंजिला से नीचे फेंका गइलन। कपार फाट गईल आ जान चल गईल।

उनकर बाप एगो हाई स्कूल के हेडमास्टर रहन। तीन गो बेटा लोग रहे। बड़का बेटा वकील रहन। दोसरका गाँव में एक गली से ओह गली में डोलत चलत रहन। उनका मेहरारू समझवली, बाबू जी से दू लाख रोपेया माँग के दोकान करऽ। बाबूजी से कहलन त बाबू जी सोच-विचार के रोपेया दे देलन। गाँव के कवनो उनका बड़का बेटा के फोन कर देलक। साँझि खा वकीलो आ गइलन। रक-झक होखे लागल। उहो दू लाख माँगे लगलन। धसोरा-धंसरउअल हो गइल, रगर-झगर, गाली-गलौज एको बाकी ना रहल मास्टर साहेब रात में सलफास खा के सूत गईलन।

एक बे बिकरमगंज छेत्र के एगो बाबा जी हेड मास्टर, पिनसिन बैंक से निकाल के चललन त एके बेटा रहे, बगली से कुल रोपेया निकाल लेलक। पेशाब करे, जनेव कान प चढ़ा के सड़क किनारे बइठले त पाँडे जी बइठले रहि गइले। मोलबी साहेब लेखा बेटा मुर्गी से एके बे अंडा निकाल लेलक!

***

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

खण्ड - 15

बसन्तपुर के पश्चिम दू कोस प दनिआँव बाऽ। एगो खूब पाकल जामुन अस माहटर रहन। दू गो बेटा-पतोह लोग रहे। रिटायर भईलन त दूनो बेटा आ दूनों पतोह रोपेया बाँटे खातिर जाम-जुद्ध कईल लोग। थपरा-थपरी भी हो गईल। आपन मेहरारू के उनका नईहर ओही दिन पहुँचा के मास्टर साहेब रेलगाड़ी के पहिया तर सूत गईलन। उनकरो खीसा खत्म हो गईल। एह से समाज बड़ा विकास कइले बा, ढेर बेटा अइसन बाड़न नाँव करे वाला। कहावत बाऽ "जियत पिता से दंगम दंगा आ मरे पिता पहुँचावऽ गंगा।" काहे कि जियता भर में जे लड़ाई बेटा कइले होखस बाकिर बाप मरला पर गंगा जी में जरूर पहुँचा देला लोग! एह से मान-मरजाद समाज में बढ़ऽला।

"बसन्तपुर के पश्चिम बरियारिया टोला बा। भूमिहार ब्राह्मण लोग के टोला ह। बारह-चौदह घर त बाभन बाड़े बाकि त खूब सुखी बा लोग। नहर किनारे गाँव बा पानी खेते-खेते दउरे ला। साल में तीन फसज उपजावऽ ले जा। सब लोग में बड़ा मेलजोल रहेला। बिआह-शादी चाहे कवनों परोजन होवे, बुझाला कि सउँसे गाँव के परोजन ह। एके घर ठाकुर जी बाड़े। उनकर लइका अपना मेहरारू के घर में बन्द क देलक आ मुवा देलक। केहू कानों-कान दोसरा गाँव के ना जानल। फेर ऊ ठाकुर अपना लइकवा के विआह क देलन। ओकरा से तीन गो करिया-करिया बेटा बाड़न स। तीनों खूब पढ़ल बाड़े स आ बाहरा नोकरी करेलन स। ओहिजे के रिषीश्वर शर्मा हमरा जवरे एम.ए. में पटना पढ़त रहन।"

"मलार किनारे पेड़ के नीचे राधा आ उनकर कुल सखी लोग बइठल रही। किशुन आज इहे खिस्सा कहत रहन।

"रिषीश्वर करिए आ पतरे लमछर रहन। हमनी के दूनों संघतिया एम. ए. के क्लासों में जवरहीं एक साथे बइठत रहीं जा। लिजर होखे त नदी किनारे घाट प बइठ के घंटन बतकुचन चली।

राधा कहली, " त तूँ लरिकाई से खूब बतकूचन के ट्रेनिंग ले ले बाड़ऽ।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

किशुन डँटलन, "अब बहस करे लगलू, त ल ना कहब कुछ, तोहनिएँ लोग कहऽ। हम बत कूचन करे वाला हइं त आज खाली सुनब, ल, बन क देलीं हम बोलल।"

कुल्ही सखि लोग उनकरा के डाँटे लागल। "राधा तहरा अच्छा नइखे लागत त कान मूँद ल। हमनी के कथा सुनब जा।"

राधा कहली, "हमरा प खिसिया गइलू जा, त लऽ अब हम कुछ ना बोलब किशुन, आगे कहऽ?"

ऊ कहलन, "तहरा नीमन नइखे लागत त ना कहब। हम चुप रहब।"

राधा उनकर गोड़ छू के दूनों हाथे गोड़ लगली आ आरजू कइली,

"अब कुछ ना बोलब, आगे कहऽ?"

किशुन मुस्काए लगलन त राधा उनकर हाथ तनी दबवली। मुसुका के किशुन कहे लगलन।

"हमनी के दूनों संघतिया में बड़ा बनत रहे, एके संगे बजारो करत रहीं जा, पुस्तकालय जात रहीं जा, आ शर्मा जी प्रोफेसर के डेरा प साँझि खा रोजो जवरहीं जात रहीं जा। क्लास में कुल पचहत्तर गो लइका लइकी रहन। सब लोग हमनी के दूनों अदिमी के संघतिआरो के जानत रहे लोग। एगो त सिंह जी हमार नाँव बर्मा जी कह के शर्मा से तुक मिला दे ले रहन। शर्मा के शर्मा जी आ हमरा के बर्मा कहस। उनकरा कँपिया पर हम दसखत क देत रहीं त रोज हमरा के सरापस कि तूँ माहटर होईबऽ। सांचो हम माहटर त ना, अउरी नीचे कलर्क हो के जिनिगी नापऽ तानीं।"

"अतिना कहि के हम चुप हो गइनीं आ भीतर दुख बुझाइल। सिंह जीउवा के सराप हमरा लागि गईल। कबो-कबो हम इहे कहे उनकरा डेरा प जाइला। कहिला कि तूँ बहुत स्वार्थी आ बदमास हवऽ। अपने प्रोफेसर हो गइलऽ आ हमरा के सराप के कलर्क बना देलऽ।"

ऊ ई सुन के हँसलन। का कहऽलन, "तूँ अबहीं ले उहे गिरह परले बाड़ऽ। ल हई अमरूद खा, उ सब छोड़ऽ। पतोह चाह बनावऽतारी पिअऽ। लरिकाई के बात छोड़ऽ।"

"शर्मा जी दू भाई रहन। बाबुओ जी जिअते रहन। बाकिर बाबूजी कवनों बात होखे त बड़का बेटा आ पतोह के पछ ले के बोले लागस। नीमनो बात में शर्मा के ऊ बिरोध में रहत रहन, बोलत रहन।"

"असल में बात ई रहे कि बड़ लइका खेती करत रहन। आ शर्मा बगल के हायर सेकेंडरी एसकुल में एम. ए. ट्रेन्ड के स्केल में पढ़ावत रहन। दू सै- पचासी रोपेया महीना मिलत रहे। उनकर मेहरारू मगहिन रही। जहिया महीना एसकुल से

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मिले, ऊ सब उनकर बगली झार लेत रही। रोज बींड़ी पीए के चार आना उनकरा के बगली में बे मंगले डाल देत रही। घर के खरचा के एको पइसा ना देत रही। ससुर कबहुँ तेल-नीमक, मर-मसाला आ खेत के खाद-पानी खातिर माँगस त मगहिन टपाक से कह देस, "पइसा कहाँ बा कि हम देतइन। पइसा त लइकन के पैन्ट शर्ट आ टिवसन में लाग जाहे। पइसवे कतना मिलऽ हे। महटर के कवनो नौकरी हे? खाली कहे के नोकरी हे, नोकरी में कवनों दम ना हे। आ झमक के अपना घर में घुस जाली।"

"एह से भाई-भौजाई आ बाप सभे तड़कले रहत रहे। सोझ भाषा में केहू ना बोलत रहे। शर्मा से जब बात होखे त गरमे-गरम होखे। नरम बात कहियो ओह लोग से ना होखे। बाप त हर मेसा अइँठिए के बोलत रहन। शर्मा ओह लोग के व्यंग-बान से कउँच जात रहन। उनकर बी.पी. डेढ़ा-दोबरी हो जात रहे। एह से ऊ नहा-खा के टाइम प साइकिल प सवार हो जात रहन आ ओह लोगिन से बात करे से बराबर बचे के हर कोशिश करस। एही तरी जिनिगी कटत जात रहे। एके राह से चले से जिनिगी में कवनो रस ना रहि गइल रहे।

एक दिन शर्मा जी खा-पी के अपना एसकूल चल गइले। उनकर दूनों बेटी आ बड़का लरिका खाके अपना गाँव के एसकूल में पढ़े चल गइल लोग। छोटका लइका कहलस कि खाइब ना, दूध पीअब। गिलास में दूध बरामदा में धइल रहे। उनकर माई दूध के गिलास दे के कपड़ा फींचे लगली। छोटका दूध पी के घर में खटिया प सूत गईल, त सूतले रह गईल। दुपहरिया में मगहिन खाये खातिर जगावे गइली त उठबे ना करे। देह झकझोर के जगावे लगली त लरूआ के गिर जाय। बाद में उनका बुझाइल कि मर गईल बा। झवान होके ओकरे प गिर गइली। चिचिया के रोवे लगली गाँव के लोग के भीड़ लाग गईल। शाम के शर्मा जी अइलन त भीड़ लागल रहे। उहो बड़ी रोवलन। रात में भोजन ना बनल। सभे उपासे रहल।

ओह दिन से शर्मा जी रोज अपने जवरे बड़का बेटा आ छोटकी बेटी के नेहवावत-खिआवत रहन अपना साथ।

एक-डेढ़ महीना के बाद सनीचर के खींचड़ी बनत रहे। शर्मा जी दुआर प लइकन के साथ लेके नेहाए गइलन।

नेहा-धोआ के अइलन त खिंचड़ी-चोखा तइयार रहे। शर्मा जी लइकन से कहलन कि आवऽ जा गरमे खालींजा ना त खिचड़ी सेरा जाईं। शर्मा जी के साथे उनकर छोटकी बेटी आ बड़का बेटा एके थाली में खाये लागल लोग। शर्मा जी आपन मेहरारू से कहलन कि खिंचड़ी आजु बढ़ियाँ नइखे लागत। उनकर मेहरारू

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कहली, "काहे नीक नइखे लागत। सब त परोसले बानीं। खिंचड़ी, चटनी, चोखा, घीव, अँचार, ई खिंचड़ी के चार इयार । बाकी का बाऽ?"

शर्मा जी के एसकुल जाये के लेट होत रहे। जल्दी-जल्दी भकोस के हाथ मुँह धो लेलन। साइकिल उठवलन आ पैडिल मरलन। शर्मा जी के भौजाई कनछिया के तकली। तली शर्मा जी राह धईलन।

दूनों लइका-लइकी आपन-आपन ड्रेस पहिन के गाँव के पछेयारा एसकुल में बही-बस्ता झोरा में लेके चल गईल लोग।

शर्मा जी के हाई एसकुल चार माइल दूर रहे। एसकुल में तीस-चालीस गो लइका-लइकी आइल रहे लोग। एसकुल लागे में पनरह मिनट देर रहे। शर्मा जी ऑफिस के दुआरी प पहुँच के साइकिल लेले गिर गइलन आ छटपटाए लगलन। लइका लइकी दउरल लोग। गोड़-हाथ ध के टाँगे लागल लोग। टँगाते ना रहन। लार-पुआर हो के गिर गइलन। कहलन, "आइ हो दादा, भौजइया कनछिया के तकलक हे, जहर दे देले बीया खिंचड़ी में। हमरा लइकवन के देखऽ जा दादा!"

इहे कहि के शर्मा जी शान्त हो गइलन।

दू गो मास्टर लोग साइकिल से उनका गाँवे सरपट भगलन त दुनों बेटा-बेटी के एसकुल में परान निकल गईल रहे। भीड़ लागल रहे। दूनों मास्टर लोग कहलन कि शर्मा जी मर गइलन। मरे के पहिले कहलन हँ, "भौजाई खिंचड़ी में जहर दे देले बिया दादा।"

गाँव में हाहाकार मच गईल। शर्मा जी के मेहरारू के दाँत लाग जात रहे। बड़की लइकिया खूब चिचिया के रोवत रहे। "आइ हो बबुआ, आइ हो बाबूजी....!" सभे घेरले रहे। भारी अचरज के घटना हो गईल। जवार में अइसन कबो ना भईल रहे। भाई-भउजाई आ बाप तीनों जाना बिहने भीतर चल गईलन। शर्मा जी के त संघार हो गईल।

***

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

खण्ड - 16

ललिता कहे लगली,"बसन्तपुर के पुरवारा गाँव में ललन ओझा माहट्टर हवन। ऊ एक दिन दुपहरिया में थाना में बड़ा बाबू से मिललन। दरोगा पाँड़े जीं रहन। ऊ परिचय पूछलन। ओझा जी कहलन कि एही पूरूबारा गाँव में रहीला आ मिडिल एसकुल में अंगरेजी के मास्टर हईं। पाँड़े जी चौकीदार से एगो अउरी कुरसी मंगलन। अपना गमछा से चौकीदार आधा कुरसी झार के उनका भीरी धइलन। फेन से अपना हाथे कुरसी पोंछ के आ मुँह से फूँक के ओझा जी कुरसी प बइठलन।

पाँड़े जी ओर ताक के आ दूनों हाथ जोर के ओझा जी कहे लगलन, ''सरकार हम त बड़ा फेरा में पड़ गईल बानीं।''

बड़ा बाबू पूछलन, ''का फेरा बा, साफ-साफ कहीं?'' ''रउआ त मास्टर हइं। हमनी के पुलिस के नौकरी बड़ी झंझटी बा। दिने राते जूझे के बा। देखीं ना, राते-रात भर जगले बानीं। दउरते बीतल बा। ठेकइचबा के पकड़े गइल रहीं जा, पकड़इबो ना कइल आ जीप बाहा में उलट गईल। ड्राइबर साला पी के गईल रहे। ओकरे हाथो मुरकल बा हमनी के त जान बाँच गईल। राति जान ले के भगलीं जा।''

''आछा रउआ आपन कहीं, का फेरा लागल बा, कवनो गार्जियन से मार-पीट हो गईल बा, आ कि आपुसे में शनीचरा बाँटे में चाहे खिंचड़ी-चोखा बाँटे आ गहुम बाँटे में झगड़ा भईल बा?''

ऊ कहलन,''ना सरकार, हमनी के त हेडमास्टर चौबे जी बड़ी नीमन अदिमी हवन। जवन लइकन के खिआवे से बाँचऽला, बराबर-बराबर बाँट देलन। एसकुल में कवनों तरह के झंझट नइखे। ऐडमिशन में जवन पइसा बाँचऽला। हमनी के सभ अदिमी एके में के कुर्त्ता पायजामा सिअवा लेलीं जा। आ सभ अदिमी कवनों आगे के भविष्य खातिर चिट-फंड जमा करी ला जा।''

''कवना फेरा से आईल बानीं, उहे कहीं?'' पाँड़े जी, बड़ा बाबू पूछलन।

''देखीं ना, पहिले हमार बड़का लइकवा रोपेया-पइसा खातिर हमरा जवरे गारी-बात करत रहे। अब ओकर लइकवा सेयान भइल बा, दोकान खोले खातिर रोजे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दस हजार-बीस हजार माँगऽता। कहाँ से दीहीं? मास्टर हईं। हम टिवसनों ना करीं। कुल लइका जानऽ ले स, एसकुल में। हमरा घुस के नोकरी बा कि हजार के बजार करऽ तानीं? काल्ह मार के थपरा से हमार गाल फुला देले बा आ डंटा चला देलक, हाड़े प लागल, बुझाइल जे परान निकल गईल। देखीं बाँह करिया हो गइल बा। अब ठटात नइखे, एही से अइलीं हँ। रउआ गाँवे हमार भतीजी बिआहल बिया। हिते हईं। एफ. आई. आर. लिख के ओकरा आरेस्ट कर लीं, एके बे में सुधर जाई। फेन हमरा ओरे तकबो ना करी। इहे मदत करीं?''

दरोगा जी कहलन,''दसखत क के हमरा के पेटिसनवाँ दीं। रउआ जाईं। हम काल्हु रउरा दरवाजा प आईब, निश्चिन्त जाईं।''

ओझाजी मने-मन सोचत जात रहन, काल्हु सारे के बुझा जाई, माजा ढिल हो जाई, चूतर प जहाँ चार डन्ट लागी कि मिजाज काबू में हो जाई। सब हर हँगई भुला जाई। केहू से हम कहब ना। सेठवा से चलऽ थोरे काजू-किसमिस दरोगा जीवा, के स्वागत खातिर इन्तजाम क लेवे के चाहीं। ऊ दुर्गा सेठ के दुकान से प-प भर दूनों कीन लेलन आ गाँवें चल गइलन।

दोसरा दिन पाँड़े दरोगा आठ-नौ बजे सबेरहीं ओहिजा पहुँचलन । हैट एक हाथ में लेके ओहिजा चौकीदार के बोलऽवलन आ कहलन कि ललन ओझा के दुआर प चल। ऊ लिया गईल।

ओझा जी के राते नीन्द ना आईल। रात-भर सोचते एह करवट से ओह करवट करते रहि गइलन। बड़ी गदगद रहन। सारे दुइए हंटर में टेकुआ अस सोझ ना हो गइलन त हम नाँव बदल लेब। पुलिस से अबहीं इनका भेंटे नइखे भईल। पुलिस-दरोगा कहाला का? दिमाग राहता धऽली। मिजाज दुरूस्त हो जाई।''

दरोगा जी के देखते मने-मने बाग-बाग हो गइलन ओझा जी, आ खड़ा हो के परनाम कइलन। कुरसी उठा के देलन। आ कहलन, ''दरोगा जी चउकीदार से बोलवाईं आ हईं तनी पानी पी लीं।'' दरोगा देखलन कि टेबुल प पहिलहीं से कस्तरी में काजू-किसमिस आ थोरे नमकीन रखल बा। सीसा के गिलास में पानी रखल बा आ बगल में पितरिया लोटा में पानी बा। दरोगा कहलन, आछा पानी पिअल जाई। तनी काम कर लेवे दीं।

चउकीदार ओरे तकलन कनखी से, कहलन, ''इनका नाती के बुलाव तो, कवन है?''

राम दुआरी प से चिचिअइलन, ''विपिन जी, विपिन जी, हेने बहरी आईं'' विपिन भीतरहीं से आवाज पहिचान के कहलन, ''का हो चौकीदार, भोरहीं अनमुनाहें में केने से पहुँचलऽ?'' हेने बहरी आईना?

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चउकीदार भूँजा आवतानीं गइया के चला लेवे दऽ।''

तुरते हाथ धो के बहरी अइलन त पूछलन, ''काहो भूँजा, का कहतारऽ?'' तली हैट वाला दरोगा जी पर नजर परल, आगे बढ़ि के दूनों हाथ जोर के परनाम कइलन।

''बिपिन तुम्हारा ही नाम है?''

''जी दरोगा जी, हमरे नाँव बिपिन ह।''

बिपिन अचरज में दरोगा जी भीरी खड़ा होके देखते रहि गइलन। ओने ललन ओझा खड़ा रहन, भीतरे-भीतरे खूब खुश होके दरोगा जी ओरे तकलन।

''ई ललन ओझा तुम्हारे कौन हैं? इनको मारा-पीटा है?''

''सरकार हाथ जोरऽतानी, तनीं हमरा अंगनवाँ में चलीं, सभ बात समझ में आ जाई। हमरा कुछ कहहुँ के ना परी। एसपाट प सरकार तनीं चलीं। राउर दोहाई बा, सरकार। हमरा कहे-सुने के ना परी, अपने किलियर हो जाई।'' बिपिन जोर दे के अरजू कइलन। दरोगा जी डपट के बोललन,''हम जो पूछते हैं, उसका जवाब दो, इनको क्यों पीटा है? इनका हाथ डन्टा के चोट से एकदम घवाहिल हो गया है, काला दाग साफ साफ अभी तक दिखलाई पड़ रहा है। सनक चढ़ गया है तो अभी दो मिनिट में उतर जाएगा। क्या समझ लिया, अंगरेज गया तो सासन खतम हो गया, जो मन में आएगा सो करेगा?''

बिपिन दरोगा जी के दूनों गोड़ ध लेलन आ घिघिया के कहलन, ''हम राउर गोड़ धरऽतानीं, तनी-मनी हमरा आँगना में चलीं, रउरा देखि के हमरा के बीस जूता मारब, हम कुछुओ ना बोलब।'' बिपिन दरोगा जी के गोड़ छोड़त ना रहन त दरोगा जी डपटलन, ''हमको दरोगी समझ रखा है क्या?

ललन ओझा कहलन, ''रउआ पूछीं कि काल्हु ई, हमरा के डन्टा से मरले बा कि ना? अँगना में का धइल बा कि जाइब। मेहरारू बाड़ी सन अँगना में, ऊ का कहिहँ सन?''

बिपिन ओइसहीं गोड़ धइले फेर घिघिअइलन, ''सरकार हमार जान मार देब बाकिर हमरा अँगना में चलीं, नातऽ हम राउर गोड़ ना छोड़ब, हमरा के कतल क दीं।''

दरोगा जी कहलन, ''कारे भूँजवा ई त गोड़े नहीं छोड़ रहा है?''

भूँजा सलाह देलन, ''सरकार ई अतिना कहतारे त चलीं अँगना में देखि लीं, का बा अँगना में?''

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दरोगा जी फेर डपटलन, ''छोड़ो पैर, चलो अँगना में देखते हैं क्या देखने को कहता है?''

दरोगा जी भूँजा के साथे लेके भीतरे अँगना में गइलन, बिपिन आ ललन ओझा भी दूनों जने जवरहीं अँगना में घुसलन। मेहरारू एक ओर घूघ तान के खड़ा होके कनखी से देखे लगली स कि ई के-के आ गईल। बिपिन कहलन, ''सरकार इनका हिस्सा में हई पछेयारा दूनों घर बा। हे में चाउर-गहुम ध के ताला लगवले बाड़े। खटिया-मचिया नइखे, खोलवा के देख लीं। हई पहिलका घर में तनीं धेयान से देखीं, एगो पलंग बा, तोसक आ दूगो तकिया लागल बा, होने कोना में मछड़दानी बाती सहींते रखल बा, रोज छोटकी पतोह जवरे इहाँ के एही प देह में तेल लगवाईला आ सूतीला, रस काटी ला। अब इन्हीं करो से पूछि लीं, आ जतिना मारे के होखे, हमरा के जूता से मारीं।'' पाँड़े जी बहरी दुआर प आके भूँजा से कहलन, '' तुम जाओ, हम भी अब जाते हैं। ई केस हमरे मान का नहीं हैं, तीन कनउजिया, तेरह चूल्हा।''

तुरत हीरो हुन्डा स्टार्ट क के दरोगा जी फुर हो गइलन।

***

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

खण्ड - 17

दोसरा दिन सभे जब मलार किनारे जुटल त धनपातो आ सुमेसर पहिलहीं से बइठल रहन जा। सुमेसर कहत रहन धनपातो से, "बसन्तोपुर में एक से एक अदिमी बाड़े। सँवरू एक दिन बहरी वाला चापा कल प नेहात रहन्न। लतिका आपन भतीजा के खेलावत रही। लतिका के रूप त देखते बनेला! ओकर देह कतहीं से दूसे लायक नइखे। अप्सरा अस चहकत चलली। ऊ बइठ के फरके से सँवरू के नेहाइल देखे लागल। सँवरू पिअर्स साबुन लगा के देर तक खादी के मोटा गमछा से देह में रगर-रगर के नेहइलन। लतिका लईका खेलावत रही आ धेयान से उनकर नेहाइल देखत रहली। ई बात सँवरू से छिपल ना रहल। दोसरा दिन से लतिका जब पढ़े जाली त सँवरू मुँह धोवत रहले आ लतिका के पीछा रोजे मुँह धोवते लाग जाले, कबहूँ पिछुआ ले त दउरहुँ लागेले। एक दिन त लतिका, घरे कॉपी छूटल बिया, इहे बहाना एसकुल में क के आ एसकुल में से उनके खातिर चल अइली। फेर पता ना उनके जवरे काहाँ गइली। एहु घरी रोज सुबह-शाम सँवरू लतिका के स्वागत खातिर अपना घर भीरी चहलकदमी करत रहले। बेचैन रहले। कहियो मुँह धोवत रहले आ गीध दृष्टि लगवले रहले। कहियो त नीचे से ऊपरे छत प ले दण्ड-बैठक करत रहले कि कब लतिका अइहें। लतिको उनकरा खातिर ओतिने तरसत रहली आ कहियो-कहियो लाज सरम छोड़िके उनकरे घरे घन्टन जा के बइठ जाली आ केहू पूछला त कहली कि परसादी लेवे गइल रहीं। साम-सबेरे जाये से उहो ना चूकस कहियो।

सँवरू के खूबी बा कि भर दसहरा बड़ी पूजा करेलन।रोज नीचे के फूल रतिए में लोग तूर ले ला त सँवरू फूल के पौधा प चढ़ जाले आ फूल तूर के जरूर से जरूर पूजा करले।

लतिको पूजाई के पनरहन दिन पहिलहीं से भोरहीं नहा-धोआ के शिवजी के आ काली माई के परेम से पूजा जरूर करली। सबेरे नेहाए से कबो-कबो सरदी-बोखार से बेमार पर जाली। कतना लोग कहेला कि सँवरूआ बदमास ह तबो लतिका ओंकरा भीरी गईल ना छोड़ली।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अतने ना, एगो सिंक अस पातर बा गाँव में, ओकरा बिना लतिका एकोछन ना रह सकेली। सुन लीहें कि ऊ आ गईल बा बनारस शहर से त कवनो बहाना से लतिका ओकरा भीरी जरूर पहुँच जइहें। जब ले पूरा रात ना हो जाई तबले ओकरे साथे बतिआवत रहिहें। ओहिजा उनका घन्टा-मिनट ना बुझाई कि कतिना देर भईल। ओहिजा लतिका टाइम एकदमे भुला जाली। उनकर माई-बाप अपना काम में लोग लागल रहेला। ऊ ओहिजा टीबी देखत रहली आ आपन घर भुला जाली। उनका जवरे अपना छत प कसरत करली। कहली कि डाक्टर टहले के कहले बाड़े।

***

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

खण्ड - 18

धनपातो किशुन कीहाँ दउरल पहुँचली। किशुन पूछले, "काहे हाँफऽ तारू, कहऽ? बुझाता कि हाँफत-हाँफत सकदम भईल बाड़ू? का बात बा?"

ऊ कहली, "अइसने बाते बा। राधा के मामा बड़ी बेमार बाड़े, लागता कि बचिहें ना।"

"का भईल बा?"

"बोखार लागत रहइन। आज बोल-चाल एकदम बन हो गईल बा, आँख नइखे खुलत" धनपातो बतवली।

किशुन बाकस में से सै-सै के दस गो नोट निकाल के कुरता के भीतरी बगली में रखलन आ जवन कुरता धोती पहिरले रहन उहे पहिरले चल देलन।

राधा के घरे भीड़ लागल रहे, लोग कहत रहन कि अब साँस नइखे चलत, अब ई बाड़न ना। राधा आ उनकर मामी उनकर गोड़ धऽ के जार-बेजार रोअत रहली जा। राधा के कुछ ना बुझात रहे कि का करे के चाहीं। पूँका फार के रोवे लगली जब किशुन के देखली। किशुन समझवलन, "रोवऽमत। अदिमी के हाथ में का बड़ुए, सभ ऊहे ऊपर वाला के हाथ में बा, जे करे, उहे माने के बा। रहऽ हम देखऽ तानीं।"

किशुन बायाँ हाथ के नाड़ी धइलन त नांड़ी में तनिको दम ना रहे। देह पाला हो गईल रहे। टोवलन आ राधा ओरे मुड़ के कहलन, "रोवल बन्द करऽ, आगा के कार-बार अब देखे के चाहीं।"

पनेसर के बेटा धनेसर कहलन कि हम गाड़ी ठीक करे जातानीं, आ बहरी चल गइलन। किशुन देखलन कि धनेसरा बहुत बदमास ह, गाँव में एकर बदनामी बा, ई कइसे चल आईल एहिजा नइखे बुझात। राधा से पूछलन त पता चलल कि कल्हुए से जब उनका मामा के तबीयत दमा से जादे बिगड़ल त क गो अदिमी जुटल रहले। ओही घरी अपनहीं आ गईल रहन। रात भर धनेसर बड़ी देखभाल कइलन हँ। राते खइबो ना कइलन। कबे खाये के कहलीं, बाकिर ना कुछुओ खइलन। एक गिलास पानी एगो गुड़वाला बतासा के साथ पी के अबहीं ले बाड़न। राते जगले रहि गइलन,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बड़ी कठजीव बाड़न। देखऽना, बेखइले-पिअले गाड़ी ठीक करे चल गइलन, राधा रोवते-रोवते कहली।

राधा अतिना देर ले सब एह से समझा के विस्तार से कहली काहे कि किशुन उनका के सैकड़ों बे पहिले उनकर अनेकन घटना सुना के मना करले रहन धनेसर से बोले के। उनकरा मन में ई भर देले रहन कि गाँव में सबसे बदमास पनेसर के बेटा धनेसरे हवन।

किशुन देखलन कि धनेसरा रात भर में जमा लेले बा। राधा ओर फेर ताके लगलन त राधा कहली कि रातों भर मामा के सेवा में लागले रह गईलन। कबे कहलीं कि जा सूतऽ गऽ, बाकि इ मामा भीरी बइठले रह गईलन, हमरा से कुछुओ अनट-सनट ना बोललन। बड़ी नीमन अदिमी बाड़न।

किशुन सभ सुन के भौंचक हो के सुनते रहि गईलन। उनका दिल में अजबे भाव उठत रहे, जतने ओकर बड़ाई सुनस, ओतिने देही में आग लागल जात रहे।

किशुन कहलन, "तू हमरा के काहे ना खबर कइलू? हम एही गाँव में नूँ रहीं?

"तहरा ई ना चाहत रहे करे के। अच्छा, अब एह घरी ई सब छोड़ऽ, जवन होता ऊ होखे द।"

राधा कहली, "त उनका के बोलवा लऽ आ दोसरा केहू के गाड़ी ठीक करे के भेज दऽ।"

तली ओही घरी धनेसर नरियर के रस्सी, लोहा के काँटी आ कफन के कपड़ा लेले आ गईलन। आवते कहलन,"गाड़ी एही जे बजारे प मिल गईल ह, तुरते दस पनरह मिनिट में आ जाई। जल्दी से तइयार होखे के चाहीं, नातऽ बगसर से लवटे में रात हो जाई।

किशुन फेर कुछ ना बोललन। जल्दी-जल्दी चाउर, तिल आ गोईठा बन्हाए लागल।

गाड़ी आ के दरवाजा प लाग गईल। ड्राइवर कहलन, "उठा के लाश ले चलीं जा गाड़ी प, देर होई त ओने से पूरा रात हो जाई।"

किशुन के साथे जीप प रोवते राधा भी बइठली। दोसर केहू रहे ना जे आग दी। पंडित जी कहलन कि काम त चलावहीं के नूँ परी।

बगसरो गोंइठा बोझे आ रोपेया पइसा लेवे देवे में धनेसर गुदड़ी के लाल निकलले। अचानक राधा सब देखली कि ई त छिपे रूस्तम बा। अंतिना तत्पर केहू नइखे। ई सभ देखि के किशुन नरमें ढंग से कुछ कइलन-धइलन। उहो निठल्ला

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अदिमी ना रहलन, बाकी तत्पर होखे में आ राधा के देखा के सभ करे में धनेसर से उन कर कवनों तुलना ना रहे। किशुन सब देख के मरमरा के रहि जास।

बिहने सभे गाँव प आइल त तुरते धनेसर किरिया ठाने खातिर नाऊ-बाबाजी के जुटा देलन।

दोसरा दिन धनेसर सेजिया दान खातिर चउकी के अवडर बढ़ई कीहाँ दे अइले। बुझात रहे कि धनेसरे के जग हो रहल बा। सभे देख के अचरज करत रहे। धनेसर के कुछ एम रहे, ऊ ठान लेले रहन।

डालडा, बेसन, आटा, मर-मसाला आलू-सब्जी, तियन-तरकारी, कपड़ा लता सभ उहे दौड़-धूप क के जुटा देलन। दरी, बर-बिछावन के भी इन्तजाम उहे कइलन। दँसवाँ से सराध ले सगरो धनेसरे लउकत रहन। जेने देखीं, धनेसर लागल रहन। दू पहर से भोज शुरू भइल तब से आधा रात तक खिआवे-पिआवे में पनेसर के बेटा धनेसर तनिको बइठलन ना। लागले रहि गईलन। सभे सराहत रहे। किशुन थाक के सभ देखत रहन।

ओह दिन से राधा धनेसर के हाथे जइसे बिका गइली। राधा के बुझा गईल कि धनेसर से बड़हन हित केहू नइखे। दोसरा दिन मोका निकाल के किशुन राधा से अकेले में कहलन, ''देखिहऽ धनेसरा पाजी ह, छनकल रहीहऽ!''

राधा टप दे जवाब देली, ''हम अब लईका बानीं? बाकिर चाल-ढाल से ऊ बड़ी नीमन अदिमी बुझाता।''

किशुन कहलन, शास्तर में बा, ''ईषश्च कुरूते सेवां तमेवेच्छन्ति योषितः।''

राधा ओरे ताक के अपना घरे चल गईलन। जाये लगलन त राधा टाँठे कहली, ''तनी एही घरी राहता में धनेसर से भेंट क के कह दीहऽ कि सबेरहीं आके सभ बाँचल सामान घीव-तेल आ लेनी-देनी के ओरिया दीहें।''

किशुन जल्दीये में कहलन,'' ई काम हमरा खातिर बालू से तेल निकाले जइसा बा।'' आ डेगरगर हो गईलन। रात के अँधियारी अब उतरत रहे। किशुन के बुझा गईल कि राधा अब लाज संकोच के सभ सीमा लाँघ गईली। अब कुछुओं होखे में राधा के फिसल के गिरे में देरी नइखे रहि गईल। सोच के किशुन के मन भारी हो गईल। जइसे उनका गोड़ में बड़े-बड़े लबादा बान्हल होखे, आ चलले नइखे जात। उनका बुझाईल कि उनका दिल के केहू कचोटता, लताड़ता। जूतन पीटता!

धनेसर भिनसहरे जाग गइलन। फराकित होके मुँह-हाथ धो के तइयार हो गईलन आ पह फाटते राधा के मामी कीहाँ पहुँचलन। तुरते हलुआई अइलन। कराही ले जाये लगलन त धनेसर रोक के देखलन कि कराही में लगभग दू कीलो घीव बा। डाँट

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

के डेढ़ कीलो एक डिब्बा में रखलन आ हलुआइ के हिसाब क के उनकर मेहनताना साफ कईलन। अदिमी बोला के बाँचल पूड़ी-जलेबी तियन आदि गाँव में गोतिया लोग कीहाँ भेजवलन।

एकरा बाद कहाँरिन से सभ बरतन मँजवा के कठउता, कलछुल जेकर रहे ओकरा कीहाँ पहुँचवा देलन। दरी-बिछावन जेकरा से मँगवले रहन, सभ भेजवा के आ कहाँरिन से आँगन लिपवा के फुरसत भईलन।

तब अँगना में खटिया प बईठ के सुसताए लगलन। राधा जवरे राधा के मामी अइली आ नीचे बइठ के रोवे लगली आ कहली, बबुआ, तूँ त हमार धरहर होके आ गइलऽ। तूँही ई जग संभरलऽह बबुआ। नात ई जग पार ना लागित। भगवान आ काली माई तोहरा प खेयाल करस, तूँ खूब फूलऽ फरऽ। तोहार कलेयान होखो।''

धनेसर नरमे आवाज में कहलन ''चाची, हमार त अभी बिआहो नइखे भईल,फूले-फरे के कहाँ अबहीं बा।'' ई कहि के राधा ओरे एक टक ताके लगले। राधा मुँह नीचे क लेली।

धनेसर देर ले राधा प ताकते रह गइलन। राधा मुँह उठवली त देखली कि धनेसर अबहीं ले उनके प ताकऽतारे। राधा उठ के घर में भीतरे चल गइली।

धनेसर राधा के मामी से कहलन ''बुझाता सराध के भीर में काम करत-करत राधा के तबीयत ठीक नइखे, बेमार अस लागऽ तारी।''

अतिने कहि के धनेसर राधा के घर में घूस गईलन। सराध में धनेसर राते-दिने अतना खटल रहन कि कवनो मजदूरो ओतना काम ना करी। लपऽ-लपऽ लूक चलत रहे। सउँसे देह जरे लागत रहे बहरी निकलला प, तबो धनेसर आँख मूँद के काम में रोज दिन-दिन भर लागले रहि गइले हा। तनिको कबहुँ उनका के सुसतात ना देखलीं। हप्ता भर एक सुर से नधाइले रहि गइले। काम में त अइसन बुझाइल ह कि धनेसर अदिमी ना, जइसे दइंत हवन। बेहद जीवट आ दम-खम वाला मनुष बाड़न। ऊ उनकरा के राधा के घर में जात देखली त कुछ बोलली ना, रसोईया घर में जाके चाह बनावे लगली।

राधा पट होके औंधे मुँह पर गईल रही पलंग प। चपलो गोड़े में लटकल रहे। धनेसर घर में ढुकलन त राधा चुपचाप ओइसहीं परल रहली। उ मने-मने आहत रही कि अकेले में आके धनेसर का कर तारे। ऊ उनका प एकदम निछावर रही। कुछ छेड़खानियों करीते त राधा तनि को विरोध ना करती। देह ढील दिहती। बाकिऽ धनेसर ओइसन कुछ ना कइलन। जाके राधा के पायताना पलंग प धीरे से बईठ के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उनका जाँघ प हाथ धइलन आ टो के कहलन, "देह तहार गरम बा, बोखार अस बुझाता। जातानीं गोला प से गोली आन दे तानीं।" उठे लगलन। राधा परले-पइले कहली," ना, बईठऽऽ।

धनेसर पलंग प ऊपरे चढ़ के बईठ गईले। उनकर बावाँरा हाथ अपना दहिना हाथ में ले के सुहुरावे लगले। राधा के सउँसे गत्तर गनगना गईल, सिहर गईली। कहली,

"तहरा कईसे बुझाता कि हम बेमार बानीं?" ऊ कहलन, "देहिया गरम बुझाईल हा।"

राधा उनकरा ओर कनखी से ताक के गते बोलली, एगो बात पूछीं, खिसिअइबऽ ना नूँ?"

"ई का कहऽतारू, हमरा के नईखू चिन्हत? दू लात मरबो करबू तबो हम कुछुओ ना कहब।" ई कहि के ऊ उनकर गोड़वा अपना माथा प तीन-चार बे पटकलन। आ कहलन, "ल मारऽ त हम बोलऽतानीं?"

उनकर गोड़वा उठवलन त उनकर साडी़ उलट गईल आ दूनों जाँघ के भीतर लाल लउकल, देखि के तनि मुसुका देलन।

"पूछऽ का जानल चाहतारू?"

ऊ कहली आधा आँख मुँद के," किशुन कहलेकि धनेसरा बहुत बदमास ह। केहु के इज्जत के खेयाल ना करे।"

"आच्छा तूँहीं कहऽ, सराध के दिन बारह बजे रात तक नूँ हम सबके के परोसलीं आ खिअवलीं। एको बे कहलीं कि थाक गइलीं, अब घरे जातानीं? अंत ले खिआवते रहि गइलीं। पांत शान्त हो गईल त एहीजे सूति गइलीं। तूँ बुनियाँ-जिलेबी वाला घर में रहू। हम दू सै बेर ओह घर में गईल होखब भीतरे, बाकिऽ एको बे तहार देहियो छूअलीं? अकिन्दारी से कहऽतऽ? तहार देह छू के कहतानीं, आजू ले कवनों लइकी ओरे हम तकलहूँ होखीं त कहऽ? तूँ कबहूँ देखले बाडू?" इहे कहि के उनकर दूनों छाती ध लेलन तली मामी चाह ले के आवत रही, खँसली। धड़ दे कूद के कुर्सी प बईठ गइलन। राधाा उनका ओर ताकते रह गईली। कुछ बोलली ना। मामी धनेसर के हाथ में गिलास दे के फेर राधा के गिलास देली। "चाह पिअऽ लोग, खाये बनावे जात बानीं। धनेसर, तूँहूँ आज एहीजे खइहऽ।" ऊ चाह पिअते रसोइया घर में चल गईली।

राधा अब ताकत रही धनेसर प आ धनेसर राधा प। चाह पीअत रहे लोग, आ केहू केहू से बोलत ना रहे। राधा चाह पी लेली त धनेसर खट दे उठ के राधा के गिलास हाथ से लेवे लगले। राधा कहली, "ई का करऽ तारऽ? हमार जूठ छुअऽ तारऽ। धनेसर गिलास छिन के नीचे ध देलन।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"जूठ के का बात करऽ तारू? तूँ कहबू त जानियो दे देब।" कहलन। कोना में एगो गँड़ासी मुरचाईल धइल रहे। धनेसर धम दे कुरसी प से उठ के गँड़ासी उठा लेलन आ उन्हुका हाथ में धरा के आपन गरदन पलँग प क देलन। कहलन, "काट द गरदन, जे देखी सुनी, सभे इहे जानी कि बदमासी करे में धनेसर के मुँड़ी कटा गईल, ईहे हाला होई। हमहूँ शान्त हो जाइब। आ किशुन के बढ़ियाँ मसाला मिल जाई। किशुन कहिहें तहरा से कि एकदम साँच कहत रहन धनेसर के बारे में। ल हम आँख मूंदले बानीं। जल्दी छप दे क द।"

राधा गंड़ासी ले के उठ गइली आ पलंग के नीचे ध के पलंग प फेन बइठली।

धनेसर दूनों हाथे उनकरा के अपना ओर सुतावे लगले।

राधा चिहा के गते कहली, "केवारी खुले बा, मामी आ जइहें त का कहिहें? गाँव में हराहोर हो जाई। ई का करऽतारऽ?"

धनेसर खींच के अपना में सटा के एक हो गइलन आ गते कहलन, "मुँड़ी ना कटबू त गते-गते हमार करेजा मत काटऽ। करेजा के आगि अब बोता लेवे द।" सरिया के खींच लेलन देही में। राधा के दूनों आँख मुँदा गईल।

थोड़े देर के बाद राधा पलंग से उतर के बाथरूम में गइली आ मुँह-हाथ धो के रसोई घर में गइली। मामी से कहली, "काऽ का बनावऽ तारू? क दिन से पूड़ी बुनियाँ खात-खात त पेट गुजगुजाइल बा। जादे खाइल ना जाई। दाल-भात, चोखा खाली बनावऽ।"

ऊ कहली, "ना रे, धनेसरो बबुआ बाड़न।तेल में छान के ओल के तिअन बना दे तानीं। तूँ लोग जा कुछ देर गप-सप करऽ।"

राधा फेर ओही घर में क़ुर्सी प जा के बइठली। धनेसर राधा से परले-परले कहलन, "हमहूँ तनी बाथरूम में जातानीं। राधा उनके ओर ताकत रही, कुछ ना बोलली। धनेसर बाथरूम से देरी से निकललन आ राधा के सामने फेन उनके ओरे मुँह क के पर गइलन।

कहलन, "अभी खाना में देरी बा नूँ। आवऽ एही पलंगिए प फेर से परीं जा! के जाने फेर कब मौका मिली।"

राधा मुसकुरा के कहली, "किशुन साँचे कहत रहन, तूँ बहुत बदमास हवऽ?" धनेसर उतर के आ राधा के हाथ ध के पलंग प फेनूँ खींच लेलन। आ सट गईलन!

***

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

खण्ड – 19

किशुन के रसहंग लेखा हो गइल राधा के मामा के सराध के बाद। जूकाम से माथा भारी रहे। तुलसी के पत्ता के काढ़ा बनवा के निमक डाल के गिलास से गते-गते घोंटत रहन। ओही घरी ललिता अइली आ गोड़ छू के नमस्ते कइली। खटिया के नियरे बेंच प बइठ गइली। किशुन पुछलन,"का हालबा अकेले अइलू हा? तहार सखी कहाँ बाड़ी?

ऊ कहली, "सखी के हाल जानते होइबऽ? हमरा से पूछऽ तारऽ?"

किशुन चिहा के कहलन, "हम त क दिन से बेमार बानीं। तबीअत मंद बा। मलारियो ओरे ना गइली हँ। तीन-चार दिन के बाद एसकुल से अइलीं हँ। राधा के घर ओरे जाये के अबे मोका ना मिलल ह। एह से हमरा कुछ मालूम नइखे।"

"हम त टीला ओरे जात बानीं, धनपातो तुरते गइली ह। ना जाइब आ देर होई त ऊ आ जइहें। काढ़ा पीए ले लऽ।, तुरते ओनिए घूमत आवऽ, ढेर बात बा तहरा से बतिआवे के।" ईहे कहि के ललिता चल गइली।

किशुन के रोग नौ दू एगारह हो गईल। धोती कुरता पहिरे लगले। चस्मा आ कलम ऊपर की बगली में ध के बाल बे झरले मलार के राह धइलन। दूरे से देखलन कि टीला के दखिन धनपातो आ ललिता बइठ के बतिआवत बाड़ी जा। उहो पहुँच के गमछा से पतई सब बहार के गमछा बिछा देलन। कहलन कि आवऽ जा एही प बइठीं जा, ओने धूर बा।" आ अपने गमछा प एक ओरे बइठ गइलन।

ललिता कहली, हमनी के कपड़ा लेटे के तहरा बड़ी खेयाल बा, एह से हमनी के खूब खुशी भईल। तूँ त रधिका के नू लेटे से बँचावऽ ल, उहो खआल राखऽतारी नूँ?"

किशुन भीतर से जाने खातिर बड़ी अकुताईल रहन कि राधा के का हाल-चाल बा। दूनों जानी ओरे देख के पूछलन, "बुझौवल मत बुझावऽ जा। हम साँचों कुछ जानत नइखीं। साफ-साफ कहऽ जा?"

ललिता पूछली, "तहरा क दिन से राधा से भेंट ना ह?"

ऊ तपाक से कहलन, "सराध के बिहने से हमरा भेंट नइखे।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ललिता धनपातो से कहली, "सभ बात बता द हो?"

ऊ कहली, "आ तें काहे नइखिस बतावत कि हमरा से कहऽ तारीस? छहिंत्र मत पढ़। सभ एने के बात कह, का-का भईल बा? सउँसे गाँव में हराहोर बा ई जानते नइखन!"

किशुन कहलन, "हम मजाक करऽ तानीं तहरा लोगिन से? बेचैन कइले बाड़ू जा। जवन पूछऽ तानीं उ नइखू जा कहत, आ का-का दो अलर-बलर बतिआवत बाड़ू जा। हम जात बानीं, हमरा सभ पता लाग जाई।"

ललिता कहली, "अनसा गईलऽ, बइठऽ कहऽ तानीं।"

किशुन बइठ गइलन। ललिता कहे लगली, "हमनी के बात प त तूँ तनिको धेयान ना देलऽ, बाकिऽ, अतिना कहऽ तारऽ तऽ लऽ सभ खोलऽ तानीं।"

"तहरा सामने राधा किरिया खइले रही कि बियाह ना करिहें, बाकि एह घरी त गते-गते अईसने खिंचड़ी पाकऽ ता! धनेसर राधा के मामा के मरे से पहिलही राधा के हो गइल रहन। अब राधा से उनकर कवनो दूरी नइखे रहि गईल। अतिना सटाव-लगाव हो गईल बा जतिना सीरीं फरहाद में, लैला मंजनूँ में, आ हो पढ़े वाली लड़िकिया में, आ लभ गुरू में हो गईल रहे।"

किशुन तहार त बंटाधार हो गईल। अतिना उनका के पढ़ावे के आ आगे बढ़ावे के जोजना बनवलऽ, सभ गुर माटी हो गईल। धनेसर दिन-दिन भर उनके घरे रहतारे आ बइठत-सूतत बाड़े। सीधे राधा के घर में चल जाले। उनका पलंग प पसर जाले। हमनी के जाईलाजा त राधा कुर्सी पर बइठ के बतिआवत रहलीं। के जाने एके अदिमी से दिन भर का बतियावली? राधा के त उनकरा जवरे पलंग प सूतल हम नइखीं देखले बाकिर एक दिन हमनी के, हम आ धनपातो दुपहरिया में गइलीं जा त राधा पलंग प चित परल रही, धनेसर ओही पलंगिया प पायताना चूके-मुके बइठ के आइ. ए. के रिजल्ट के बारे में बतिआवत रहन। एहसाल क गो लइकिन के फस्ट डिविजन आईल बा। हमनी के रंग-ढंग देखलीं जा आ फेन चल देलीं जाकि कपड़ा कीने संत जी के दोकान प जाये के बा, बिअफे ह, दोकान खुली। हम राधा से पूछलीं कि टीला प काहे नइखू आवत? ऊ बेमन के बोलली कि मिजाज ठीक नइखे रहत। हमनी के एकरा बाद बजारे चल गइलीं जा।"

"तूँ राधा कीहाँ काहे नइंखऽ जात?" किशुन कहलन, "काल्हु हम जाये के सोचले रहलीं हँ, बाकिर अब ना जाइब। धनेसरा लोफर लइका ह, देखले ना रहु कि लतिका के पीछे रोज दउरत रहे। हमरा गईला प ऊ ओहिजा होई आ भेंट हो जाई त कवनो बात प बहस छिड़ जाई। आ बेकाम के हमरा से बिगड़ जाई। ऊ एकदम

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

डल ह, चोरी क के आ चिट-पुर्जा से आइ. एस. सी कइले बा। ऊ ओहिजा रहऽता त हम ना जाइब।''

ललिता फेन कहे लगली, ''ऊ जहिया दिन में कवनो कारन से राधा कीहाँ ना पहुँचेला ओह दिन साँझिले रधिया उनकरा घरे जरूर पहुँच जाली। हम त क दिन अन्हार भईला, जल्दी-जल्दी घरे लवटत देखलीं हँ राधा के। अब धनेसर कीहाँ उनका जाए में कवनो संकोच नइखे, बेहिचक जाली। कहली कि धनेसर के माई बोलवले रही एक दिन त दू-तीन घरी रात के बाद हमरा गली में भेंट भईल त कहली कि धनेसर के भतीजा भइल बा, सोहर गवात रहे। क दिन ले उनकरा घरे सोहर गावे जातानीं। रात हो जात रहे त धनेसर उनका घरे पहुँचा आवत रहन। एह घरी कुल लइकिन में धनेसर आ रधिया के बतकही होत रहता। गाँव में जहाँ खुसुर-फुसुर होत होई, उनकरे लोगिन के बात होई। एह घरी गाँव में नून-तेल मसाला जवरे इहें बतकही चलता। अइसन हालत में तहरा जरूर जाके समाचार लेवे के चाहीं।''

''राधा के मामियों अपना नईहर जाये के बाड़ी, सुनतानीं। एहिजा मन नखईन लागत। इहे पोरगराम बनता।''

किशुन पूछलन, ''त राधा मामी जवरे उनका नइहर जईहें? कि अकेले एहीजे रहिहें?''

ललिता कहली, ''ई बात हमनी के नइखे मालूम।''

धनपातो कहली, काल्हु दुपहरिया में हमनी के राधा कीहाँ जाइब जा त पता चली।''

किशुन कहलन, ''परसों हम एहीजे तहरा लोगिन के इन्तजार करब जब ले ना अइबू जा।''

ललिता आँख नचा के कहली, ''बेचैनी बा त जाके भेंट काहे नइखऽ क लेत? अब साधु का हो गईलऽ? ना जइब त दाढ़ी मोंछ बढ़ा के साँचो के साधु-महतमा हो जा।''

किशुन डाँट के कहलन, ''ढेर चउल मत करऽ। हमहूँ चउल-मसखरी जानीला। हम परसों एहीजे रहब!''

***

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

खण्ड - 20

राधा के मामी धनेसर से कहली,"ए बबुआ, हमनी के बड़ी भारी आफत में पर गइलीं जा। इनकरा मामा के मरला से हमार त सउँसे घरे थउस गईल। हम मझधार में पड़ गइलीं, अब तूहीं हमनी के सहारा बाड़ऽ। अब आफत में आँख के सामने केहू लउकत नइखे। हम का कहीं, कुछ नइखे बुझात।" ऊ इहे कह के धनेसर प ताके लगली।

धनेसर राधा प ताक के कहलन,"चाची, तूँ अबहीं ले हमरा के गैरे समझ तारू? असमन जनिह कि हम तहार आपन बेटा हइं। तहरा खातिर आ राधा खातिर जरूरत परी त अपना देह के चमड़ी उखाड़ के दे देब। तूँ जवन कहऽ हम ना करीं तब नूँ! हमरा अपना खइला-पिअला के कवनो फिकिर नइखे। देखऽ तारू कि ना, हम दिने-राति तहरे में आ राधा में लागल बानीं। एको छन हम अपना परिवार के आ काम-धाम के चिन्ता में नइखीं। हमरा से कहबू त हम जान के चिन्ता छोड़ के पहाड़ो प चढ़ जाईब। पूछ ल राधा से, इनकरा से सभ बात कहले बानीं कुछुओ छिपल नइखे। हम सउँसे जिनिगी नाप देब। हम किशुन लेखा बात बनउअल आ धोखा देवे वाला ना हईं। किशुन कहियो झाँकियो दे तारे? आफते परला प अदिमी चिन्हाला, हम क्रान्तिकारी कैडर हईं सभको हमार लोहा माने परल रहे। राधा ओरे धेयान से देखे लगले? राधा आपन मुँह नीचे क देली। कुछुओ ना बोलली। फेर बाद में कहली," आज घरे जाये लगिहऽ त तनी किशुन से भेंट क के कहिहऽकि राधा बोलवली ह।"

ऊ कहलन,"ठीक बा हम कह देब।" बाकिऽ मन में सोचलन कि दाल-भात में ऊँट के ठेहुना के कवन काम बा। अनेरिया बे हरे फिटिकिरी के रंग में भंग हो जाई। अईसन भारी बउराही क के अपने गोड़ में टाँगा ना मारब। ऊ नइखन आवत त बहुत अच्छा बा। भगवान बासुदेव के दया से एह घरी पाँचों अंगुरी घीव में डूबल बा।"

राधा के मामी से पूछलन, चाची कहऽका काम बा, संकोच मत करऽ, दिल खोल के कहऽ?"

ऊ कहली समझा के,"बबुआ, बनिहार बोला के खेत सब आजुए मनी प लगा द। जा भोला के बोला ले आवऽ?"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

धनेसर चल गईलन त राधा के हाथ ध के उनकर मामी रोवे लगली। रधियों उनकर देह ध के खूब रोवली। टपर-टपर लोर चूवे लागल। ढेर देर ले रोवली जा। केहू चुप करावे वाला ना रहे? खाली मामी-भगिनी रही जा।

चुप भइली जा त मामी कहली, "मइयाँ हमनी के अब केहू आपन सहारा नइखे। बिना मरद-मानुस के घर के इज्जत कब ले बाँची, ना कहल जा सके। एगो साँपो बीछी निकल जाई त आफत हो जाई। किशुन बबुआ प बड़ा भरोसा रहे। आफत अइला प बालू के देवाल हो गइलन। अब हम केकर आसरा ढूँढ़ीं?"

राधा कहली सोच के, "मामी, तूँ किशुन के नइखू जानत, एही से अपना दुख से उनकरा बारे में अइसन कहऽ तारू। किशुन त देवता हवन!" अतना कहते रोवाई छूट गईल। भोंकर-भोंकर के रोवे लगली....। उनकर मामियों के हरऽ हरऽ लोर गिरे लागल। देरी ले दूनों जानि रोवली।

रोवाई बन भइल त कहली, "मामी, ऊ होइहें ना, चाहे बेमार होइहें, नातऽ आगो बरिसत रहीत, तनो जरूर अईते। मनिते ना। उनकरा में कवनो अवगुन नइखे। ऊ कृष्ण भगवान से तनिको कम ना हवन। उनका लेखा सभ गुन से भरल कवनो अदिमी हम नइखीं देखले। ऊ केहू के कुछ बिगाड़े के कबहूँ सोचबो ना करस। गाँव में ढेर लोग के रोपेया-पइसा से मदत कइले बाड़े। जेकरा के मदत करले, ओकरा से कबो माँगस ना, ऊ भलहीं कतिनो दिन प देवे चाहे मत देवे, टोक ना सकस। केहू के परोजन में जूठ पत्तल लोग के उठा के फेंके लागऽले। केहू के कवनो रूखर बात ना बोलस। कहलन कि उनकर बाप दादा केहू कबहूँ गारी ना देले होई। उनकर बाबू जी त केहू से बे कुछ पूछले बोलते ना रहन। पक्का बैण्णव रहन। किशुनों से ऊ कबहुँ ना बोलत रहन। ऊ कभी झूठ ना बोलस। ऊ कहऽ ले कि विण्णु भगवान् के रोज पूजा क के 'सर्वे भवन्तु सुखिन:' आशीरवाद भगवान से माँगऽले। उनकरे परिवार में उनकर एगो भतीजा बा, पढ़ला-लिखला के ओकरा प कवनो असर नइखे। पंडिजी लोग कहेला, 'विद्या से विनम्रता आवेऽला। बाकी ऊ त अपना बाप के गँडुहा कहेला। बाप के ऊ माई चोदावना कहेला। समाजे बिगड़ल बा, किशुन के एह में कवनो दोस नइखे, मामी, ऊ त हीरा हवन।"

धनेसर के साथे भोला अइलन। राधा के मामी कहली, "भोला, काल्हु राधा अपना गाँवें डिहरा चल जइहें। हम परसों अपना नइहर रोहतासे चल जाइब। धान-पान होई त हम मनी लेवे आइब। कुल खेत पहिलहीं लेखा तोहरे जिम्मे रहीं। देखिहऽ खेयाल करीहऽ। हमरा खेत के तोहरे ऊपर सब दारोमदार बा। इही चेतावे खातिर तहरा के इयाद कइलीं हाँ जा। हम घर में ताला बन क देब। जब तब घूम-फिर करत रहिहऽ।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

राधा काल्हु अपना गाँवे चलजइहें ई सुन के धनेसर असमंजस में पड़ गइलन। झट दे उनकरा बुझाइल कि चिरई अब उड़ल कि तब उड़ल? इहे सोच के बेखबर हो गइलन, उनकर बोली सटक गईल।

राधा के मामी धनेसर से कहली, "बबुआ एगो अवरू कहना करऽ। काल्ह रधिया बेटी के एकरा गाँवें सोन किनारा डिहरा पहुँचा द। तहार भगवान भला करिहें। एगो इहे मदत क दे बबुआ, तहार हम जिनिगी भर नेकी ना भूलब! देखऽ, इनकर मामा के चल जाये से हम एक सरूआ हो गइलीं। जवान बेटी बिया। अब एहीजा राखल ठीक नईखे। सबेरहीं सहार के बस आवली, ऊ पकड़ के खैरा उतर जइहऽ, ओहिजा से टेकर मिली, डिहरा गाँवें भीरी उतार दी। सबेरहीं अईहऽ, हम भारा देब। चिरौरी क के दाँत चिहरली।"

धनेसर हाथ जोर के कहलन, "चाची, हमरा के पराया अस सोचि के मत कुछ कहऽ। हम त एके बे अपना बारे में बता देले बानीं कि भरोसा हमरा प बा त हम तहार कवनो कहना सवख से बजाइब। हमरा के अनकर बेटा मत समझऽ। आ रोपेया-पइसा के बात मत करऽ। सै-पचास हमार लागि जाई त कुजगहाँ चल जाई?"

"हम त कहतानीं कि जइसे रहत रहु एहीजे रहऽ। हम बानीं नूँ? जवन कहना टिकोरा होई हम अपना अस करब, रधियो के एहीजे रहे द।"

उ चिचिया के कहली, "ना बेटा, ना, काल्हु एकरा के गाँवें पहुँचा द। बड़ी धरम होई।"

धनेसर कहलन, "त ठीके बा, हम अनगूत हीं आइब, आ राधा ओरे कनखी के कोर से ताकि के कहलन, जइसन तहार इच्छा।"

फेर राधा ओरे तकलन आ जाये लगलन। राधा इयाद परली, "तनी किशुन से जरूर आवे के कहि दीहऽ?"

ऊ आछा-आछा कहते चल गइलन। दोसरा दिन फजीरहीं पैन्ट-सर्ट पहिर के आ बाल सँवार के, गाली में आ पीछे गरदन प सूखा गन्ध वाला पाउडर, अवरू कपड़ा प मजनुआँ सेन्ट छिरिक के गमगमात राधा के मामी कीहाँ धनेसर पहुँचले। कहले "जल्दी चले के नातऽ एके बस ओह रूट के खैरा तक बिया। छुट जाई त, दिकत हो जाई, फेरू काल्हु के फेरा लागि जाई।"

राधा आपन मामी में सट के जार-बेजार रोवत रही। दूनों जानीं रोवत-रोवत बेसुध रही। धनेसर बेग गरदन में लटका के बहरी चललन, त राधा आँख पोंछते बढ़ली। मामी रोवते राधा के भारा देली आ कहली, तूँही हमार बेटा-बेटी हउ, खेयाल रखिहऽ?आ फेर रोवे लगली।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बाजार प जाते बस आ गईल। अनगुत रहे एह से सीट खाली रहे। दू सीटा प खिड़की किनारे राधा बइठली आ धनेसर बेग रेक प रखि के बगल में सट के बईठ गइलन। सेमराँव जब पार भईल त राधाा धीरे पूछली, "साँझे किशुन के कहले रहऽ?"

ऊ पहिलहीं से जवाब देवे खातिर मुस्तैद रहन। झट दे बोललन, "उनकरा से भेंट भईल जे कहीं? भेंटे ना भईल।" राधा मौन होके सोचे लगली, ईजानि के भेंटे ना कइले होई। गड़हनी नियराइल त धनेसर धीरे से कहे लगले, "किशुन के जगेसवा ना लउकल कि अपना फूआ के बेटी के बझा के जहाँ एयरफोर्स में नोकरी करेला, लिअवले चल गईल आ राखि लिहलस। हऊ सिंकिया बनारसी देहवाला मुनेसर उनका नइखन लउकत कि रोज दूनो टाइम टोला में के कुल लइकी ओकरा कीहाँ जनता दरबार लगावली स, सभ नीमने हवे स, एगो हमहीं उनका जबुन लउकतानीं?"

राधा गते कहली, "तूँ लतिकवा के रोज पीछा करत रहऽ कि ना। एसकुल जाये के बेरी ओकरा पीछे क दिन दउरल रहऽ कि ना?"

ऊ कहलन, "ओह से का हो गईल? हम कुछ कइलीं ना नूँ"

राधा फुसफुसा के कहली ?, "ई के जानता?"

ढेर देर ले केहु कुछ बोलल ना बाकिर धनेसर दहिनवारा गोड़ बेंच प ऊपरे घ के नीचे कुछ हरकत कइलन। राधाा बँवारा हाथ से उनकर गोड़ नीचे धंसोर देली आ आँख गुड़ेरली।

थोड़े देर में बस खैरा रूकल। ओहिजा सिटी राइड लागल रहे। उतर के ओह प लोग चढ़ि गईल आ सीट, खाली राधा के मिलल। धनेसर उनका देही में सटि के खड़ा हो गइले। राधा कहली, "होने फरके खड़ा हो खऽ। तहरा आ किशुन में अकास-पाताल के अन्तर बा। ऊ माननीय अदिमी हवन। उनकरा के खड़ा होखे के सिखावे के ना पड़ित। तहरा लाज-सरम से मतलब नइखे, धो के पी गईल बाड़ऽ" धनेसर उनका ओरे चिहा के ताके लगलन।

बस खुलल आ बीस-पचीस मिनट में डिहरी उतार देलक। घरे गईल लोग त ताला लागल रहे। पता चलल कि राधा के बाबूजी तारीख प आरा गईल बाड़न, काल्हु अइहें। राधा संशय आ संकोच में पड़ली कि रात में अकेले रहे के परी। ई धनेसर के देख-सुन के अगल-बगल के अदिमी आ सभ मेहरारू का सोचिहें जा? इहे सोचत रही अपना मन में।

धनेसर सुनले कि राधा के बाबूजी आरे गईल बाड़े आ आज ना अइहें। उनकर मन आ मिजाज गदगद हो गईल। काली माई के मने-मने गोड़ लगलन। सोचे लगलन कि आज छक के पेट भर जाई, आ ढेर दिन के करेजा के आगि बोता जाई। खूब खुश रहन।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

राधा अपना ढंग से सोचत रही। तुरते सोनपापड़ी दू गो देके गिलास में पानी देली, अपनहूँ पानी पिअली। मिसरी घोर के मीठ आवाज में कहली, "हम तुरते खाये बना देतानीं। धनेसर तूँ खाके, थोड़े आराम क के बस पकड़ ल। सबेरे गाँवें पहुँच जइबऽ" ऊ उनकरा से अब पिन्ड छोड़ावल चाहत रही।

धनेसर कहलन, "हम राते सुतल नइखीं। सबेरे लेट होखे के डर से हमरा राते नींदे ना लागत रहे। हम राते जागले रात कटले बानीं। तूँ खियययबु चाहे ना, हम अब गोड़-हाथ धो के, कुला-कलाली क के खटिया प परब आ हमरा नींद लाग जाइ। हम थाकल बानीं।"

ऊ चपा कल प गोड़-हाथ मल-मल के धोअलन। कुर्त्ता खूँटी प टाँग के गंजी के खंगार देलन आ भींजले गंजी से सउँसे देह पोंछलन। फेर गंजी बाल्टी में डाल के पानी खंगार-गार के तार प अंगना में पसार देलन आ खटिया प पर गइलन। परले-परले कहलन मुसुका के, "राधा, दूइए दिन में हमरा से अकुता गइलू? हम तहार का बिगारतानीं? हम आज रात एहीजे रहब। अब तूँ अकेले हो गइलू। तहार बाबू जी, बुढ़ा गइलन। हम तोहरा के बीच मजधार में ना छोड़ब। तहार बाबू जी कहीहें त नीमन सुघर बर खोजि के हम बिआहो करा देब। काल्हु तहार बाबूजी अइहें त हम राय-सलाह करब, बतिआइब। जवन मदत कहीहें, हम भर जोड़ करब, तहरा के बीच में हम डुबे ना देब, भलेही हमरा कवनो परेशानी होखे। गाँव पर हम चलियो जाइब त दस-बीस दिन प बराबर आवत-जात रहब। तहार देख-रेख हम करत रहब, हम केहू के आफत में छोड़ के मजा लेवे अवला अदिमी ना हइं। हम नमक हरामी ना कर सकीला। हमार रोवाँ तहरा खातिर हरदम मुस्तैद रही। हम अपना मरला-जियला के खेयाल ना राखीं। हम माले हईं, माले!" राधा सभ सुनत रही बाकिर मन से उनकरा बात में कवनो रस ना बुझात रहईन, भीतरे से घृणा के बोध होत रहईन। ऊ सोचत रही कि कइसे एकरा से पिंड छुटी?

राधा भोजन बना लेली त देखली कि धनेसर सूत गईल बाड़े। ऊ उनकरा के जगवली। कहली, "भोजन बन गइल बा, पानी गिलास में ध देले बानीं, खा लऽ। हम परोसतानीं।"

उनकरा के खिया के कहली, "तूँ अब बस पकड़ के चल जा। एहीजा रहबऽ त शिकाइत होई। तूँ कवनो हित-नाता हवऽ ना, बाबूजी नइखन, हम अकेले बानीं, गाँव के अदिमी शिकाइत करिहें। हम खा के गाँव में जाइब।"

धनेसर कहले, तूँ गाँव में जइबू त जा, हम फेन सूतब आ काल्हु जाइब। हम त कहतानीं, कि "खा के किली लगा द आ आवऽ सूतीं जा। फेन त हम काल्हु चलिए जाइब। बड़ा भाग से इ मोका मिलल बा।" अतना कह के मुसुकी मरलन।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

राधा खइली आ गाँव में चल गइली।

साँझि खा अइली त देखली कि धनेसर निरभेद जइसे घोड़ा बेंच के सूतल बाड़े। जगवली ना, ओइसहीं छोड़ दिहली। बरगुना में आटा, कटोरा में सतुई आ जवाइन, मंगरइल ले के दरवाजा के केवाड़ उठघां के बगल के घर में चाची कीहाँ चल गईली। आँगन में दीया बार देले रही।

एक घरी रात बीतला के बाद धनेसर के नींद उचटल। चारों ओर तकले कि घर भायँ-भायँ करऽता। परले-परले सोचे लगले, "भाग-पराह कइले बाड़ू, रतिया खा कहाँ जइबू? खूब कचकचाईब। माजा आ जाई। तहार कन्नी काटल आ भाग-पराह मेटा देब। तहार हाथ पाँव फूलल छोड़ा देब। कवनो रहम ना करब। खखुआ के पर जाईब। के जाने फेर कहियो भेंटइबू कि ना, के जानता? आज तहरा असली मरद से पाला पर जाई।"

ईहे सभ सोचत रहन कि राधा बरगुना में लिटी-चोखा लेके आ गइली। कुछ बोलली ना। जानत रही कि कुछुओ बोलला-बतीअवला प एकर मन बढ़ी त देह-बाँह ध के कुछुओ करे लागी। खराब मोका बा, सऊँसे घर आँगन में एकरा जोरे अकेले बानीं। ई भारी बदमास ह, समझावला से मानी ना, आ मन बढ़ू होई त रोजो एहीजा आवे लागी। लाग डाँट नइखे राखे के।

पानी चौकी प ध देली आ कहली "लिटी खा लऽ। हमरा लिटी ना लगावे आवे। गाँव के चाची से बनवा ले अइलीं हँ।"

ऊ तपाक से बोलले, "तहरा बुझाइल ह ना नूँ? हमरा के जगा देतू त हम नूँ लिटी गढ़ के आड़ा बोझ देतीं आ ओही में आलू-टमाटर चोखा के डाल देतीं। राधा ओरे मुसका के कहले, तूँ खाली हमरा भीरी बईठ के हमरा ओरे तनीं ताकत रहितू। तहरा कुछ करे के रहे? ना जगवलू हऽ नीमन कइलू ह? अब भरपेट सूत लेलीं। रात भर जाग के खूब माजा काटे के। हमार त भगवान खूब खुश बाड़े।" खा के आवऽ आजु दुनिया के छोड़ दीं जा, आजु सब हद तोड़ दीं जा। लाज-संकोच के सीमा लाँघ जाए के।" ऊ खाये लगले।

राधा राम-रहीम एको शब्द ना बोलली। उ जानत रही कि बतिआवला पर काम बिगड़े छोड़ के बनी ना। एह से महटी अवले रहली। ऊ अपना खाये के लिटी-चोखा चाचीए घरे ध देले रही। ऊ खात रहन आ जवन मन में आवे बोलत रहन। ई तली बरामदा में पलँग प तोसक-तकिया डाल देली। पलँग के बगल में एक लोटा पानी किताब से ढँक के रख देली। जानत रही कि खा लीही त ध लीही, चाची कीहाँ जाये ना दी। एह से खाते खा जल्दी से दरवाजा भीरी जा के चेतवली, "खा के केवाड़ में कीली लगा दीहऽ नातऽ कुकुर-सियार ढुक जइहें स। हम चाची कीहाँ सूते जा तानीं।" चल गइली!

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

धनेसर के खेयाली पोलाव आ सभ जोजना के महल बालु के भीत अस छनेभर में भरभरा गईल। जाके किली बन क के कल प पेशाब कइले आ पलँग प पर गइलें।

सोचे लगले, "ई बड़ बुरबक बनवलक! जिनिगी में अइसन बउराह हम कबहुँ ना बनल रहीं। आसमान से सोझे जमीन प गिर गइलीं।" अब उनकरा ना कुछ बुझात रहे आ ना नींद लागत रहे। मच्छड़ो देह में नोचनी लगा के रहल-सहल सभ पूरा करे लगलन स। ओहनी के त भारी बरियात आ गईल। कबहूँ हाथ प चढ़ाई, करऽस त कबहूँ गोड़ प। एकाध गो मराईओ जा सऽ। करवट फेरत-फेरत रातों भर उकिल-बिकिल हो गइले आ सोचे लगले कि अब एहीजा अईला के मुँह मारीं!

अनमुनाहें में भिनसहरा वाली बस से राधा के बाबूजी आ के केवाड़ ढन-ढनवले। सोचत रहन कि के आ के घर में सूतल बा। धनेसर जगले रहन, कीली खोललन तली रधियो चाची कीहाँ से आ गइली आ बाबू जी के गोड़ छू के गोड़ लगली। कहली, "मामी आजु अपना नईहर जइहें। एही से हमरा के गाँव के धनेसर जोरे भेज देली। हम चाची किहाँ से सूत के आवऽतानीं। ई अब फर-फराकित हो के बसन्तपुर जइहें।" ई निठल्ला बाड़े, कवनो काम धन्धा नइखे, कबो ले पहुँचिहें। धनेसर खिस से जरत रहन, कुछ बोललन ना। सोचत रहन, कलमुहीं भारी धोखा देलक। ठेकावते छनक गईल त आगे के का होई! हमरा भीरी अब सचरितर बनऽतारी। पूजे के चमइन आ करे के एतवार? ओने राधा बनरमुहाँ से कइसहूँ जान छोड़ावल चाहत रही मन ही मन कहत रही कि बकसऽ बिलार मुर्गा बाँड़ रहिहें।

***

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

खण्ड - 21

किशुन के गाँव के अदिमी से सभ, एक महीना के बाद मालूम भईल जब एसकुल से गाँवे अइले। उनका एसकुल में प्लस टू विद्यालय खातिर बिल्डिंग के उनसठ लाख सरकार से रोपेया मिलल रहे। हेडमास्टर साहेब कहलन, "बड़ा बाबू, हमग रउवे प पूरा भरोसा बा। दोसरा मास्टर के कवनो कियामत नईखे, रोपेया मिलला प बनइहें कि चाट जइहें। हमार नोकरियो जाई आ भीतरो जाये के परी, सभ-सभ दुर्दशा हो जाई। रउआ बिल्डिंग नक्शा के अनुसार बनावे के काम लगा दीं। रउआ के मिसतिरी मजदूरो भी सभ जानऽ ले सऽ। समाज में भी राउर सोरहो आना साख बा।"

ओही काम में किशुन अझुराईल रहन। महीना भर प अइले त गाँव के समा बदल गईल रहे। लतिका आ के बतवली, कि "राधा मामा के सराध के बाद धनेसर जवरे अपना गाँवे डिहरा चल गईली। धनेसर पहुँचा के दोसरा दिन दूपहर ले अईलन। रात खा बुला राधिया कीहाँ रहलन। उनकर मामी घर में ताला लगा के नइहर चल गईली। खेत सभ धनेसर भोला के मनी प लगा देलन।"

किशुन ओह दिन खइलन ना। घरे कहलन कि तबीयत खराब बा। नींबू के रस गार के एक गिलास पानी पिअले। पलंग प परल-परल आँख मूँद के सोचे लगले। लागता, रधिया के मामा मरलन का, ओकर त एकदमें बंटाधार हो गईल। ऊ भारी आफत में पड़ गईल। लाचारी में दुष्ट धनेसरा पहुँच बना लेलक आ पवित्र कीला में घुन घुस गईल। ना मालूम मासूम के लाचारी से कतिना लाभ उठवलक। का-का उलट-फेर कइलक? हम दोसरे बाझ में बाझ गईलीं। ओह लोग के आफत-मुसीबत में एको काम ना आ सकलीं। बहुत अफसोस बा। हमार हेडमास्टरवा हमरा के ओनेफंसा देलक ना त हमरा रहता भर में धनेसरा के दाल ना गलित। गलती आ नासमझी के गफलत में हम पड़ गइलीं। समय प ओह लोगिन के काम ना अइलीं। अब चिड़िया चुग गईल खेत! लेकिन हालत के पता लगावे के चाहीं...।

किशुन के इयाद परल कि हप्ता भर के अन्दरे रामघटवा मेला आवता। हम त हर साल लइकाईएं से मेला जाइले। तइयारी करे के चाहीं। इहे सोच के धोती-कुर्त्ता आ गमछा फींच-सुखा के धोबी कीहाँ लोहा देवे के पहुँचा अइलन।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रामचन्द्र जी गया जी में पिण्डा पारे खातिर त्रेता जुग में ओही राह से जात रहन आ जहवाँ सोन नदी पार कइलन, ओही घाट के नाम रामघटवा पर गईल। रामजी भगवान के अवतार रहन, एह से ऊ घाट बहुत पवित्र मानल जाला। चौदह जनवरी के ओह घाट प स्नान कइला प बहुत पुण्य प्राप्त होला आ अदिमी तर जाले। एह से अतिना भीड़ होला कि मेला लागला। लइकन के खेलवना आ सभ तरह के जिलेबी मिठाई के दोकान लागला।

हाथी-घोड़ा आवऽले स। घोड़ा के घोड़-दउड़ होला, लोग-बाग देखे खातिर रोड के दूनों ओर छापर पर जाला, बड़ी भीड़ जूटेला। ओने बड़का बगीचा में भेंड़ा-लड़उवल होला। भेंड़ा से भेंड़ा सींघ लड़उअल करे लऽ स। क जगे भेंड़ा वाला बइठ के दूनों गोड़ ऊपरे उठा के राखेला लोग आ दूर से भेंड़ा दउर के ओह लोग के गोड़ प हुमच-हुमच के ढाही मारे लन स। ओहिजा देखे खातिर मरद-मेहरारू के सहजे मेला लागि जाला।

क गो गाँव के लोग नेहा-धोआ के आ चूरा-दही खा के जूटला। कुछ जवान बाबू साहेब लोग ओहिजा मेला में जुटते जलेबी के दउरा उलट के अपने चिचिआए लागेला लोग कि हाथी भागल, हाथी भागल! केहू पूछे ना आ केहू देखे नाकि साँच बात का ह। सभे लइका-सेयान आँख मूँद के भागे लागेला आ भेंड़िया धसान हो जाला। कतना दोकान-दउरी चारों ओर फेंका छितरा जाला। बाद में पता चलेला कि लंठ-बदमास लंठई कइलन हँ स आ झूठ बात रहे। फेर से दउरी-दोकान लाग जाला आ मेला बोले लागेला। खूब जम जाला। दूर-दूर से लइका-सेयान मरद-मेहरारू आवली जा। ओहिजा राधा अपना गाँवे से जरूर अइहें। आ अस्थिर भेंट ओहिजे होई।

❊ ❊ ❊

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

खण्ड - 22

जवारे में पशउर गाँव बा। एगो ओहिजा के बूढ़ दमाद रहन। अपना ताकत भर दमा के दवाई करवलन, बाकिर रोग ठीक ना भईल। नरही चान्दी गाँव जा के साधु कीहाँ दवाई पिअले, कई एक जगे मछरी में दवाई, खिआवल गईल बाकिर रोग जड़ से ना गईल। जब सरद-गरम मौसम होता चाहे ठंडा-गरम चीज खा ले ले त तुरते दमा कबर जाला, सकदम हो जालें।

गाँव से ठहरे उत्तर-पश्चिम एगो बगइचा बा। ओह में एगो ईनार बा। ईनार के पानी बहुत दिन से केहू पिअत ना रहे।

बलेसर दमाह बुढ़उ ओही बगइचा में दिन भर खोंय-खोंय करत रहे लगलन आ दुपहरिया में पियास लगला प लोटा--डोरी से ओही ईनार के पानी रोज खींच के पिये लगलन। कुछ दिन के बाद उन कर दमा-खाँसी ठीक होखे लागल। उनका ई बुझा गईल कि एही इनार के पानी के असर ह कि खाँसी नरम हो गईल।दवाई खात-खात अनसा के दवाई एकदमे छोड़ देले रहन। आ अब दमा के सुर बन होखे लागल। एकर मतलब कि इनार के पानी आपन असर कइलक आ रोग के दब गईला से उनका बड़ी राहत मिलल।

उनका अतिना खुशी भईल कि दुधेसर भाई से एक दिन उनकरा दुआर प भेंट क के आ ई कुल्ह बात खोल के कहलन। दुधेसर सिंह के बड़ी अचरज भईल। बाकिऽ पूरा देर ले उनकरा भीरी बलेसर बईठ के सभ बात कहलन। ओतिना देर में बलेसर जवन दमा से एकदम बेचैन आ बैखरा में रहत रहन, एको बे खँसलन ना। एह से दुधेसर के उनकरा बात प पूरा भरोसा हो गईल।

दोसरा दिन दुधेसर अपना ससुरारी गइलन आ अपना सार के आ सरबेटा के कुल्ही बात कहलन। उनकर सार दमा के रोगी रहन आ सरबेटा के बँवारा गोड़ में हाथी पाँव भईल रहे। दूनों जना दूधेसर जवरे पसउर आ गइलन आ साध के ओही ईनार के पानी पिए लगलन। दवाई अस गिलास में ले के आ दूनों बाप-बेटा दिन भर में चार-चार बे पिअस। अनगुतहिएँ ऊ लोग घर से फराकित होखे जात रहन आ लवटती बेरा एक-एक घइला पानी ओह बगईचा के ईनार से भरले आवत रहन।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

केहू रोग के बारे में पूछे त दूनों जना कहस, "बड़ी जल्दी असर करऽता। पहिले त गते-गते बुझात रहे, बाकिर तीन-चार दिन के बाद से त बुझाता कि राम-बान ह। ई अभोघ दवाई हो गईल बा। दूधेसर के सरबेटा कहे लगलन कि गोड़वा जवन एक मन के भारी रहे ऊ एकदमे हलुक हो गईल।

एकरा बाद त सगरो आन्हीं अस पशउर के पानी के हराहोर हो गईल। पसउर के दू जने कलकत्ता चटकल में काम करत रहन। एक जने के नाती के पेट फूल जात रहे। ऊ जाये के बेरी एक टिन पानी ओहिजा से कलकत्ता छोटी लाइन मार्टिन रेलवे से आरा ले गइलन आ ओहिजा से बड़ी लाईन से कलकत्ता ले गईलन। उनकरा नाती के पेट एकदमे ठीक हो गईल। अब गते-गते कलकत्ता में पसउर के पानी के शोर हो गईल। नतीजा भईल कि पानी पसउर से कलकत्ता ढोआए लागल। पानी ढोआए के लाईन लागि गईल।

लछुमनपुर के बुधिया के हाँफ के रोग रहे। ऊ गाँव के एसकूल में दसवाँ क्लास में पढ़त रहे। चुनु पाठक नाँव के लईका ओहिजेके ओकरा जवरे पढ़त रहे। बुधिया से ऊ हरमेशा लागल रहत रहे।

बुधिया एक दिन एसकूल में छुट्टी के बाद कहलक,"ए चुनुआँ! सुन ले, तें अँखिया के नीन चोरा लेलस, अब तूँ हीं बताव कि बिना दिल के आ बिना नीने के हम कब ले जिअब? बईया समऽवनूँ, अब त हमरा खाली लोरे गिरावे के रहि गईल बा। हम कवन दवाई करीं।"

चुनुआँ उनकर हाथ अपना छाती प सटा के कहलक, "बुधिया, हम पढ़ाई छोड़ देब, तोरा खातिर जान दे देब! हमरा साथे काल्हु पसउर चल। दू दिन ओहिजे रहि के दस बे पानी पिअबे नूँ त सभ ना ठीक हो जाई त हम आपन नाँव बदल देब!"

बुधिया कहलक, "काल्हु फजिरे हमरा घरे अईहऽ। हम आजी से पूँछ के दू दिन खातिर चल चलब। आवे के त चरखहु माहटर साहेब के हिसाब के टास्क दूनों अदिमी जवरहीं बना लेवे के। फजिरे जरूर से जरूर अइहऽ। झोरा में एगो अवरू पैंट-सर्ट आ गिलास-लोटा ले लिहऽ।"

ऊ अतिने कहि के, कनखी मार के फुर्र हो गईल। सबेरे आठ-नौ बजे दूनों जने जब पसउर बगईचा के ईनार प पानी भरे गईलन त ओकरे गाँव के पूरूवारी पट्टी के भूअरी अपना गोतिया में के चचेरा भाई जवरे पानी लोटा में भर के जाए लागल, ऊ भूअरी पूछली, "बुधिया दीदी, हमार देह दिने-राती अईठत रहता आ बड़ी ढेंकार आवऽता।"

बुधिया कहली, "हमरा त नीने नइखे लागत। दू-तीन दिन एहीजे रह के पानी पिअब। तूँ कहिया जइबू?"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ऊ जवाब देली मुसका के, "चार दिन ले आइल बानीं माई से कह के। अबहीं दू दिन अवरू रहब। बगिइचवा के उतर ओरिया रहीला चदर बिछा के, भिन सहरा सिहरावन बुझाला त उहे चदरिया ओढ़ि लिहीला।"

बुधिया लोटा में पानी भरली आ कहली कि हमहूँ दू-तीन दिन रहब।"

बुधिया एक-एक गिलास साध के पाँच बे पानी पियलक। चुनु पूछलन, "का रे बुधिया कुछ असर बुझाता?"

"बुझात नईखे? मन हलुक लागता।" चुनू कहलन, "एहीजे बइठिहे, साँझ हो चलल बा, बिछावे के इन्तजाम करऽतानीं।"

ऊ गाँव ओरे गइलन आ एगो टाल में से पूअरा अंकवारी में लेआ के बगईचा से पूरा पछिम चिकन जगह देख के बिछा देलन। दूनों जने बइठलन त बुधिया पूछलक,"तकिया कहाँ से आई?"

चुनू मुस्कुरा देलन आ टप दे बाँह देखवलन,--"हइ का ह?" बुधिया कहलक, "त हमरा जवरे सट के का सूत बऽ?"

ऊ कहलन, "तूँ काहे चिन्ता करत बाड़ू! तूँ सट के, चाहे हट के, जइसे कहबू हम सूतब, बाकिर हमार बहियाँ तहार तकिया रही। धबरात काहे बाड़ू? हम खायेके जिलेबी ले आवे जात बानीं। जिलेबी खा के सूते के त सभ रोग राते भर में हवा हो जाई। ओकरा बाद दू-तीन दिन रहे के आ रोग राम क के चल देवे के। फेन पनरह-परनह दिन प एक-एक रात आवे के आ खूब सुख भोगे के। मजा आ जाई।"

बुधिया कहली,"तूँ दोसर जात हवऽ रोजो तहरे जवरे आइब त गाँव के लोग का कही?"

चुनू कहले आँख देखा के, "त दोसरो जवरे का अइबू? हम आपन जान दे देब!" उनकरा के आँख गुड़ेर के चल गइलन।

थोड़े देर में भुअरी आइल आ बुधिया जवरे पूअरा प बईठ गईल।

बुधिया रोग के बारे में जानल चहलक, "आछा ई बताव कि रोग के का हाल हऊ?"

भुअरी कहलक, "बुधिया दीदी, ढँकार एकदम बन हो गईल। पेट में अबहीं सूजन बा। देखत नइखू, सभ रोग के रोगी आवतारे। नीमन ना होईत त अतिना भीर होईत? पानी खातिर मारा-मारी आ झाका-झूमर होता। बुझात बा कि लूट परल बा। कोढ़ी, चरखाह सभ आवऽतारे स। निस्तानी जेकरा लइका नइखे, बाँझोमेहरारू आवतारी स।"

अन्हार होखे लागल त भूअरी चल गईल।

चुनू पाठक एक झोरा जिलेबी पोलिथीन में ले अइले। देख के बुधिया के लार चूए लागल।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दूनों जने जिलेबी खूब कचर के खइलन। बुधिया के त साँचो पेट भर गईल। पानी दू गिलास पिअलक त मीठा ढँकार आवे लागल।

चुनू से तनी हट के बुधिया सूतल। चुनू के नीन्द ना लागत रहे। तुरते ईनार प पानी भरे खातिर गरद मच गइल। बाबू साहेब एगो ललटेन बार के फेंड़ा पर टाँग देले रहन। रोसनी मद्धिम रहे। हजारों अदिमी के रेला रहे। हाला-गुला सुन के बुधिया अन्हारा में चुनू पाठक के देही में सट के अंकवारी में बान्ह लेलक!

बुधिया चुनू पाठक जवरे कइ एक दिन रहलक। बड़ी बढ़ियाँ से दवाइ भईल। रोग अच्छा हो चलल। आधा रात ले बुधिया चुनू जवरे सूत के बतिअवते रह जाय। दूनों जने एके में सट के सूतस आ बतिअवते-बतिआवते नीन लाग जाय। फजिरे दूनों जने जागस। एही तरी चार-पाँच दिन बीत गईल। रोग त राम हो गईल बाकी देवघर गइले दोबरी दुख में पर गईली। चुनू फराकित होके अइले त बुधिया ओय-ओय बइठ के करत रहे। चुनू मन मार के बइठ गइलन आ पूछलन, "आरे डोल-डाल होखे ना गइलू हा?"

"ऊ त भिनसहरे गईल रहीं। मन ठीक नइखे, ओकाये के मन करऽता।"

"राते ढेर जादे जिलेबिया खा लेले रहू आ हमरा से बइमानी कइले रहू। हो मेहें मुँह क के राते सूत गईल रहू। ओकरे फल ह!" आ चुनू खूब हँसे लगले इहे कहि के।

बुधिया एकदम अनसा गईल आ ऊ खिसियाँ के कहलक, "दुखिया दुख रोवे आ सुखिया आपन गाँड़ टोवे!"

ओही घरी भूअरी आ गईल आ पूछलक, "का ह बुधिया? काहे खिसियाइल बाड़िस?"

"हमरा त ओकाई आवता, आ ई मजाक करऽतारे, कहऽतारे कि जिलेबी राते जादे खा के बइमानी कइले रहू एही से ओका तारू!"

बुधिया ओहिजे ओकाये लगली। भूअरी उनकर माथा दूनों हाथे ध लेली। कुल्ला-उला क लेलक त फेन ओय-ओय करे लागल।

भुअरी ओकरा के पूअरा प सूता देलक आ ओकर माथा सुहुरावे लागल। गते-गते ऊ कान में मुँह सटा के फुसफुसा के पूछलक, "चुनू जवरे सूतलीस त कुछ होइबोऽ करऽला? काहे कि मरद-मेहरारू के जवरे सूतला प जब कुछ होखे लागेला तबे ओकाई आवे लागला। पेट रहला के इहे पहिचान ह!"

बुधिया झट दे बोलल, "नागे, तोर देह छू के कहतानीं, ई त होने अलगे सूतऽलन। हम अईसन लईकी बानीं कि ई हमरा जवरे कुछ करे लगिहें। हम बउराह बानीं। हम इनकरा के सटे देब। बुझाता कि ईनरा के पनियाँ के असर हो गईल का? रोज पाँच बे भर-भर पेट पिअत रलीं हँ। अइसन मन रही आज तँ साँझि ले गाँवें चल जाइब।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भूअरी चतुर रहे। गते सलाह देलक,जदी ओक ठीक ना होबउ त सियाड़ी से जाके दवाई जरूर खा लीहे। जनलीस नूँ, ना तऽ दोहरा देह हो जाई, जग हँसाई होई।''

साँझि का भूअरी के भी ओक होखे लागल। ऊ इनार के पानी पिअल छोड़ देलक। बाकिर अब ओकरो ओक बन होखे के नाम ना लेवे। उहो बेचैन हो गईल। ओकरा पेट में कइसन दो बाएँ अलंग बुझाय। भीतरे भारी लेखा बुझाय।खाये नीक ना लागे। खटा कुछ खाये के मन करे त ओहिजा अँचार कहाँ रहे? साँझि के उहो गाँवे आ गईल। मड़ेया कवि के क गाँव के ई समाचार मिलल आ ऊ गीत बना देले-

''लईका होत बाटे बहुते आसानी से, पसऽउर के पानी से ना।''

बजार के दिन किताब बेंचे अवला इहे गीत गावे आ ओकर किताब कीने खातिर मारा-मारी होखे लागे। एह ईलाका के विशेषता बा। अइसहीं कवि कहलन, ''मकुनपुर चहल-पहल, नगरी बेकहल,पूछऽ जा हवेलीपुर से मलउर काहे बहल?''

चुनू कहलन अइसहीं हमरो गाँव प कहाउत बा, ''कुरमुरी के टोपी, कोइल के धोती, कुम्हइला के पोथी, आ डेकुड़ा के कविताई, मलउर के ताखी, नगरी के कुरकुटी कबहुँ ना छूटी। नगराँव के मरचाई, बराँव के खँटाई, तिलाठ के लाठी, पीरो थाना भी ना ठाटी।''

पसउर के पानी के जइसे परचार एके-दू दिन में हो गईल, ओइसहीं मुसहरवा बाबा के परचार भईल आ भेंड़िया धसान हो गईल। बसन्तपुर के उतरवारा मनोहरपुर में लोग-बाग जूटे लगलन। हम त दुलहपुर एसकुल से साइकिल से आवत रहीं। नहरपुल प अइलीं त सँड़क प भीड़ लउकल अतिना मेहरारू लइका रंग-विरंग के बस्तर में अचानके देखि के हम त चिहा गइलीं। साइकिल से उतर के एगो मेहरारू से पूछलीं, ''अतिना जामात में कहँवा जातानीं जा?''

ऊ कहली, ''जानत नइखीं, मुसहरवा बाबा नू आइल बाड़े मनोहरपुर में!''

ओहिजा से साइकिल हाथ से धइले पैदल चले के परल दू माईल। ऊ बतिआवत रही स आपुस में कि सभ रोग के जड़ी बाबा दे तारे! एही से अतिना भीर बा। एक सेर अरवा चाउर आ दस गो रोपेया में का लागल बा?

घरे पहुँचलीं त हमार भउजाई ना रही। पता चलल कि उहो मुसहरवा बाबा कीहाँ गईल बाड़ी लइका होखे के जड़ी लेवे। दू दिन मेला लागि गईल। रैला हो गईल अदिमी के। ऊतऽ तीसरका दिन पुलिस चौकस हो गईल आ पाँड़े जी जमदार दू रूल ओह मुसहरवा बाबा के चूतर पर मार के आरे जायेवाली बस प जबरजस्ती चढ़ा के जमघट हटवलन ना त का-का तमासा होइत आ कतिना जवान लइकी भुलइती आ कतिना छिनरपन के कहानी जमित, के जानत रहे?

***

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

खण्ड - 23

ललिता कीहाँ कथा होत रहे सतनारायण भगवान के। उनकर बाबूजी पुरी से तीरथ क के आईल रहन। अँगना में भोला मिसिर कथा कहत रहन। अरथो बतावत रहन। मेहरारून के काफी हुजुम रहे। शायदे कवनो कथा सुनत होई। कुल्हीन के बतकूचन चलत रहे। छोटे-छोटे लइका लईकी कूदत-फानत रहन स आ लड़ियो जात रहन स। सेयान लोग कबहूँ ओहनी के डाँटत रहे। चुप हो जास आ फेन गरद मचावे लागऽस। ललिता के दुआर पर घर से बहरी बुझात रहे कि भीतरे आँगन में कथा चल रहल बा काहे कि पाँच सात गो कुकुर बईठल रहन स। कुछ बूढ़-पुरान अदिमियों खटिया-चउकी प बइठल ओठंघल रहन आपन डानटा-बकुली देवाल में चाहे पाया में ओठंघा के। रमन ओझा के बइठल-बइठल मुँह दुखाए लागल त बहोरन से कहले,"बहोरन भाई, राम खेलावन ओझा के नतिया के कहऽतानीं। ऊ बचरी कवलेज में नूँ पढ़ऽला हो?" "हँ, ऊ एहसाल फाइनल में बा, तुरते इम्तहान में बइठी। फारम भराईल हइस। का बात बा? कुछ बात बा का?" बहोरन ओझा पूछलन।

"आहो भाई हम बसन्तपुर के लइकाइएँ से देखऽतानीं। इहे देखते-देखते बुढ़ा गइलीं। राम खेलावन क़ीहाँ दखिन टोला के सभ लइकी जुटऽलीस। घर-आँगन में बतिअवला से ना ओराय, त छत प चल जाली आ लाज लेहाज छोड़ के हाथ झोर-झोर के ओहिजा गउजा करेली स। उनकर भगीनवो मउग ह, ओहनियें जवरे लागल रहेला। ऊ त रोगिआइल रहे त बनारस से ओकर निकहा दवाई भइल रहे। बाकी जीभ-जियारी के अइसन लुफुत ह कि जल्दी जान ना छोड़े, घुरिअवले रहला। देखऽ लीं हँ। सुनल नइखीं कहत। छतवा प दू सै बेर-तीन-चार सै बेर घूमलक आ गलिया में ताक के फेर छत प मटरगसती करे लागे। थोड़े देर में देखलीं कि मटरवा के छँउड़ी अपना दूमंजिला छत प लउकल। दखिन के कोना प गइल बाकिर हमरा प नजर परल त तुरते जम्हाई लेत सीढ़ी से उतर गईल। दूनों में कवनो के देखा-देखी ना भईल। एह से राम खेलावन के रमदेयला ढेर देर ले चहल कदमी करते रहि गईल। पत बे गलिया में झांके आ फेन छत नापते रहि गईल। हमार आँख दुखाए लागल त हम अपना छत से नीचे अइलीं। नीचे मटरवा के छौंड़ा नवीनवाँ लउकल। हम कहलीं

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कि तनी आपन मँझली बहिनियाँ से पूछ के आव त कि घामा में छत प का गइल रहे? ऊ गईल आ पूछ के बतवलक कि ओकरा के डागडर टहले के कहले बा।

त भइया हम काल्हु जनली हँ कि अँखलगीं में कतिना आग होला। रमदेयला के जलन हमरा बुझाईल जे ऊ छटपटात बा आ कुछ पारा करम नईखे चलत। ओकर बेअगरता आ छटपटाहट देख के हम बड़ी भारी अचरज में परल रहीं। ई देखि के हमरा बुझाता कि ऊ ना पढ़ी। ऊ लखैरई करे लागल।"

बहोरन ओझा कहलन, सुनऽ "भुलेटिन तेली के ना जनलऽ ह? कुछ एने के नाया ना मालूम भईल ह?"

रमन पूछलन, "का भईल ह हो भाई? हमरा नइखे कुछ मालूम!"

बहोरन कहे लगलन, "सउँसे गाँव में हाला बा? बाकिर ईनार के तूँ बेंग हवऽ त कइसे जनबऽ? तेलीया के बेटवा पूछलक मउगी से कि माई के सराध कइला के बाद से बाबूजी नइकी मकानवाँ के बहरी रोज काहे सूतत बाड़े? साँढ़-भइसा धाँग दीहें स। मउगी गते से कहलक "आजु त खइलहुँ नइखन। बहरी खटिया डाल के सूतल बाड़े; ओही खातिर रूसल बाड़े। तूँ का जनब?"

एकरा बाद बेटा-पतोह पुरान का मकान में सूत गइले। ओने भूलेटिन तेली दस-एगारह बजे रात ले करे फेरत रहन? जगेसर जादव के बेटा तपेसर सोरह-सतरह बरिस के होई,ऊ खइनी टूँगत आईल चूना खातिर आ भुलेटिन के ओरचाना बइठल त ऊ त जगले रहन, "पूछलन के ह बचवा?" ऊ कहलक, "हम तपेसर हईं, चाचा जगले बाड़ऽ, तनी चूना द?" ऊ बइठ गइलन अस्थिर आ कहलन कि ओरचाना का बइठल बाड़ऽ। हेने ऊपरे आव, बइठ। ऊ कहलक, "ना ठीके बा, चाचा, अभी सूतलऽ ना?" तब भुलेटिन ओकरा से कहलन, "बबुआ नीन नइखे लागत। जानऽ तारे, एगो बात इयाद आ गइल ह। जब पटना दवाई लेवे जाइला त गाड़ी के बारे में पूछ-ताछ के खिड़की पर बड़ी भीर रहेला। हमनी के त धोती पहिरले रही ला जा। धोती अवला के बड़ा खतरा बा। भीड़ में लाइने में मउगा घूस जाले स आ चिकनावे लागे लऽस। शायदे कबहूँ ना भेंटईएँ स। नातऽ घुसिए जाले स आ आपन काम चालू क देले स। कबो-कबो त अदिमी अपनहूँ पनियाँ जाला, बाकिर डर लागला कि ओहनीं के गैंग होई। पइसा खातिर झमेला खाड़ा क दीहें स। जान ले के, भागे के परेंला। ईहे सोचत रहलीं हँ। एगो काम ना करबे?" ऊ बोलल, "चाचा कहऽ, जरूर करब।"

भुलेटिन तेली कहले, "तें त जनते बाड़े, हमरा बेकत के मरला कतिना दिन हो गईल। एह घरी सुनऽतानीं कि कवन दो लतिकवा ह, ओकर बड़ी नाँव बा। पचास गो रोपेआ तोरा के देब आ ओकरा के सतर-बहतर गो देब, काल्हु कइसहुँ फुसला के लिया आव।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ऊ कहलक, ''चाचा ई काम एकदम आसान बा, भुलेटिन के कान भीरी मुँह सटा के ऊ कहलक, धरम पाँड़े के धरऽ, तुरते काम निकल जबवऽ।''

भुलेटिन कहलन, ''तें नइखस जानत, जेकरा अन्हारा में सूझे ऊ भूमिहार के मटकी बूझे। धरम पँड़ेया बहुत बदतमीज ह। ऊ तिल का ताड़ आ राई के पहाड़ क दी। ओकरा फाँस में हम ना बाझब। तूँ कहऽ का कहऽ तारऽ?''

तपेसरा कहलक, ''पाँच-पाँच सै द, आजे, काल्ह ओकरा के पहुँचा देब अतनीएँ पहर।''

ऊ केवारी खोल के भीतरे गईले आ चोर बत्ती से देख के सै-सै के दूगो नम्बरी ले अइले, कहले ''ले हई एगो अपना के आ एगो ओकरा के। अउर लिया अइबे त पचास गो तोरा के आ पचास गो ओकरा के देब।''

तपेसरा कहलक ''ई दूनों हमार भईल, ओकरा के देवे के ले आव। ऊ आ जाई त अब पचासे गो ओकरा के दीह। तहार काल्ह काम हो जाई।'' भुलेटिन तपाक से ले आके एगो नमरी अवरू दे देलन। कहलन कि अवरू बादो में तहरा के देब।

तपेसर कहलसं, ''चाचा एगो गीत गावतारे स, सुनलऽ हऽ?''

''का? कहबऽ तब नूँ?''

''गीत गावतारे स, जायदे मुनिया जगहे प् जाता।''

''जो ना, हमरो भीरी जगहा कु जागहाँ के बात होई? ऊ कही तब नूँ? तूँ काहे चिन्ता करत बाड़स? जो, आज पाका रहल नूँ?''

''ऊ कहलस, ठीक बा जात बानीं।'' चल गईल आ जाके मन बोधवा के सभ बात कहलक। दूनों राय-सलाह कइलन स। ढेर देर ले फुसुर-फुसुर कइलन स आ फेन अपना घरे चल गइलन स। साँझि खा खूब रसवन्ती सेन्ट धोती-कुरता प डाल के भुलेटिन बड़की पतोह से खाये मँगलन। ऊ कहली कि अभी रोटी बनावे के बा। ऊ नयका घर के बहरी बरामदा में जाके विछावन डाल के पर गइलन। उनकरा देही में तितकी लागल रहे, खाये के चिन्ता ना रहे। छोटकी पतोह गोतिनी से पूछली ''बुढ़ऊ कहाँ गइलन, रूस गईलन का?'' बड़की गोतिनी तड़ दे जवाब देली तुनुक के, ''बेकत मरल हईन तबे बेअगर रहऽतारे, अब बिछावन डाल के नयका घर में सूतल बाड़े, बुझाता कि ओही खातिर रूसल बाड़े। जा ना, हई, रोटी लेके खिया आवऽ।''

ऊ कहली, ''उनका के आग ना उझिल देब। दू महीना से साड़ी-ब्लाउज फाटल पहिरत बानीं, एह खातिर आन्हर हो गईल बाड़े। खास चाहे उपासे रहस। हम, अपना लइका के खिआवत बानीं।''

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भुलेटिन के नएका घर भीरी से एगो नेउर भागल त उनका बुझाइल कि आ गईल लतिकवा। खँखार के तइयार हो गइलन। बाकिर फेन कुछ ओह ना चलल। कान लगा के गली ओरे ताके लगलन। बड़का बेटा उनकर खाये ले के आइल त खिसिया के ऊ कहलन, "होने टेबुल प रख दे।" ऊ रख के चलि गईलन।

जब लतिकवा के कुछुओं ओह ना चलल त हाथ धो के गते-गते सूखल चमड़ी अस रोटी चबावे लगलन। तियन ना रहे छिपा के कोना में तनी मनी गुर धईल रहे। ओकरे जवरे चबावे लगले। एगो रोटी खा के एक गिलास पानी घोंट गइले। तली उनकरा बुझा गईल कि गली में एक-दू गो अदिमी आवता। थरिया टेल के तड़ दे खड़ा हो गइले। तपेसरा जवरे मनबोधवा लाल फराक पहिरले आ मोबाइल बजावत लाल ओढ़नी से मुँह ढँकले आ के खड़ा हो गईल तपेसरा के पीछे। ओकरा मोबाइल से गीत के मीठ आवाज गते-गते सुनात रहे।

"करिया प एतना गुमान, चलेला लूँगी फार के ए सखियाँ।...." तपेसरा गते कहलस, "चाचा, देखलऽ नूँ हम बात के कतिना पाका हईं? जल्दी सै के नोट निकाल के ले आवऽ, एकर बकिअवा द। देखिह, कहले नूँ बानीं, गते-गते जे जगहे प जाय।"

ऊ कहलन, "एही जे विछवना प बईठ, जाये के बेरी ले लीहे।"

तपेसरा जोर से बोलल, "हम एहीजा लेभर चाटे खातिर रहीं? दऽ जल्दी ना तऽ लिया के चल जाइब। ले आवऽ।"

ऊ घर में घूसले आ चोरबत्ती बार के जल्दी से एगो नंबरी ले आके तपेसरा के देलन। झपट के लतिकवा बनल मनबोधवा के कपड़ा बनावल खूब ऊँच दूनो छाती ध के बोललन "कतना देर क के अइलू ह?"

मनबोधवा ताबड़तोड़ थपरा-मूका चलावे लागल। सरिया के दहिनवारा हाथ नाक प एक मूका देलक त नीचे गिर गइले। गिरला प पूरा लतहर के बहरी चल देलक। दूनो गारी देते भागि गईलन स।

मारा-मारी के आवाज सुन के चुरामन बाबा जाग गइलन। उनकरो मड़ई भुलेटिन के नएका मकान के दुअरिए भीरी बा। जोर से बोललन, "का हल्ला भईल बा हो?"

तपेसरा आ मनबोधवा सभ खिस्सा डिटेल में कहलन स। सबेरे बिसकर्मा पूजा बड़का सेठ कीहाँ रहे। नाच-गान आ परसादी बितरन होत रहे। ओहिजा भुलेटिन के कारसाजी के धुआँधार परचार हो के गाँव जवार में फैल गईल। सायदे केहू ना जानत होई। ओने नाचे अवली गीत के टाँसी मारत रहें"रहलू हो, रात कहाँ रहलू?"

बाल-बाचा, बूढ़-जवान मरद मेहरारू, बाप-बेटा, बहिन-मतारी सभे धका कइले रहे गीत सुने खातिर आ नचनीअवाँ के देखे खातिर। बिसकर्मा पूजा के उत्सव

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गइल बा? त रोवऽतानीं! इहे बस में बा। एह में कवनो तरह के कोताही चाहे कंजूसी नइखें। अब आँखि के सामने अन्हार भईल आवता! अवरू का लिखीं? हम त कोसे लायक, कचोटे लायक, धिक्कारे लायक आ लतारे-लायक हो गइलीं।

कंकरी के भतिया अस हमार नरम कलाई के छू-छाव आ ममरउवल-क के भारी हतेयारी मछ झुकवना कइलस, रोवाँ टूट गइली स, खड़ा होखे के नाँव नइखी स लेत! हम अब का करीं? मझधार में डूबत-उतरात एक-एक छन गिनऽतानीं!

तहार रधिया

***

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

JP

Janaki Prakashan

Publishers & Distributors
Ashok Raj Path, Chauhatta
Patna-800 004 (Bihar)
Mob. : 09430246278, 09334062206
Ph. : 0612-2355310 (R)
www.janakiprakashan.com
e-mail : janakiprakashan@gmail.com

ISBN– 978-93-81313-64-0

₹ 400.00

PATSAN GRAPHICS, 09334117729

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.